॥ मायाविनी ॥

MAYAVINI

[बङ्गभाषा के आश्रय से]

बाबू गोपालराम गहमरनिवासी कर्तृक।

अनुवादक ने इसके छपने का अधिकार

बाबू रामकृष्ण वर्म्मा

सम्पादक भारतजीवन को दे दिया है।

॥ काशी ॥

भारतजीवन यन्त्रालय में मुद्रित हुई।

1900

सन् १९०० ई०।

प्रथम बार १०००] [मूल्य ।/

मायाविनी ।

पहिला खण्ड ।

पहिला बयान ।

यह नई खबर कौन जानता था ?

"इन्सपेक्टर साहब इस वक्त थाने में हैं?" कह कर देवेन्द्रबाबू ने थाने के सामने खड़े पहरेवाले से पूछा । पहरेवाला बात सुन कर चौंका फिर उनकी ओर देख कर बड़े आदर से बोला—"ओहो ! आप हैं। कहीं कहीं कुछ हुआ है ? हमलोगों को फिर कहीं ले चलियेगा क्या ?"

देवेन्द्रबाबू ने उस बात का जवाब न देकर फिर कहा—

"राम बाबू यहाँ हैं ?"

पह०—"हाँ इसी बाहर के कमरे में बैठे हैं ।"

देवेन्द्रबाबू जल्दी २ कदम उठा कर उस कमरे में गये जहाँ इन्सपेक्टर रामकृष्ण बाबू बैठे थे । उन्होंने देवेन्द्र बाबू को आदर से कुर्सी पर बिठा कर पूछा—"कहिये साहब ! हमारी कुछ ज़रूरत है क्या ?"

दे०—"बिना ज़रूरत के हम आनेवाले नहीं हैं । ज़रू-

को बात बड़ी बेढब है । मामिला सुन कर तुम

यार दाँतों उँगली काटोगे । ऐसी घटना तुमने मैंने भी कभी नहीं सुनी ।"

राम०—"खैर कहिये तो सही क्या हुआ ?"

दे०—"हुआ क्या ऐसा तैसा ? बिलकुल भानमती की लीला है। जैसे वह पेटारे से उड़ भागती है वैसेही यह कबर से निकल भागी है।"

राम०—"कौन कौन ? बात तो कहो ।"

दे०—"फूल साहब को याद है या भूल गये ?"

राम०—"खूब याद है फूल साहब को हमलोग जिन्दगी में भूल जाँयगे ?"

दे०—"और जुमेलिया ? जो इतने दिन मनोरमा बन के मौज उड़ाती थी और हजारा के बागीचे में जब मैं पकड़ने लगा तब जड़ी खाकर आत्महत्या कर गयी थी याद है ?"

राम०—"हाँ ! हाँ ! वह पिशाचिनी भी याद है ।"

दे०—"यार सचमुच पिशाचिनीही है ।"

राम०—"तो हुआ क्या ?"

दे०—"उसके मरने का हाल तो जानते हो न ?"

राम०—"अच्छी तरह जानते हैं ।"

—"जब उसकी लाश कबर में दफन की गई थी हम तुम सभी वहाँ मौजूद थे । जब तक कब्र में उसका

शरीर नहीं डाला गया और ऊपर से मिट्टी नहीं डाली गई तब तक मैं उसी की ओर टक लगाये दे-खता रहा इस पर तुम और कालीघाट के थानेदार दोनों हमारे ऊपर चुटकी लेते थे वह बात भी याद है?

राम०—"हाँ वह तो हँसने की बातही थी जब वह मर गई तब मर गई तब भी तुम ऐसे देखते थे मानो वह उठ के भाग जायगी।"

दे०—"हाँ, हाँ! अब वही बात हुई है। वही मरा मुर्दा क़ब्र से उठ कर भागा है। अफसोस यह कि उसके क़ब्र पर हम और एकाध महीना पहरा नहीं दे सके"

राम०—"ऐं! यह कहते क्या हो? तुमने क्या दफन करने के बाद भी क़ब्र पर पहरा दिया था?"

दे०—"एक दो दिन नहीं सात दिन तक हम उस क़ब्र की निगरानी करते रहे।"

राम०—"वाह मरे मुर्दे पर निगरानी करते रहे बड़ी आ-सूसी की। उस पर भी कहते हो कि और कुछ रोज़ तक निगरानी करते तो अच्छा होता। अक़ल ठिकाने है या आज भाँग खाकर आये हो? जो पाँच हाथ धरती के नीचे है उस पर निगरानी क्या काम की?

दे०—"तुम्हारा कहना सच है। ऐसी दशा में सब आदमी नहीं जीते रहते।"

राम०—"बाबूसाहब मुर्दे की लिये जीना फिर सब जीते नहीं रहते इसका क्या अर्थ है ?"

दे०—"तुमने अरब के फकीरों की बात नहीं सुनी जो अठवाड़ों और महीनों क़ब्र में रहते और फिर जी उठते हैं ? साधू हरिदास * को समाधी का हाल भी नहीं जानते ?"

राम०—"बहुत सुनते जानते हैं।"

दे०—"वह सब क्या करते हैं मालूम है ?"

राम०—"हाँ कुछ कुछ मालूम है।"

दूसरा बयान।

ऐं ! कहते क्या हो ?"

जासूस देवेन्द्रबाबू इन्सपेक्टर रामबाबू से कहने लगे—"अरब के फकीर किसी जड़ी बूटी से अपने तईं ऐसा बेहोश कर डालते हैं कि बड़े २ डाक्टर भी देख कर उसे मुर्दा कह जाते हैं जीने का कुछ भी चिन्ह उनमें नहीं रह जाता।"

इन्सपेक्टर—"हूं।"

* हरिदास नामक पुस्तक बारह आने को भारतजीवन आफ़िस बनारस से मँगा कर पढ़िये।

जा०—"फिर सब के सामने उनको कब्र में दफ़न किया जाता है। फ़कीर अपना एक ऐसा चेला रखता है जो रोज़ उसकी कब्र को देख जाया करता है। फिर ठीक नियत दिन को कब्र से फकीर निकाला जाता है तब वह जीकर थोड़ीही देर में हवा लगने से उठ बैठता है और पहले के समान हो जाता है।"

इन्सपे०—"इसमें एक बात है।"

जा०—"बोलो।"

इन्स०—"जिनके आगे यह सब बात होतीहैं वह गदहे हैं"

जा०—"तो हमें भी गधा समझते हो न?"

इन्सपेक्टर—"नहीं, नहीं!"

जा०—"नहीं क्यों? मैंने खुद अपनी आँखो से यह सब लीला देखी है। मैं खूब जानता हूं यह सब सच्चा है।"

इन्स०—"अच्छा अब हुआ क्या है सो कहो? इस वक्त बहस की फुरसत हम दोनों में किसी को नहीं है।"

जा०—"डाक्टर फूल साहब बहुत दिन अरब में रह कर फिर कामरूपदेश में आया था न?"

इन्सपे०—"हाँ यह मैं जानता हूं।"

जा०—"वह बड़ा चेटको था। बहुत यन्त्र मन्त्र जड़ी बूटी जानता था।"

इन्स०—"हाँ उसको यह सब बहुत मालूम था। बहुत से तमाशे भी किया करता था।"

जा०—"जुमेलिया उस्ताद की चेलिन है। [illegible] [illegible] नहीं बीबी भी है।"

इन्स०—"हाँ, हाँ। वह भी बड़ी [illegible] [illegible] है?"

जा० —"वह गुरू से भी चढ़ बढ़ के है।"

इन्स०—"खैर होगी तो हुआ क्या है?"

जा०—"वह जुमेलिया क्या हुई जानते हो?"

इन्स०—"मर गई उस रोज दफ़न कर आये फिर पूछते हो क्या हुई?"

जा०—"वह चुड़ैल मरी नहीं।"

भकचकाकर इन्सपेक्टर बोले—"ऐं! कहते क्या हो?"

जा०—"यही तो मैं कहने आया हूं। अब अलबत्ता तुम उसको जीता देखोगे। जो चाहो तो उसकी कब्र खोद कर देख आवो।"

इन्स०—"कितने दिन दफन किये हुए हुआ याद है?"

जा०—"आज तीसरे पहर को ठीक उनतालीस दिन पूरा होगा।"

इन्स०—"नहीं यार अब इतने दिन का मुर्दा मैं कब्र से निकालना ठीक नहीं समझता।"

जा०—"मुर्दा तुम कहां पावोगे यार कब्र तो खाली भंभा रहा है।"

इन्स०—"यह तुमको अभी सूझा है?"

जा०—"हाँ अभी।"

इन्स०—"देवेन्द्रबाबू ! बात क्या है साफ़ २ कह डालो ।"

जा०—"श्रीचन्द्र नाम का एक चतुर छोकरा हमारे यहाँ काम सीखता है । "१७ का" पुलिन्दावाले मुकद्दमे में उसने मेरी बहुत मदद की है । एक दफ़ा हुआ जिस कब्रिस्तान में जुमैलिया दफ़न की गई उधरही टह-लता हुआ चला गया । जुमैलिया का क़ब्र देखा तो मिट्टी कुछ इधर उधर हुई थी उसको सन्देह हुआ । उसके पास गया तो एक टुकड़ा कागज़ का पाया । उस पर जुमैलिया का नाम लिखा देख कर और स-न्देह बढ़ा । तब और टुकड़ों को वहाँ खोजने लगा । वैसे कई टुकड़े वहाँ अगर पड़े थे । सब को बटोर ला-कर घर में उनको ठीक रख के एक कागज़ पर चि-पका डाला ।"

इन्स०—"उन टुकड़ों को ठीक चिपका सका था ?"

जा०—"हाँ इतनी अक़्ल हो गई है ।"

इन्स०—"क्यों न हो आप का चेला है न ? अच्छा फिर क्या हुआ ?"

जा०—"कल रात को उसने वह कागज़ हमारे हाथ में दिया । वैसी चीठी मैंने कभी नहीं देखी थी ।"

इन्स०—"कैसा कहो तो सही ?"

जा०—"हमारे पासही है । श्रीचन्द्र ने उसको पढ़ पढ़ने

को लायक कर दिया है। और चाँदी के टुकड़े नहीं मिलते बीच के भी दो एक नहीं [illegible] देखो आप पढ़ लो क्या लिखा है।"

इतना कह कर जासूस ने चीठी दी।

तीसरा बयान।

अभिनव पत्र।

चीठी में यों लिखा था——

"————हुआ नहीं। अब राह देखने का अवसर नहीं है। क्या करूं बदनसीबी से तुम्हारी मुलाकात नहीं हुई। मैं किसी ज़रूरी काम के लिये बालीगंज की तरफ जाती हूं। वहाँ अगर मैं पकड़ी गई तो वहीं आत्महत्या करूँगी। तुमको मालूम ही है कि मरने के बाद क़ब्र में भी मैं तीस दिन तक जीती रहूंगी। इसी के अन्दर तुम मुझे निकालने की कोशिश कीजियो। तीस दिन के बाद तुम मुझे निकालने की कुछ तदबीर न करना क्योंकि उससे कुछ फल नहीं होगा।

"क़ब्र से निकालने पर अगर मेरे दाँत नहीं छूटे तो ज़ोर करके उनको छुड़ा देना फिर उसी शीशी की आठ बूंद दवाई मेरे मुंह में देना। खूब ख़बरदार आठ से एक बूंद भी कम या बेश न होने पावे।

इसके बाद कुछ करना नहीं होगा। आधा घण्टा बाद मैं उठ बैठूंगी और तुमसे बात करने लगूंगी। तुम कह चुके हो कि हमको जान से अधिक चाहते हो यहां तक कि यदि मैं तुम्हारी स्त्री होऊं तो इस जन्म का किया हुआ सब पाप भूल जावोगे।

तुम मुझे बचाओ। रक्षा करो। मैं तुम्हारीही होऊंगी। तीस दिन की बात खूब याद रक्खो एक दिन भी भूल होने से सब बिगड़ जायगा। तुम हमें जीवन दान दो तुम्हारी सदा दासी रहूंगी।

तुम्हारी प्रेमभिखारिनी

सुमेला।

चौथा बयान।

बन्दोबस्त।

"हैं! यह क्या! देवेन्द्रबाबू! क्या सचमुच सुमेलिया कब्र से निकली है?" रामकृष्ण बाबू थाने के इन्सपेक्टर ने चौंक कर कहा—"

दे०—"मेरा भी यही विश्वास है।"

राम०—"कभी ऐसा हो सकता है?"

दे०—"हो सकता है कि हुआ है?"

राम०—"श्रीचन्द्र ने भूल की है। जिसमें शायद कुछ चीठी लिखी गई है कागज़ के टुकड़ों से उसका नाम जाहिर करना था।"

दे०—"खोजा तो बहुत, लेकिन मिला नहीं तो क्या करें? लेकिन रामबाबू! एक बात है।"

राम०—"क्या?"

दे०—"चलिये हमलोग उसकी कब्र खोद कर देखें, क्या हाल है फिर आगे और काम हो।"

राम०—"अच्छा चलिये मैं तैयार हूं।"

दे०—"आजही तीसरे पहर को।"

राम०—"हां! आजही सही।"

दे०—"आज तीन बजे यहां, चाहे वहां मिलिये।"

राम०—"यहीं अच्छा है। आप दो बजे यहां आवें। आती बेर गंगाधर को साथ ले चलेंगे। रास्ते में बंगले पर से सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब को भी गाड़ी पर बिठा लेंगे। फिर सब साथही क़ब्रिस्तान को चलेंगे।"

दे०—"मैं अपनी गाड़ी लिये आऊँगा। इसके लिये आप को चिन्ता नहीं करना होगा। मैं ठीक वक्त पर आ-ऊँगा। होगा तो सचीन्द्र को भी साथ लाऊँगा। तुम इधर अपना ठीक रखना।"

राम०—"इधर का हम सब ठीक रखेंगे।"

दे०—"देखो, हमारी बात गाँठ में रखो। कब्र खालीही पावोगे।"

रा०—"ठीक है देवेन्द्रबाबू! हम भी कहे देते हैं। आपकी बात खाली जायगी।"

दे०—"जुमेलिया मरने पर भी मेरी ख़बर लेने की कह कर मुझे डराती थी सो मैंने तुमसे कहा था?"

राम०—"नहीं वह तो नहीं कहा।"

दे०—"मैं इसी से उसकी क़ब्र पर निगरानी करता था। अब उसकी बातों का अर्थ मैंने समझा इसीलिये वह कहती थी कि मरने पर भी वह अपनी बात पूरी करेगी और हमसे बदला लेगी।

रा०—"उस वक़्त तुमने नहीं समझा। अब उसकी बात सच मालूम हुई है?"

दे०—"जब मैं सात दिन तक उसकी क़ब्र पर निगरानी करता रहा और कुछ ख़ास नहीं मिला तब मुझे कुछ भी खटका नहीं रहा मैंने समझ लिया कि वह झूठे गाल बजाती थी लेकिन अब उसकी सचाई मालूम हुई है।"

रा०—"देवेन्द्रबाबू! वह तो बड़ी विकट औरत है!"

दे०—"हां है तो सही। आदमी की सूरत में अगर पिशाचिनी हो सकती है तो वही जुमेलिया है। इस वक़्त उसका मतलब इस चीठी से साफ़ ज़ाहिर होता है।"

पाँचवाँ बयान।

कब्रिस्तान में।

ठीक दो बजे रामबाबू के थाने के सामने एक गाड़ी आ लगी। उसमें देवेन्द्रबाबू अपने भांजे शचीन्द्र के साथ बैठे थे।

उसी वक्त रामक्षणबाबू सादे वेष में और गंगाधर बाबू (एक दूसरे पुलिस इन्सपेक्टर) पुलिस के पहनाव में देवेन्द्र बाबू की गाड़ी में आ बैठे। कोचवान ने गाड़ी हाँक दी। रास्ते में सुपरिण्टेंडेण्ट साहब को भी गाड़ी पर चढ़ाया गया।

* * * * * * *

ठीक समय पर सब लोग कबरिस्तान में पहुंचे। जहाँ पिशाचिनी जुमेलिया दफन् की गई थी वहां गये। और वहां दो धांगड़ फरसा कुदाली लिये पहले से तैयार थे। सुपरिंटेंडेण्ट का हुक्म पाकर दोनों जुमेलिया की क़बर खोदने लगे। जब क़बर से लाश बाहर निकलेगी तब तमाशा देखने की लालसा से तीनों पुलिस अफिसर और जासूस टक लगाये उसी ओर देख रहे थे।

जब क़बर खोद कर सन्दूक बाहर निकाली गई। उसका भारीपन अन्दाज़ कर के सब देवेन्द्र बाबू पर चुटकी लेने लगे। देवेन्द्रबाबू का मुंह भी कुछ मलीन हो चला।

लेकिन जब उसका ढकना उठाया गया तब एक औरही गुल खिला। सन्दूक में मुर्दा तो मिला लेकिन उसको देख कर सब लोग अकचका उठे। देवेन्द्रबाबू का चेहरा प्रसन्न हो आया क्योंकि वह मुर्दा किसी सुन्दर पोशाकवाले जवान का था जुमेलिया चुड़ैल के बदले सुन्दर एक जवान मर्द की लाश देख कर सब के देवता कूच कर गये। सब लोग कहने लगे—"बाप रे यह क्या हुआ ?" लेकिन देवेन्द्रबाबू को उतना अचम्भा नहीं हुआ जितना उन तीन पुलिस अफसरों को हुआ था।

कुछ देर बाद जब चित्त ठिकाने हुआ रामकृष्ण बाबू देवेन्द्रविजय से पूछने लगे—"देवेन्द्रबाबू! यह क्या मामिला है! आप समझते हैं ?"

दे॰—"हाँ मैं तो खूब समझ गया हूं।"

राम॰—"तो भई! बतलाओ क्या मामिला है। मुझे तो मालूम होता है कि सपना देख रहा हूं।"

देवेन्द्रबाबू मुर्दे की ओर बता कर कहने लगे—"जुमेलिया ने इसी को चीठी लिखी है। मालूम होता है इस आदमी ने जुमेला के कहे मुताबिक काम किया है। उसने जैसे २ कहा था वैसेही इसने जुमेलिया को निकाल कर जिलाया है। बस उस हत्यारिनी ने इसको उलटे हत्या कर के इसी में दफन् कर दिया और आप भाग गई है। ले-

किन मैं समझता हूं कि वह अभी कहीं दूर नहीं भागी, यहीं है। वह जानती है कि सब लोगों में उसकी मर जाने की बात ज़ाहिर हो चुकी है इससे वह कहीं और नहीं जायगी।"

देवेन्द्रबाबू की बात पर सब को विश्वास हो गया। रामबाबू ने कहा—"देवेन्द्र बाबू! तुम्हारी उस चीठी के साथ एक बात तो नहीं मिलती क्योंकि उस चीठी के हिसाब से अगर लिया जाय तो इसकी लाश ग्यारह दिन से यहां समझी जायगी न?"

देवे०—"हाँ!"

राम०—"लेकिन यह मुर्दा ११ दिन का नहीं बिलकुल ताज़ा है।"

दे०—"इसका कारण है।"

सुप०—"इतने दिन का मुर्दा ऐसा ताज़ा रहने का कौन कारण है कहिए?"

दे०—"पहला तो यह कि इसको उसने अकस्मात् मार डाला है। शरीर का खून बाहर नहीं होने पाया है दूसरा मरतेही कब्र में डाल देने से बाहर की हवा इसको मरने के बाद नहीं लगी है।"

सुप०—"ऐसा हो तो इस खून की तहक़ीक़ात तुरन्त करना चाहिए। जुमेलिया इसको कैसे खून करेगी जब

यह दफ़न् की गई तब उसके पास कोई हथियार था क्या ?"

टे०—"हथियार नहीं था सो हम मानते हैं। लेकिन जब यह आदमी उसको बचाने आया तब यह हथियार लाया हो तो क्या आश्चर्य है ? और उस चाण्डालिनी ने उसी से धोखा देकर हथियार ले लिया हो तो क्या कठिन है ?"

राम०—"अच्छा अब देखना चाहिए यह कौन आदमी है ! फिर यह कैसे मारा गया; इस बात की जाँच हो।"

मुर्दा सन्दूक से बाहर किया गया। शचीन्द्र उसकी जाँच करने लगा। सब लोग खड़े देखते रहे ! मुर्दे की पोशाक बारीक देशी कपड़े की थी, साथ में फूलदार पंजाबी कुरता ढीली आस्तीन का, सच्चे ज़री के काम की टोपी, दहने हाथ की अनामिका और मध्यमा दो उँगलियों में दो हीरे की अंगूठी जेब में सोने की जेबीघड़ी और चेन, भीतर के जेब में एक कलमतराश छुरी, एक रिङ्ग में बहुत सी चाभी, बीस रुपये का एक नोट, चार रुपया, दो चवन्नी, तीन दुअन्नी, दो रेशमी रूमाल एक रंगीन एक सादी, एक छोटा पिस्तौल और कई चिट्ठियां पाई गईं।

चिट्ठियों में बहुत सा अलाय बलाय लिखा था लेकिन सब के सिरनामे पर शेख़ कबीरुद्दीन साकिन खिदिरपुर अटियाबुरुज़ और मकान का नम्बर लिखा था।

अब उस मरे हुए आदमी का नाम जानने में सन्देह नहीं रहा। देवेन्द्रबाबू ने कहा—"रामबाबू! जुमेलिया का कहां पता लगेगा। सो मैं समझ गया हूं।"

राम०—"कहां ?"

दे०—"बस फिरोजा बीबी के मकान में वह मिलेगी। जहां इस कमोरुद्दीन का पता लिखा है वहां फिरोजाबीबीही रहती है। अब यहां कैसा मामिला खड़ा होता है सो तुम समझते हो ?"

राम०—"नहीं यार मेरी तो अकल कुछ भी काम नहीं करती।"

दे०—"अच्छा अब आप कहिये जुमेलिया सी भयंकर स्त्री कहीं देखी थी ?"

राम०—अरे देखना क्या कभी सुनी भी नहीं न आगे देखने का भरोसा है। क्या देवेन्द्रबाबू तुम भी उस से डरते हो न ?"

दे०—"उसकी बहादुरी को मैं मनही मन बड़ाई तो करता हूं लेकिन मेरी स्त्री पर जो उसकी टेढ़ी नज़र है उसी की विपत्ति का मुझे ख्याल है नहीं तो डर मैं दुनियां में किसी का नहीं करता डर शब्द मेरी जन्मकुण्डली में लिखाही नहीं है।

राम०—"अच्छा अब तुम क्या करना चाहते हो ?"

दे०—"अब उसी का पता लगाऊंगा।"

राम०—"पता लगावोगे ?"

दे०—"हां ! चाहे पता न मिले लेकिन कोशिश से नहीं चुकूंगा। अगर उसका पता नहीं लगा तो मेरी जिन्दगी में यह पहलाही काम होगा जिसमें मेरी मिहनत बेकाम जायगी।"

छठाँ बयान।

थिरोज़ा बीबी।

दूसरे दिन दस बजे देवेन्द्रबाबू बूढ़े मुसलमान के रूप में मटियाबुर्ज वाले थिरोज़ाबीबी के मकान पर पहुंचे। हाथ में कैनविस का बेग था। दरवाजे पर दो बार धक्का देने पाये थे कि भीतर से एक सुन्दरी ने द्वार खोल दिया। उमर उसकी छब्बीस सत्ताईस वर्ष की होगी। अंग सब एक से एक सुन्दर आँखों के निम्न भाग में सूक्ष्म कज्जल रेखा देख कर मन हाथ से बाहर हुआ जाता था। सच्चा जरी का काम किया सबज़ रंग का पेशवाज उसे सदृश परी बनाये देता था। ऊंचे दोनों उरोजों को कसे हुए हरे साटन की चमकती हुई चोली, उसके ऊपर से हरे रंग की बारीक ओढ़नी सुआ की चोंच सी सुडुक नाक की एक

और छोटी सी नथ देखतेही बनता था। रमणी चम्पकबरनी से नीलबसना मनोहारिणी थी। इसी का नाम है थिरोजा बीबी लोग थिरोजाबाई भी कहते हैं।

मुड़रूपधारी देवेन्द्रबाबू को सामने देख कर थिरोजा ने पूछा—"क्यों साहब! आप कौन हैं? किसको खोजते हैं?"

दे०—"यहां कोई कबीरुद्दीन रहते हैं?"

थि०—"हां रहते तो हैं।"

दे०—"उनसे इस वक्त मुलाकात हो सकती है?"

थि०—"सो तो उससे पूछे बिना कैसे कहूं?"

दे०—"उससे पूछना क्या मैं कोई पराया आदमी नहीं वह मेरे घर का लड़का है मैं उसका चचा होता हूं।"

थि०—"अच्छा मैं अभी उससे सब कहती हूं आप यहीं बाहर बैठे रहें।"

दे०—"कबिरुद्दीन घर में तो हैं न कहीं बाहर तो नहीं गया न?"

थि०—"नहीं, कहीं बाहर गया तो नहीं मालूम देता।"

दे०—"तो आप ठीक नहीं जानती।"

थि०—"नहीं कैसे? कभी दिन को वह बाहर जातेही नहीं"

दे०—"वह किस घर में रहता है?"

थि०—"तीसरे महल में उसने एक कोठरी भाड़े पर ली है"

दे०—"तो फिर क्या मैं पराया आदमी नहीं कि पूछना पड़ेगा मैं खुद आप के साथ चलता हूं।"

सातवाँ बयान ।

"जाल ।"

थिरोजाबीबी देवेन्द्र को साथ लेकर तीसरे महल पर गई। और वहां कबिरुद्दीन की कोठरी दिखा कर आप बाहर खड़ो हो गई।

देवेन्द्रबाबू उस कोठरी में घुस गये। भीतर कोई नहीं था। एक ओर टेबिल, उसके पास एक कुर्सी पड़ो थी। देवेन्द्रबाबू ने टेबिल पर दो चिठ्ठियां पड़ी देखीं। थिरोजा बीबी से बोले—"कहो कबीरुद्दीन तो नहीं है।"

"तो चले गये ! कब गये ! या खुदा यह कैसी बात हुई। हमसे कुछ भी कह के नहीं गये।" इतना कह कर थिरोजा भी उस घर में घुस गई। भीतर टेबिल पर जो दो चीठी थीं उनमें से एक थिरोजाबीबी के नाम दूसरी देवेन्द्र विजय के नाम थी।

"दो चीठी रख गया है। एक तो हमारा है एक तुम्हारा मालूम देता है सो लो।" कह कर देवेन्द्रबाबू ने एक आप लेकर दूसरी बीबी को दे दी।

थि०—"लीजिये आपके वास्ते भी चीठी लिख गया। मालूम होता है कि वह आप से मिलना नहीं चाहता।"

दे०—"वह नहीं चाहता तो क्या मैं तो बहुत चाहता हूं।

मैं तो जानता था कि वह भागेगा । वह बड़ा पाजी लड़का है देखें चीठी में क्या लिखता है। तुम भी अपना पढ़ो न देखो क्या बोलता है ? इस लौंडे ने हमको तो हैरान कर डाला।"

थिरोजा उसी वक्त अपनी चीठी अपने आप पढ़ने लगी। देवेन्द्र ने अपनी चीठी अपने सामने तो रक्खी लेकिन चश्मे के नीचे से नज़र रक्खी थिरोजा की चीठी की ओर उसमें कुछ बहुत नहीं लिखा था।

"हां सच तो। मालूम होता है कुछ दिन के वास्ते यहां से चला गया।" कह कर थिरोजा बड़े आश्चर्य में आकर देवेन्द्र की ओर देखने लगी।

दे०—"ऐं ! सचमुच चला गया?"

थि०—"हाँ।"

दे०—"कहां गया सो तुम्हारी चीठी में नहीं लिखा?"

थि०—"नहीं मेरी चीठी में तो कुछ नहीं लिखा। और आपकी में?"

दे०—"कुछ नहीं इसमें भी नहीं।"

थि०—"न जाने उसके मनमें क्या है?"

दे०—"हमारेही डर से वह भागा फिरता है।

थि०—"क्यों आपको इतना क्यों डरता है?"

दे०—"है, कुछ डर का एक उससे काम हो गया है।"

थि०—"क्या किया है ?"

दे०—"आजकल उसका मिजाज खिटखिटहा होगया था ?

थि०—"हां कुछ कुछ ऐसाही हो गया था ।"

दे० –"चेहरा भूखा झाँवरा हो गया था ?"

थि०—"हां ऐसाही था ।"

दे० –"वह लोगों से बहुत मिलता था बात भी करता नहीं था ?"

थि०—"हां बिलकुल चुप्पी साध गया था ।"

दे०—"कितने दिन से ऐसा हुआ था ?"

थि० –"तीन अठवाड़ा हुआ था ।"

दे०—"इसमें बहुत बात है ।"

थि०—"कहिये ! कहिये !"

दे०—"वह एक दूसरे के नाम की दस्तावेज़ पर सही कर आया था ।"

थि०—"जाल ?"

दे०—"हां जाल ! अब वह बात अदालत में ज़ाहिर हो गई है !"

थि०—"अरे ! तब तो बड़ी आफत आवेगी ?"

दे०—"हाँ लेकिन एक उपाय है ।"

थि०—"क्या ?"

दे०—"उसने जो सही किया है वह हमारे ही नाम की

सही कर आया है । और अकचका कर थिरोजा बोली—ऐं ।"

दे०—"इसी से तो मैं उससे मिलने आया था । इस वक्त मैं उसका सब कसूर माफ़ करना चाहता हूं । उसको बचाने के लिये खर्च करने को सैकड़ों रुपये लाया हूं उसको देकर कहना कि आगे ऐसा मत करना ।"

थि०—"ऐं ! तब तो आप बड़े परोपकारी बड़े दयालु हैं !

दे०—"हमारे दयालु होनेसे क्या वह तो पाजी का चचा है । हमारा गुण कुछ नहीं मानता । आप अगर दया—"

थि०—"क्या कहिये ! कहिये ?"

दे०—"वह यहीं फिर लौट आ सकेगा ?"

थि०—"मुझे तो भरोसा नहीं है ।"

दे०—"तुमको चीठी पत्री तो लिखेगा ?"

थि०—"हां लिख सकता है ?"

दे०—"ज़रूर लिखेगा ।"

थि०—"अच्छा तब मैं आप की बात उसको चीठी में लिखूंगी ।"

दे०—"नहीं, नहीं । थिरोज़ाबीबी ऐसा होने से कठिन होगा । वह बड़ा बदमाश है । हमारी बात उससे कुछ भी मत ज़ाहिर करो । वह कहां है यही बात हमको चीठी में लिख भेजो । बस मैं आकर उससे मिलूंगा ।

मेरे वास्ते जो चीठी रख गया है उसकी बात पूछे तो "मैं नहीं जानती" कह कर एक दम उड़ा देना। तुम अपनी चीठी दो उसमें अपना ठिकाना लिख दूं इतना कह कर उसकी चीठी ले बनावटी नाम धाम लिखने और उसे लौटाने बाद थिरोजा को सलाम करके वहां से देवेन्द्रबाबू चलते हुए।

आठवाँ बयान।

जुमेलिया की चिट्ठी।

"मायाविनी जुमेलिया सचमुच मायाविनीही है!" देवेन्द्रबाबू जब थिरोजा के घर से बाहर हुए तब आपही आप धीरे से बोल उठे।

क़ब्र की तलाशी ली गई और जुमेलिया उसमें से निकल भागी यह देवेन्द्रबाबू जान गये इसका पता जुमेलिया को भी लग गया यह देवेन्द्रबाबू ने अनुमान कर लिया।

देवन्द्रबाबू ने जो चीठी पाई थी उसमें इसका सबूत उन्होंने पढ़ कर पाया।

* * * * * * *

चीठी भी बड़ी बिचित्र, बिलकुल नये ढंग की थी उसको नीचे लिखते हैं—

श्रीलश्रीयुक्त सरनखेज शायित जासूस

देवेन्द्रबिजय मित्र

मेरे श्रादर श्रौर हतगर्वो प्रतिद्वन्द्वी

महाशय !

अब हम तुम दोनों अखाड़े में उतरे हैं। अब की तुम पर हमारी बिकट वार है जो खाली नहीं जा सकता। आज तक मैं सब काम धीरे २ करती आती थी लेकिन अब तुम्हारे ऊपर मेरे सब वार बड़ी तेज़ी से होंगे।

तुम कुछ जानोगे नहीं न जानने पावोगे। अचानक तुमको ऐसे मारूंगी जैसे नागिन हाथी को डँस देती है। चीठी पढ़ने पर थोड़ी देर तक बिचार कर देखो कि मैं कैसी भयावनी रमणी हूं।

मैंने पहले यह काम चुपचापही पूरा करना बिचारा था लेकिन वह नहीं हुआ। मेरा जीता रहना तुमको ज़ाहिर हो गया। कुछ परवाह नहीं हो गया तो हो जाय। मैं हुंड़ार देख कर डरनेवाली नहीं हूं।

जासूस जी! अब की कठिन स्त्री के पाले पड़े हो। अब तुम्हारी स्त्री के सिर पर रँड़ापा सवार हुआ चाहता है अब तुमको दिखा दूंगी और तुम भी देख लोगे कि जुमेला कौन जीव है। अब बहुत दिन नहीं है। बहुत जल्दी मरोगे जमपुर में तुम्हारे वास्ते अगवानी की तैयारी पूरी हो

चुकी है। अब तुम जानोगे कि क्यों जुमिला से पड़ कर अपनी मौत आप बुला लाये। अब मरने से पहले जो कुछ वसीयत वगैरह करना हो कर डालो।

जब तुम अपने साथियों के साथ क़ब्रिस्तान में गये और क़ब्र खोद कर सन्दूक बाहर की थी तब मैं भी वहीं छिपी थी सब अपनी आंख कान से देख सुन आई हूं।

देवेन्द्र तुम बड़े धूर्त हो इसमें सन्देह नहीं है। चतुर भी हो अक़लमन्द भी हो अगर तुम सन्यासी न होते अमर बुद्धिमान होकर ऐसे निर्बोध न होते तो मैं अब कहती हूं इस चतुराई और अक़लमन्दी के लिये तुम्हें चीं दे आती और खूब प्यार करती।

डाक्टर फूल साहब के सिवाय और किसी को मैंने अपने मुक़ाबले का आज तक नहीं पाया। केवल एक तुमको देखती हूं। लेकिन तुमको डरती नहीं न कभी डरूंगी। मैं तो पहलेही कह चुकी हूं कि मैं डरनेवाली नहीं हूं। फूल साहब उमर में बूढ़े थे तुम जवान हो लेकिन बड़े धर्मभीरु हो। तुमको प्यार करने को जी चाहता है लेकिन इस चाहने से क्या होता है? मैं तो जानती हूं कि तुम मुझे हर्गिज़ नहीं चाहोगे इसीसे मैं तुम्हें घृणा करती हूं।

जुमिला केवल घृणाही करना नहीं जानती, हिंसाभी नहीं करती शठताही नहीं जानती प्यार करना भी जा-

नती है। अगर तुम एक बार भी प्रेम की नज़र से मेरी ओर देखते तो जान सकते थे कि जुमेलिया कहां तक प्यार करना जानती है कहां तक आदर करना जानती है, प्रेम सागर में कितना चभोरना जानती है । तब तुम जानते कि जुमेलिया के मुखचुम्बन में कितना आनन्द है।

तुमने मुझे मनोरमा की जायदाद से हटाया है इसीसे मैं तुम्हें घृणा करती हूं। तुम्हारी स्त्री को घृणा करती हूं, तुम्हारे शचीन्द्र को घृणा करती हूं । तुम्हारे श्रीचन्द्र को घृणा करती हूं। मनोरमा को घृणा करती हूं और भी दो चार आदमियों को घृणा करती हूं।

जिनको मैं घृणा करती हूं वह जल्द मरेंगे। तुम मुझे अच्छी तरह जानते हो। मैं क्यों इतना लिखती हूं सो आपही आप समझ देखो। मैंने तुम्हारी वासना पूरी करने के लिये उपाय कर रक्खा है जिस समय तुमको इस चीठी से सचेत किया जाता है उसी समय तुम जुमेलिया से पराजित होगे। सदा खबरदार रहना।

मैं हूं—तुम्हारी स्त्री की बैरन

जुमेला।"

नवाँ बयान।

कुसम्बाद।

देवेन्द्र ने चीठी पढ़ ली। अपने लिये वह कुछ भी नहीं डरे किन्तु अपने कुटुम्बियों के लिये चिन्तित हुए।

कौन जाने जुमेलिया किस पर चोट करेगी? किस पर उसका पहला वार होगा। देवेन्द्रबाबू जेब में चीठो रख कर घर की ओर रवाना हुए।

घर के सदर दरवाजे पर श्रीचन्द्र खड़ा था देवेन्द्रबाबू को देख कर उसकी आंखों में आंसू दीख पड़े! देवेन्द्र ने अकचका कर पूछा—"क्यों श्रीश कुशल तो है?"

श्री०—"जो है सो है आप को देख कर जी में जी आया। नहीं बड़ी चिन्ता थी कि क्या हुआ।"

दे०—"क्यों हुआ क्या? साफ कहो न?"

श्री०—"मैंने सुना कि आप को किसी ने ज़हर दिया है जीने का भरोसा नहीं है।"

दे०—"कौन कहता है? कब यह खबर मिली?"

श्री०—"क्यों उस बात को सुने दो घण्टा हुआ।"

दे०—"कौन कहता था?"

श्री०—"एक पहरावाला।"

दे०—"क्या कहा?"

श्री०—"पहरेवाले ने आकर कहा कि एक स्त्री ने आपको ज़हर दिया है। आप थाने में पड़े हैं। आप के जीने का भरोसा नहीं है ऐसा कह कर मामी * को लाने आया था"

दे०—"कहां! कहां?"

श्री०—"थाने को।"

दे०—"उसके साथ गई?"

श्री०—"नहीं।"

दे०—"भला तो भगवान ने बहुत बचाया।"

श्री०—"मामी जी उसी दम उसके साथ जाती थीं कि शचीन्द्र आगये।"

दे०—"ठीक उसी वक्त?"

श्री०—"हां।"

दे०—"अच्छा तो फिर क्या हुआ?"

श्री०—"शचीन्द्र भाई बोले कि वहो आपको देखने जांयगे लेकिन मामी जी जानाही चाहती थीं।"

दे०—"फिर?"

श्री०—"फिर उन्होंने मामी की एक नहीं सुनी।"

दे०—"शचीन्द्र ने बहुत अच्छा किया। चालाक लड़का है न बड़ी अकल का काम किया।"

* श्रीचन्द्र रेवती को मामी और देवेन्द्र को मामा कहता था।

श्री०—"वह बोले कि पहले मैं जाता हूं। मामा आप को बुलावेंगे तो खबर भेजूंगा। तब मामी ने मंजूर किया शचीन्द्र भैया अकेले चले गये।"

दे०—"अच्छा जाओ कि आज बड़ी आफत कटी। अब तुम मामी से बोलो मैं आ गया। भला चङ्गा हूं सब बात झूठी थी।"

श्री०—"कहूं किससे अभी तो वह आई नहीं।"

अकचका कर देवेन्द्र बोल उठे—"ऐं! आई नहीं?"

श्री०—"हां!"

दे०—"गई कहां?"

श्री०—"आपही को देखने तो गई हैं।"

दे०—"अरे अभी कहा कि अकेले शचीन्द्र गया।"

श्री०—"हां सो तो गये फिर उन्होंने खबर भेजी आदमी आया लिवा गया।"

दे०—"ऐं!"

श्री०—"उन्होंने मामी को ले जाने के वास्ते आदमी भेजा तो हम अब क्या करें?"

दे०—"कितनी देर हुई?"

श्री०—"एक घण्टा हुआ होगा।"

घबरा कर देवेन्द्रबाबू बोले—"फिर उसके बाद क्या हुआ? शीघ्र जल्दी बोलो जल्दी। कौन खबर पहले लेकर आया फिर किसको शचीन्द्र ने भेजा?"

श्री० —"पहरेवाला तो था।"

दे०—"जो पहले आया था वही दूसरी बार भी आया ?"

श्री०—हां वही था।"

दे०—"तुम उसको जानते हो ?"

श्री०"नहीं, मैं नहीं जानता।"

दे०—"कौन जात था कह सकते हो ?"

श्री०—"मुसलमान था।"

दे०—"दोबारा आकर वह क्या बोला ?"

श्री०—"बोला क्या कुछ भी तो नहीं।"

दे०—"अच्छा तो फिर क्या हुआ ?"

श्री० —"एक चीठी लाया था।"

दे० —"वह शचीन्द्र के पास से लाया था ?"

श्री०—"हां।"

दे —"तुमने वह चीठी देखी ?"

श्री० —"हां वह तो मेरेही पास है।"

दे०—"लावो दो तो।"

"लीजिये" कह कर श्रीशचन्द्र ने चीठी दी देवेन्द्र ने उस पुर्जे को लेकर पढ़ा उसमें लिखा था —

"मामी जी ! चीठी पातेही चली आवो। आपके वास्ते एक गाड़ी भेजता हूं। मामा की दशा बहुत खराब है।

शचीन्द्र।"

दसवाँ बयान।

"५४२०"

देवेन्द्रविजय पढ़ कर बदहवास हो गये। थोड़े सेकण्ड बाद घबराहट कम हुई गुस्सा बहुत बढ़ा। ऐसा संकट कभी जिन्दगी में देवेन्द्रविजय पर नहीं पड़ा था।

देवेन्द्रविजय ने कुछ चिन्ता कर के कहा—"श्रीय! तुमने उस गाड़ी को देखा है?"

श्री०—"हां देखा है। दरवाजे के सामनेही तो लगी थी।"

दे०—"दो घंटा हो गया?"

श्री०—"हां दो घंटा पूरा हुआ।"

दे०—"तुम्हारी मामी को गये एक घंटा?"

श्री०—"हां।"

दे०—"कहां उसको लेगये जानते हो?"

श्री०—"थाने में लेगये।"

दे०—"जहां शचीन्द्र गया?"

श्री०—"हां।"

दे०—"शचीन्द्र गाड़ी पर गया था?"

श्री०—"नहीं तो।"

दे०—"जब शचीन्द्र गया तब पहरावाला गाड़ी नहीं लाया?

श्री०—"लाया तो था।"

दे०—"तब वह गाड़ी पर गया नहीं?"

श्री०—"नहीं वह दौड़े हुए पैदल आप को देखने गये।"
दे०—"वह पहरावाला भी साथही लौट गया ?"
श्री०—"हां।"
दे०—"शचीन्द्र के साथही ?"
श्री०—"नहीं वह तो दूसरी ओर को दौड़ा गया।"
दे०—"उस पहरेवाले का नम्बर याद है ?"
श्री०—"हां याद है।"
दे०—"कितना नम्बर है ?"
श्री०—"५४२०"
दे०—"अब तुम उसको देख कर पहचान सकते हो ?"
श्री०—"हां।"
श्री०—"अच्छा तो तुम अभी थाने को जाव। मेरा नाम लेकर रामबाबू से बोलो कि मैं अभी ५४२० नं० पहरे वाले को चाहता हूं तुम अपने साथ उसको लेते आवो"

श्रीचन्द्र उसी दम थाने को ओर दौड़ कर गया। देवेन्द्रबाबू बाहरी दालान में बैठ कर सोचने लगे। इस वक्त आफत सिर पर है। इस वक्त किसी काम में जल्दी करने से नुकसान के बदले फायदा नहीं होगा यह देवेन्द्रबाबू अच्छी तरह जान गये। इस समय देवेन्द्रबाबू को धीर धीर निश्चिन्तभाव से काम करना होगा। उनकी स्त्री रेवती को जुमेलिया हर ले गई इसमें कुछ भी सन्देह नहीं रहा।

जान पड़ता है इसीलिये जुमेलिया ने चीठी में लिखा है कि चीठी पढ़ने के साथही वह उससे पराजित होंगे। रेवती जासूस की स्त्री है उसको घर से बाहर निकाल ले जाना सहज नहीं है जुमेलिया ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। बड़ी चतुराई से रेवती को उड़ा ले गई।

ग्यारहवां बयान।

शठे शाठ्यं समाचरेत्।

रेवती चाहे कितनीही बुद्धिमती हो जुमेलिया के फन्दे से निकलना वा उसकी चालाकी समझना उसके लिये बहुत कठिनही नहीं बल्कि असम्भव है। जो खबर लेकर आया था वह पहरावाला पुलिस का आदमी खास कर उसी थाने का जिसमें रामकृष्णबाबू थानेदार हैं फिर ऐसी दशा में रेवती क्या सन्देह कर सकती थी? अगर सन्देह की बात होती तो शचीन्द्र तुरन्त आकर खबर देता। यहां रेवती के संदेह का कोई कारणही नहीं था।

शचीन्द्र अब तक नहीं लौटा। थाने तक जाकर उसे लौटने में जुमेलिया ने कैसी बाधा दी इसकी चिन्ता ने भी देवेन्द्र के चित्त में घर किया।

चीठी जो शचीन्द्र को कह कर पहरेवाला लाया था

वह बिलकुल जाली थी। ठीक शचीन्द्र की लिखावट सी होने के कारणही रेवती नें धोखा खाया है। रेवती को किसी तरह का संदेह न हो इसी विचार से शचीन्द्र के जाने पर एक घण्टा बाद जुमेलिया ने शचीन्द्र की झूठी सही बना कर चीठी भेजी है। इस भयानक बिपद के समय देवेन्द्रबाबू चुपचाप रहने के सिवाय और क्या कर सकते हैं? अपनी दालान में बैठे बिचारने लगे।

देवेन्द्र बाबू ने मनमें बिचारा—"दिन दो पहर जुमेलिया शचीन्द्र को कभी अपने हाथ में नहीं कर सकती। किसी और तर्कीब से शचीन्द्र को उसने किसी के पीछे झूठमूठ लगा दिया है इसो से वह पीछा करता चला गया है और अब तक नहीं लौटा है।

इतने में श्रीशचन्द्र ५४२० नं० पहरेवाले को साथ लिये आ पहुंचा। देवेन्द्र बाबू पहरेवाले को दालान में बिठा कर आप श्रीश के साथ भीतर गये और आड़ में जाकर पूछने लगे—"क्यों श्रीश! तुमने कुछ समझा?"

श्री०—"यह वह आदमी नहीं है।"

दे०—"मैं भी जानता हूं वह आदमी नहीं है।"

श्री०—"हाँ! इसका नाम तो अब्दुल है।"

दे०—"तुम इसको पहचानते हो?"

श्री०—"खूब अच्छी तरह से पहचानता हूं। लड़कपन से इसको देखता हूँ।"

दे०—"तुम से कुछ चालाकी तो नहीं करेगा ?"

खो०—' नहीं नहीं ।"

* * * * * * *

देवेन्द्रबाबू उसी दम बाहर आकर पहरेवाले से बोले—क्यों अबदुल ! तू ढाई घंटा पहले कहां था ?"

अब०—"डेरे पर गया था हुजूर ।"

दे०—"तुम्हारा डेरा कहां है ?"

अब—"राजा बागान में है ।"

दे०—"आज तुम्हारी कोई चीज भूली है ?"

अब—"हां हमारी चपरासही तो भूली है ।'

दे०—"कब कैसे भूली ?"

अब०—"जब मैं सोता था एक आदमी ने आकर मेरी चपरास मेरी बीबीसे मांगी उसने पूछा कौन चपरास चाहिये ? उसने कहा जिसको साहब ने मरम्मत के वास्ते देने को कहा था । बीबो ने कहा वह तो सोते हैं तब बोला कि आज हाथ खाली है सब ठीक ठाक बनाकर मैं दे देता फिर हमको फुर्सत नहीं मिलेगी आजही शाम के बाद बहुत काम आ जायगा। तब महीना भर मैं और दूसरा काम नहीं कर सकूंगा । अगर तुमसे मिले तो खोज के ला दो २ घण्टे में तब खो ने मेरी चपरास उसको दे दी ।"

टे०—"इसके पहिले तुमने किसी को चपरास मरम्मत करने की बात कही थी?"

अब—"हां कही थी और एक बड़े मजेकी बात होगई।"

टे०—"क्या?"

अब०—"जब मैं सोते से उठ बैठा तब मेहरी ने सब हाल कहा। कुछ दिन हुये मैंने लोलू मिस्त्री को अपनी चपरास पर पालिश करने को कहा था, मैंने समझा कि वही लोलू मिस्त्री ले गया होगा।"

टे०—"अच्छा फिर क्या हुआ?"

अब०—"मैं उसी दम लोलू मिस्त्री के यहां गया वह मेरी बात सुनकर बहुत भकचकाया और कहा चपरास का हाल वह कुछ नहीं जानता।"

टे०—"जो आदमी तुम्हारी बीबी से चपरास ले गया उसका चेहरा कैसा था तुम्हारी बीबी कह सकती है?"

अब०—"यही तो मजे की बात है साहब वह जैसा चेहरा बतलाती है वैसा लोलू मिस्त्रीही का है।"

टे०—"तुम अब क्या समझते हो?"

अब०—"क्या कहूं बाबूसाहिब मैं तो दस वर्ष से लोलूमिस्त्री को एक भला आदमी जानता हूं। जब उसने बालो-की कसम खाकर कहा कि चपरास का हाल कुछ भी नहीं जानता तब मैं क्या कहूं?"

दे०—"तो तुम्हारी स्त्री के पास से चपरास कोई धोखा देकर ले गया ?"

अब०—"हां अब तो यही मालूम होता है।"

बारहवाँ बयान।

शचीन्द्र आया।

"ज़रूर उसने तुम्हारी स्त्री को धोखा दिया। अब्दुल! जिसने तुम्हारी चपरास ली है उसका पता लगाने की कोशिश करोगे?" देवेन्द्र ने कहा, जवाब में अब्दुल बोला—"हां कोशिश तो मैं कर भी रहा हूं।"

दे०—"अच्छा अगर तुमको वह मिले तो उसको गिरफ़ार मत करो मत कुछ उसको बोलो। पहले मुझ से उसको इत्तला दो।"

"अच्छा साहब।" कह कर अब्दुल वहां से चला गया।

देवेन्द्रबाबू उसी वक्त जांच करने के लिये चलने का बन्दोबस्त करने लगे। मनमें ठीक कर लिया कि शचीन्द्र की राह देखना अच्छा नहीं है। ज्योंही रूप बदल कर निकलना चाहते हैं कि झट से किसी ने दरवाजा खोला और जल्दी २ भीतर आया। पाँव की आवाज़ पहचान

कर देवेन्द्र ने समझा कि शचीन्द्र आता है। इतने में शचीन्द्र भीतर आया। अपने कमरे में ले जाकर देवेन्द्र ने पूछा—"क्यों शचीन्द्र! क्या मामिला है! क्या हुआ?"

श०—"अब तक मैं बेहोश पड़ा था किसी ने मुझे ऐसी लाठी मारी कि मैं गिर गया।"

दे०—"कब मारा! कहां?"

श०—"पदमापुकुर रोड छोड़ कर ज्योंही जेलेपाड़ा में घुसने लगा त्योंही।"

दे०—"कहां लाठी लगी?"

श०—"सिर में।"

दे०—"किसने मारा जानते हो?"

श०—"मैंने उसको देखा तो नहीं, लेकिन जो लोग वहां थे वह कहते हैं कि मुसलमान था।"

दे०—"वह भाग गया?"

श०—"हाँ।"

दे०—"देखें कहां लगा? फूटा तो नहीं?"

श०—"नहीं फूटा तो नहीं ऊपर का चमड़ा छिल गया और रक्त भी थोड़ा चुचुआ गया था। डाक्टर ब्रजेन्द्र के दवाखाने के सामनेही मैं बेहोश होकर गिर गया था, उन्हीं ने मुझे सँभाला, भीतर ले गये। दवा लगा कर

पट्टी बाँधी थी। अब मामी की खोज करना चाहिये वह कहाँ है?"

दे०—"वह तो घर में नहीं है।"

श०—"यह क्या हुआ?"

दे०—बदमाशों ने तुम्हारे नाम की जाली सही बना कर एक आदमी के हाथ चीठी भेजी थी।"

श०—"तो मामी क्या जुमेलिया के हाथ पड़ गयी?"

दे०—"बिना जुमेलिया के दूसरे की ऐसी हिम्मत कहां है? अब मैं चलता हूं।"

श०—"कहां?"

दे०—"राजाबागान लीलूमिस्त्री के मकान में।"

श०—"वहां क्यों जाते हैं? हमसे सब कहे जाइये।"

दे०—"अबदुल पहरेवाले की चपरास चोरी गई है। लीलू मिस्त्री को पॉलिस करने को चपरास देने की बात अबदुल ने कही थी। जब अब्दुल सोता था लीलू उस की बीबी से चपरास माँग ले गया अब नाहीं करता है। अब मैं————"

बात पूरी होने के पहलेही दरवाजे पर फिर किसी ने धक्का दिया। श्रीश्चन्द्र एक चीठी लिये आ पहुंचा, और देवेन्द्र बाबू के हाथ में चीठी दी।

तेरहवाँ बयान।

जुमेलिया की तीसरी चिट्ठी।

देवेन्द्रबाबू उसी दम चीठी पढ़ने लगे उसमें यों लिखा था:—————

देवेन्द्रविजय !

तुम्हारी स्त्री फिर मेरे हाथ आई है। मैं अब भी उसको छोड़ दे सकती हूं। वह मेरी दवा से अचेत पड़ी है। अगर उस दवा के जवाब में ठीक वक्त पर दवा दी जायगी तो उसको कुछ हानि नहीं है। उसका मरना और जीना अब तुम्हारे हाथ है। इस वक्त उसे मैं तुमको दे दूं तो कोई डाक्टर, हकीम या कविराज उसको बचा नहीं सकेगा सब यही जवाब देंगे कि वह मर गई, लेकिन वह मरी नहीं जीती है।

तुमसे मुझे एक प्रस्ताव करना है मैं जानती हूं तुम अपनी बात को पूरा करते और कर सकते हो। प्रस्ताव क्या है सो जान सकते हो। मेरे हृदय में आशा और निराशा दोनों मिल कर उत्पात कर रहे हैं।

आज रात को ठीक ग्यारह बजे वालीगञ्जवाले बागान बाड़ी में मुझ से मिलो। बागान लाईड़ी बाबुओं का है उससे पश्चिम को जो काठ का घर है वहीं मिलना। कोई

हथियार साथ में मत लाना। हमसे मिलने पर बिना कुछ बाद बिबाद के मेरा कहना करना जहां मैं ले जाऊंगी वहां जाना। तुम्हारी स्त्री को छोड़ने के लिये तुमसे एक सन्धि (सुलहनामा) सा करना है।

अगर तुम किसी और को साथ लाओगी तो हमसे भेट नहीं होगी। अगर तुम हमको पकड़ने या और किसी तरह नुकसान में डालने की कोशिश करोगी तो तुम्हारी स्त्री बुरी तरह से मारी जायगी। तुम तो हमको खूब जानते हो।

जहां मैं मिलने के लिये लिख आई हूं वहां ठीक समय पर मैं अकेली आऊँगी तुमसे जो प्रस्ताव मैं करूंगी उसको अगर नहीं मानोगे तो जो होगा सो तुम खुद जानोगे। मैं हांक प्रचार कर कहती हूं तुम्हारा कुछ नुकसान नहीं होगा। तुम बेधड़क अकेले बिना किसी तरह के हथियार के चले आइयो, जब तुम हमारी बात नहीं मानोगे तो भी जब तक तुम घर नहीं पहुंचोगे तब तक जुमेलिया तुम्हारे ऊपर कुछ वार नहीं करेगी। तुम्हीं इस वक्त अपनी स्त्री की जान बचा सकते हो। कैसे बचा सकते हो सो अभी नहीं मैं ग्यारह बजे मिलने पर कहूंगी। याद रहे तुम्हारी स्त्री इस वक्त मानो बाईस हाथ पानी के नीचे पड़ी है।

तुम मुझे जानते हो

[जुमेलिया।

चौदहवाँ बयान ।

* * * * * * *

चीठी पढ़ने बाद देवेन्द्रबाबू के चेहरे का रंग बदल गया। मलीन मुख और मलीन हुआ। श्रीचन्द्र से देवेन्द्र-बाबू ने पूछा—"श्रीश ! तुमको यह चीठी कहां मिली ?"

श्री०—"घर के सामने ही ।"

दे०—"कौन दे गया ?"

श्री०—"एक छोटा सा लौंडा दे गया ।"

दे०—"उसने कहां पाया सो पूछा था ?"

श्री०—"हां कहता था एक बुढ़िया आई और चीठी देकर एक रुपया दे गई और घर दिखा कर कह गई कि इसी में दे आइयो ।"

दे०—"अच्छा अब तुम जाव ।"

श्रीचन्द्र वहां से चला गया। देवेन्द्रबाबू ने शचीन्द्र से कहा—"चीठी पढ़ कर देखो क्या कहती है ?"

शचीन्द्र ने मनही मन चीठी पढ़ी और फिर पूछा—"मामासाहब ! तो आप जावेंगे ?"

दे०—"हां जायंगे ।

श०—"क्या करेंगे वहां ?"

दे०—"न जाके ही क्या करेंगे ?"

श०—"तो जाके क्या करेंगे ?"

दे०—"जुमेलिया ने चीठो में सभी बातें लिखी हैं ।"

म०—"यह सब भी वैसेही है जैसे उसके और सब होते हैं

दे०—"मैं बिश्वास करता हूं कि चीठी की सब बातें सच्ची हैं

म०—"तो आप जावेंगे ?"

दे०—"हाँ।"

म०—"उसने आपको मार डालने का प्रण किया है न ?"

दे०—"हां वह तो याद है।"

म०—"खाली आपही को नहीं मामी को बीच को और हमको भी।"

दे०—"हाँ।"

म०—"मामासाहब! यह जुमेलिया का नया फन्दा है इसमें मामी के साथ आपको भी पहलेही फाँसना चाहती है"

दे०—"यह तो हम मानते हैं।"

म०—"तो भी जावेंगे ?"

दे०—"तो भी जांयगे।"

म०—"हमको साथ ले चलेंगे ?"

दे०—"नहीं।"

म०—"क्यों ?"

दे०—"ऐसा करने से मेरा मतलब पूरा नहीं होगा।"

म०—"कौन मतलब ?"

दे०—"वह मौके पर मालूम होगा अब इतनाही रहने दो इतना याद रक्खो कि उसने हमको बुलाया है सो अ-

पने काम को उसने आप बुलाया है। अब उसका दिन पूरा हो आया है।"

अ०—"आप उसकी प्रस्ताव पर राज़ी होंगे ?"

दे०—"पहले प्रस्ताव जानें तब तो उसका बिचार करें।"

अ०—"मैं इस वक्त क्या करूं ?"

दे०—"कुछ नहीं।"

अ०—"बड़ा कठिन काम है।"

दे०—"मैं जानता हूं, सुनो।"

अ०—"कहिये !"

दे०—"शाम होने के एक घंटे बाद तुम भिखमंगे के रूप में उसी बगान को जाओ। जिस काठ के घर की बात इसमें लिखी है उसी घर के पास किसी पेड़ की आड़ में छिपे रहियो देखते रहना कौन क्या करता है। कौन कहां जाता है, खूब खबरदारी से रहना कि तुमको कोई देखने न पावे। में ग्यारह बजे आऊंगा"

अ०—"हथियार वगैरह नहीं ले जायगे ?"

दे०—"हथियार बिना कभी देवेन्द्र घर से बाहर नहीं हो सकता। जब मैं जुमेलिया के पीछे चलूं तब तुम भी धीरे २ मेरे पीछे आइयो। लेकिन खबरदार तुमको वह देखने न पावे। मैं जेब में बहुत सा धान लेता आऊंगा और जिस राह से जाऊंगा उस राह पर

छींटता जाऊंगा। उसके छींटने में कुछ आवाज़ नहीं होगी। तुम धान देखते चले आना।"

श०—"बहुत अच्छा।"

दे०—"जुमेलिया बड़ी खबरदार है और बड़ी चालाकी से काम करती है। पहले खूब सोच विचार कर तो ऐसा विचारा है। जब उसने देखा कि इसमें कुछ उस पर आफत नहीं आती तभी ऐसा करना ठाना है। वह जानती है कि अब की हाथ में पड़ेगी तो बच नहीं सकेगी इससे वह कभी दया की आशा नहीं कर सकती। जब मैं वहां से चलूं मेरे पीछे २ चुपचाप धान देखते तुम भी चले आना और जहां मैं ठहरूं वहीं तुम भी ठहरना। जब तक मैं इशारा न करूं तबतक जाहिर नहीं होना।"

श०—"आप क्या इशारा करेंगे?"

दे०—"जब बराबर लगातार दो बार पिस्तौल का फैर हो तब तुम हमारे पास आ जाना।"

श०—"बहुत अच्छा मैं ऐसाही करूंगा।"

दे०—"शचीन्द्र! यह बड़ा विकट समय है। इसमें जहां चूके कि जान गयी। आज तक ऐसी अकल और ऐसी मिहनत का काम कभी आगे नहीं आया। देखो श-चीन्द्र! अगर मुझे वह मार डाले तो तुम जान रहते

तक्र कोशिश करना। हमारे मरने पर सब काम ह-मारा तुम्हारेही ऊपर पड़ेगा। जावो शचीन्द्र! भगवान भला करे हमारी बात याद रक्खो । तुम्हारा कल्यान होगा। अगर इसके बाद हमारी तुम्हारी मुलाक़ात नसीब नहीं तो परमेश्वर तुम्हारी रक्षा करेगा । वही तुम्हारी मदद करेगा। अब तुम जाव देर मत करो।" और कुछ न कह कर आंखों के आंसू पोंछता हुआ शचीन्द्र वहां से चलता हुआ।

पन्द्रहवां बयान।

मुठभेड़।

उसी रात को साढ़े दस बजे देवेन्द्रविजय घर से बाहर हुए। बागान में पहुंच कर आधा घण्टा बिताया, ग्यारह बजने में देर नहीं थी । देवेन्द्र बाबू बगान के पश्चिम ओर काठ के मकान में जाकर देखते हैं तो वहां कोई नहीं है।

वहां बिलकुल सुनसान था। कहीं किसी टूट कर गि-रते हुए सूखे पत्ते वा, उड़े हुए पक्षी के पर की फटफटाहट भर सुनाई देती थी। कभी दूर से कुत्ते का भौंभौं भी सुन पड़ता था।

एक पेड़ के नीचे शचीन्द्र छिपा था । देवेन्द्रबाबू की

तेज़ आँख उस पर जा पड़ी। शचीन्द्र ने भी मामा को दूर ही से देख लिया लेकिन किसी ने मुंह से बात नहीं निकाली कुछ देर बाद ठीक जब साढ़े ग्यारह बजा देवेन्द्र-बाबू ने उजेली रात में एक स्त्री देखी। वह उन्हीं की ओर बड़ी तेज़ी से आ रही थी देवेन्द्रबाबू ने समझ लिया कि वह स्त्री वही पिशाचिनी जुमेलिया है।"

जुमेलिया दूर से देवेन्द्र को देख कर बोल उठी—"कौन देवेन्द्रबाबू! आ गये?"

दे०—"हां आ गया?"

जु०—"मनमें कुछ डरे नहीं?"

दे०—"नहीं! डरूंगा किसको?"

जु०—"क्यों? हमको?"

दे०—"तुमको नहीं डरता।"

जु०—"तुम्हारे मनमें, कुछ डर नहीं होता?"

दे०—"नहीं।"

जु०—"तुम्हारीही बात नहीं और किसी के लिये तुमको डर हो सकता है सो छुपा है या नहीं?"

दे०—"जुमेला! मैं तुमको नहीं डरता।"

जु०—"साथ में कुछ हथियार है?"

दे०—"तुमने मना किया था न?"

जु०—"यह जवाब नहीं पूछती हथियार तुम्हारे पास है या नहीं ?"

दे०—"और तुम्हारे पास ?"

जु०—"हमारे पास तो है ?"

दे०—"तो मेरा भी वही जानो ।"

जु०—"तो मेरी बात तुमने नहीं मानी !"

दे०—"तुम्हारे कहे मुताबिक तुमसे मिलने आया हूं । हथियार हो या न हो इससे तुमको क्या मतलब है ? जब हाथ में हथियार देखना तब पूछना ।"

जु०—"तुम हथियार क्यों लाये हो ?"

दे०—"जरूरत पड़ने पर काम आवेगा ।"

जु०—"बेअकल हो ।"

दे०—"बेअकली क्या की ?"

जु०—"मैं तो कह चुकी हूं न मेरे कहे मुताबिक नहीं करोगी तो तुम्हारी खो मरेगी ?"

दे०—"हां कह चुकी हो ।"

जु०—"फिर ऐसा क्यों किया ! यहां से मैं चली जाऊं तो तुम क्या करोगी ?"

दे०—"मुंह से कह देना सहज है उतना जाना नहीं ।"

जु०—"क्या करोगी ?"

दे०—"एक क़दम हटने से ही खोपड़ी खतम ।"

जु०—"यह भी बेअक्ल की बात है। और——"

दे०—"और क्या?"

जु०—"हमको मार डालना और रेवती को मार डालना एकही बात है।"

दे०—"तो भी तुम्हें मारूंगा।"

सोरहवाँ बयान।

जु०—"मारो, तुम्हारे आगे हूं। तुम्हारी गुप्त तलवार के आगे मेरा प्रत्यक्ष सिर है मार डालो। निर्दयी, निष्ठुर देवेन्द्र! मेरी सुन्दर छाती में अपना हथियार पार करो हाज़िर हूं। अगर एक कोमल स्त्री के कलेजे में छुरी घुसेड़ने में तुम्हें कुछ भी दर्द न हो तो मेरा कलेजा मेरी छाती तुम्हारी छुरी के आगे हाजिर है।"

इतना कह कर जुमेलिया ने छाती का कपड़ा और चोली उतार कर अलग किया और घुटने के बल बैठ कर उघारी छाती देवेन्द्र को दिखाने लगी। देवेन्द्रबाबू उसकी लीला देख कर अकचका गये। जो थोड़ी देर पहिले पूरी पिशाचिनी थी उसका इतना परिवर्तन देख कर देवेन्द्र काँप उठे। मुंह से बात नहीं निकली। जुमेलिया देवेन्द्र को चुप देख कर बोली—"देवेन्द्र! चुप क्यों हो? हथियार

निकालो। हाथ क्यों नहीं उठता ? जान पड़ता है जितना निर्दयी मैं तुम्हें जानती थी उतने नहीं हो फिर साथ में हथियार क्यों लाये ?"

दे०—"इसीलिये कि ज़रूरत पड़ने पर काम आवेगा ?"

जु०—"अच्छा तो जो हथियार तुम्हारे पास है वह हमको दे सकते हो ?"

दे०—"नहीं।"

जु०—"तो फिर तुमसे हमको कुछ प्रस्ताव करना नहीं है। लौट जाव हमसे तुमसे सुलह नहीं होगी।"

दे०—"नुक़सान क्या है ?"

जु०—"तो तुम हमारा मुक़ाबला करोगे ?"

दे०—"नहीं मैं अपना काम करने आया हूं।"

जु०—"अच्छा सुनो यहां तुम हमारे साथ एक वादा कर सकते हो ?"

दे०—"क्या ? बोलो।"

जु०—"आज तुम अपना हथियार मत चलाओ।"

दे०—"ज़रूरत नहीं पड़ेगी तो नहीं चलावेंगे।"

जु०—"किस ज़रूरत पर चलाने का ठहराव किया है ?"

दे०—"तुमने अपनी चीठी में जो कुछ लिखा है उससे एक बात भी बदलोगी तब।"

जु०—"यही न ?"

दे०—"हां और भी कारण है?"

जु०—"क्या? बोलो।"

दे०—"अगर मेरी स्त्री को बचाने में जरूरत पड़े।"

जु०—उस बारे में कोई काम नहीं क्योंकि उसके बचाने में तुम्हारे हथियार कुछ काम नहीं देंगे।"

दे०—"तो नहीं चलावेंगे।"

जु०—"जरूर।"

सत्रहवाँ बयान।

भिखमंगे का वेष।

जु०—"देवेन्द्र। कोई तुम्हारे साथ आया है?"

दे०—"नहीं। तुम्हारे कहे मुताबिक काम किया है।"

जु०—"शचीन्द्र इस मामिले में कुछ नहीं जानता?"

दे०—"तुम तो जानतीही हो उसको चलने की ताकत नहीं है।"

जु०—"हां जानती हूं।"

दे०—"फिर पूछती क्या हो?"

जु०—"तुम अकेले आये हो यह मुझे विश्वास नहीं होता।"

दे०—"विश्वास न करने का क्या कारण है? मैं तो अकेला आया हूं।"

जु०—"देवेन्द्र तुम चाहे जितने खबरदार जितने चतुर हो जुमेला को नहीं पा सकोगे। मैं अभी देखतेही देखते तुमको मार सकती हूं।"

दे०—"सकती हो तो मारती क्यों नहीं। इतनी दया क्यों करती हो?"

जु०—"मेरी ऐसी नियत नहीं है।"

दे०—"देखो जुमेलिया व्यर्थ समय मत खोओ काल अच्छा नहीं।"

परिहास करके जुमेलिया बोली—"बाप रे बाप!

दे०—"सुनो इस तरह समय मत खोओ। मुझे कहां ले जाने के वास्ते चीठी लिखी थी?"

जु०—"वह जो दोमहला मकान देखते हो उसी में चलने के वास्ते, वहीं रेवती है। देखोगे?"

दे०—"चलो देखें।"

जु०—"एक और वादा करना होगा।"

दे०—"क्या? बोलो।"

जु०—"मेरे बिना कहे तुम अपनी स्त्री को छू न सकोगे।"

दे०—"मंजूर है।"

जु०—"बहुत अच्छा।"

दे०—"तो चलो।"

जु०—"अच्छा आओ।"

* * * * * * *

देवेन्द्रबाबू को साथ लेकर फुलवाड़ी पार करती हुई जुमेलिया उसी पहिले कहे मकान की ओर चली। वह मकान फुलवाड़ी के ही हाते में था। बहुत दिनों से मरम्मत न होने से कुछ भाग उसके गिरने लगे थे।

देवेन्द्रबाबू और जुमेलिया जब उस मकान की ओर जाने लगे तब भिक्षुक बेषधारी शचीन्द्र भी पेड़ की आड़ से चलना चाहा, लेकिन वह किधर गये देख न सका पांच सात मिनिट तक शचीन्द्र को देखनेही में लग गये शचीन्द्र वहीं खड़ा रहा।

जब शचीन्द्र वहां से चलने लगा एक और आदमी उसको दिखलाई दिया। तुरन्त पेड़ के नीचे कथरी डाल कर शचीन्द्र सो गया। और फों फों नाक बजाने लगा। वह बहुत जल्दी शचीन्द्र के पास आया। और कपट नींद में सोते हुए शचीन्द्र को बड़े ज़ोर का तमाचा मारा।

शचीन्द्र ने करवट फेरा और कहा—"कौन है भाई तुम्हें रास्ता नहीं सूझता क्या?"

उसने पहिले से अधिक ज़ोर का दूसरा तमाचा लगाया। शचीन्द्र ने कहा—"को है बाबा? पहरावाला है क्या? अरे भाई हम तो अलग सोये हैं इस पर इतनी ख़ातिर क्यों करते हो?"

उसने कहा—"अरे नहीं रे नहीं पहरेवाले बाबा नहीं हैं"

श०—"तो कौन हो भाई! क्यों सताते हो?"

तमाचावाला—"मैं एक बात तुमसे पूछने आया हूं।"

श०—"हम कौन हैं जो पूछते हो बाबा!"

तमा०—"मैं राह भूल गया हूं।"

श०—"सीधी राह है अपना रास्ता लो।"

तमा०—"पदमापोखर को किधर से जांय?"

श०—"कौन पद्मा? सफेद पद्मा कि नीला पद्मा।"

तमा०—"अरे यार चलो एक रुपया लो लेकिन रास्ता बता दो।"

श० – "बाप रे बाप! रुपया! रुपया हो तो अभी सिर पर लाद के पदमापोखर में रख आऊँ नहीं कहो तो पोखर के कीचड़ में डुबा आऊं।"

तमा०—"अरे तू पागल है क्या?"

श०—"पागल नहीं खांखड़ हैं। अभी तो कड़ाही से भूंज के निकाले गये हैं सीरा चढ़ेगा चासनी तैयार होगी तब तो पकेंगे। फिर पागल कहलायेंगे अभी तो बे-पागे हैं। लावो देखें रुपया कैसा है चाँदी है तो अभी तुमको राह बता दूं।"

तमाचेवाले ने एक रुपया शचीन्द्र के हाथ में दिया। शचीन्द्र ने राह बता कर कहा—"अब जाते हैं नमस्कार। ब्राह्मण हो तो सलाम।"

तमा०—"कहां जाओगी बनचक्करदास।"

श०—"जाऊँगा कसारी की बारात में रोशनी करने और आतिशबाजी बनाने।"

शचीन्द्र वहां से नौ दो ग्यारह हुआ। तमाचावाला भी चलता हुआ।

थोड़ी देर बाद फिर दोनों फुलवाड़ी की दूसरी ओर मोरचे पर आ मिले। तमाचेवाले ने कहा—"क्यों कन्हारी में नहीं गये?"

शचीन्द्र अकचका कर बोला—"अरे बाप रे! यह तो घूम फिर के मैं यहीं आ गया। सचमुच विलायतवाले कहते हैं कि धरती गोल है फिर मैं जाऊँ तो कहाँ जाऊँ?"

बाहर जाने की राह धर शचीन्द्र फुलवाड़ी से बाहर हुआ। तमाचेवाला उसको बराबर देखता रहा। "नहीं इसको डरने का कुछ काम नहीं यह मतवाला आधा पागल है। एकही रुपये में बुलबुल हो गया। पहिले तो मालूम हुआ कि कोई जासूसी दूत है लेकिन वह बात नहीं रही।"

इतना कह कर तमाचेवाला उसी रास्ते पर चला जिस पर से देवेन्द्र और जुमेलिया दोनों गये थे।

भिखमंगा भी बहुत दूर नहीं गया था। वह एक पेड़ के नीचे छिपा रहा। मौका पाकर वहां से बाहर हुआ

और जिधर से वह लोग तीनों गये थे उधर से चलता हुआ उसके चलते समय उसके हाथ की लाठी बार बार धरती पर गिर जाने लगी। वह हँस कर धरती पर से हर बार उठाने लगा।

इस हँसी का कारण क्या है? पाठक! आपने कुछ समझा है? देवेन्द्रबाबू जो धान गिराते गये थे शचीन्द्र उसी को लाठी उठाने के बहाने देखता चला जाता था।

अठारहवाँ बयान।

नया भाव।

थोड़ीही देर में जुमेलिया और देवेन्द्रविजय टूटे फूटे ऊँचे मकान के सामने जा पहुंचे। वहाँ जातेही जुमेलिया बोली—"इस घर में तुमको हमारे साथ चलना होगा।"
देवेन्द्रबाबू ने जवाब दिया—"बहुत खूब।"
जु०—"रेवती यहीं है।"
दे०—"अच्छा हमको उसके पास ले चलो।"
जु०—"अभी नहीं। मौका पड़ने पर ले चलूंगी। अभी तुमसे हमको बहुत कुछ कहना है आओ भीतर चलो।"

दोनों घर के भीतर गये। देवेन्द्रबाबू जब अन्धकारमय आँगन में गये गुप्त लालटैन निकाल कर सब देखा जुमेलिया रोशनी देखकर चौंक गई लेकिन कुछ बोल न सकी।

इसके बाद वह दोनों उत्तर ओर के ज़ीने से दूसरे महल पर चढ़े। वहां एक कमरे में जाकर जुमेलिया ने मोमबत्ती की रोशनी की ओर बोली—"देवेन्द्रविजय ! जानते हो मैं क्यों तुमको यहां लायी हूं ?"

दे०—"नहीं ! मैं नहीं जानता।"

जु०—"यह तुमको मालूम है न कि मैंने तुम्हें मार डालने का प्रन किया है ?"

दे०—"हां।"

जु०—"खाली तुम्हीं को नहीं तुम्हारी मदद में जितने हैं सब को।"

दे०—"हां हां।"

जु०—"तुमको विश्वास है कि मेरा प्रण पूरा होगा ?"

दे०—"अगर ताकत होगी तो होगा।"

जु०—"ताक़त तो है।"

दे०—"कुछ परवा: नहीं। श्रीगणेश करो।"

जु०—"लेकिन अभी मेरी इच्छा नहीं है। तुम्हारे साथ कुछ बन्दोबस्त करना चाहती हूं।"

दे०—"वह कौन सा ?"

जु०—"उसको सुन कर तुम अकचका जाओगे। मैं अभी इसी दम तुमको तुम्हारी स्त्री को और शचीन्द्र को छोड़ देने के लिये तैयार हूं।"

दे०—"इसमें कोई गूढ़ मतलब होगा।"

जु०—"हां अगर तुम हमारी बात मानो। हमारी सहायता करो हमारी इच्छा है कि आज से सब पापकर्म छोड़ कर सतपथ पर चलें।"

दे०—"उसका समय अभी है?"

जु०—"हां। समय बहुत है। अभी भी सुधरने का अवसर है"

दे०—"अच्छा कहो।"

जु०—"देखो देवेन्द्र। जिनको मैंने मार डालने के लिये प्रण किया है तुम चाहो तो उनको सहजही उबार सकते हो इसका उपाय क्या है? उपाय यही है कि हमारे स्वभाव की गति फेर दो और कुपन्थ से सुपन्थ पर लाओ। मुझे तुम सदा चाण्डालिनी पिशाचिनी दानवी कहा करते हो लेकिन तुम चाहो तो इस दानवी को देवी बना सकते हो।"

दे०—"जुमेला इन बातों का मतलब क्या है? मेरी समझ में नहीं आता।"

जु०—"सुनो देवेन्द्र मैं जो पूछती हूं उसका ठीक २ जवाब दो ठीक बोलो—मैं सुन्दरी हूं।"

दे०—"हां तुम सुन्दरी हो इसमें कुछ भी सन्देह नहीं।"

जु०—"कैसी सुन्दरी हूं।"

दे०—"अगर तुम्हारे भीतर की नीचता तुम्हारे चेहरे पर नहीं फूटती तो तुम्हारे समान सुन्दरी मैंने देखा है या नहीं इसमें भी सन्देह रहता।"

जु०—"मैं मनोरमा * से भी सुन्दरी हूं ?"

दे—"हां।"

जु०—"रेवती से भी ?"

दे०—"हां।"

जु०—"तुम सुन्दरी की सुन्दरता को प्यार नहीं करते ?"

दे०—"बड़ाई करते हैं।"

जु०—"मेरे हृदय से सब पाप की कालो पोंछ लो जाय तो मैं तुम्हारे मन लायक सुन्दरी हो सकती हूं ?"

दे०—"मन लायक होगी या नहीं सो मालूम नहीं।"

जु०—"अगर तुम्हारा मन कहीं बँधा न होता तो तुम उस वक्त मुझे प्यार कर सकते थे ?"

दे०—"नहीं, कभी नहीं।"

यही बात निबटेरे की हुई। जुमेलिया का हृदय दरक गया, चेहरे पर कालौ दौड़ गयी। मुलायम होकर बोली, "तौ भी तुम मुझे प्यार नहीं करते देवेन्द्र ?"

दे०—"नहीं तौ भी नहीं।"

जु०—"देवेन्द्रविजय ! मेरी उमर आज छत्तीस बरस कई महीने की है। इतने में बहुत से लोगों ने मुझे चाहा

* जिनको जुमेलिया की और भयंकर लीला जानना हो वह हमारी अनुबाद की हुई जादूगरनी मनोरमा नामक पुस्तक पढ़ें—गोपालराम, गहमरनिवासी।

लेकिन उनमें कोई ऐसा नहीं था जिसको मैं भी जी से चाहती। लेकिन तुमको देख कर मेरा मन अधीर हो पड़ा है। तुम मुझे प्यार नहीं करते प्यार करना क्या तुम मेरे परम बैरी हो तौभी मेरा मन तुम्हारे चरणों में शरण पाने का बहुत व्याकुल है। मैं पहिले जानती थी कि मेरी यह लालसा नहीं फलेगी। इसीसे तुम्हें मार डालने के लिये मैंने प्रण किया था। तुम्हें मार डाल कर मैं तुमको भूल जाऊंगी यही मेरा इरादा था। लेकिन आज एक बन्दोबस्त करने के लिये मैंने तुमको यहां बुलाया है।"

दे०—"कौन बन्दोबस्त! बोलो?"

जु०—"भरोसा है तुम मेरी बात नहीं टालोगे।"

दे०—"हां अगर कुछ नुकसान नहीं होगा तो नहीं टालेंगे"

जु०—"तुम अपनी स्त्री को प्यार करते हो?"

दे०—"हां करता हूं।"

जु०—"तुम उसको बचाने की इच्छा करते हो?"

दे०—"हां करते हैं।"

जु०—"उसको बचाने के लिये तुम कुछ छोड़ सकते हो?"

दे०—"हां छोड़ सकते हैं।"

जु०—"तुम अपना प्रेम छोड़ सकते हो?"

दे०—"मैंने तुम्हारी बात का मतलब नहीं समझा।"

जु०—"तुम अपनी स्त्री को छोड़ सकते हो ?"

दे०—"अपनी स्त्री को ?"

जु०—"हां अपनी स्त्री रेवती को। केवल एक बरस के लिये। तुम अपना भाव भीतर से उस पर चाहे जैसा रक्खो लेकिन एक बरस के वास्ते तुम हमारे साथ रहो एक बरस बीतने पर तुमको छुट्टी दूंगी। तुम फिर अपनी स्त्री के पास चले जा सकोगे। एक बरस के वास्ते मैं तुमको चाहती हूं। एक बरस बाद मैं भी मरूंगी तुम भी बेफिकर हो जाओगे। मैं अपना विष खाकर मर जाऊंगी तुमको छुट्टी दे दूंगी।"

इतना कह कर जुमेलिया देवेन्द्रबाबू के बहुत पास आई और घुटने के बल सामने बैठ गयी। देवेन्द्रबाबू उसका मतलब जान कर चौंक गये उनका शरीर शिथिल हो गया।

—o—

उन्नीसवाँ बयान।

झोंक में।

जुमेलिया कहने लगी—"देवेन्द्र! एक बरस के लिये तुम हमारे स्वामी हो। हमारे साथ सुख भोग करो! तुम हमको चाहते हो या नहीं, सो मैं नहीं पूछती। मैं खूब जानती हूं, मैं नासमझ नहीं हूं। तुम कभी हमको प्यार

नहीं करोगे, न करोगे सो मैं समझती हूं किन्तु तुम ऊपर से ही हमारे प्रेमी बनो जी से न सही; बाहरही से प्यार करो केवल एक बरस के लिये। एक बरस के लिये तुम हमारे पति बनो प्यारे बनो। रेवती की जान बचेगी वह राजी खुशी अपने घर पहुंचेगी। तुम्हारी एक बरस राह देखेगी उसको मालूम नहीं होगा कि तुमने हमारे साथ कुछ किया है फिर एक बरस बाद तुम खुशी से अपने घर जाना जो जी में आवे सो करना फिर तुमको मेरे वास्ते किसी तरह की चिन्ता नहीं रहेगी तुम बेखटके संसार में विहार करोगे। मंजूर करो देवेन्द्र! मेरी बात मानो इस गुप्त बात का भेद किसी को मालूम नहीं होने पावेगा। बरस दिन बाद तुम हंसते २ घर फिरोगे मैं दुनियां से विदा हो जाऊँगी।"

इतना कह कर जुमेलिया उठी और कुछ आगे बढ़कर देवेन्द्र को गले लगाने के लिये बाँह बढ़ाया, लेकिन देवेन्द्र ने उसे हटा दिया।

जुमेलिया फिर कहने लगी—"सुनो देवेन्द्र! मैं मरूंगी इस बात पर तुम विश्वास नहीं कर सकते सो मैं समझ रही हूं। लेकिन बरस पूरा होने पर तुम्हारेही सामने जहर खाकर मरूंगी; जब मैं मर जाऊं तब तुम छुरी से मुझे टुकड़े २ कर डालियो। इस वक्त तुम हमारी बात

मानो। हम तुम दोनो एक बरस के वास्ते कामरूपदेश को चल चलेंगे। मैं जितना यंत्र मंत्र जड़ी बूटी जानती हूं सब तुमको सिखला दूंगी। तुम्हारे यहां से चले जाने में कोई हरज नहीं होगा अपनी स्त्री को सदा चीठी भेजा करोगी। हाल चाल रोज़ लेते देते रहोगे मानो घरही में हैं, बोलो हमारी बात मंजूर करो वादा करो तो अभी तुमको रेवती के पास ले चलूं। वह मुर्दे की तरह पड़ी है। जिस दवा से वह अच्छी होगी वह मैं तुम्हारे हाथ में दूंगी। तुम उसको खिलाओगे उसी दम उसको होश होगा। बदन का रंग बदलेगा। जैसी पहले थी ठीक वैसीही हो जायगी। अगर हमारी बात नहीं मानोगे तो रेवती को मरी पाओगे किसी डाक्टर या वैद्य के बाप से भी उसको होश में नहीं ला सकोगे। जिस दवा से वह बेहोश की गयी है उसके जवाब की जड़ी मेरे सिवाय दूसरे को मालूम नहीं है। मेरे सिवाय उसको बचानेवाला दुनियां में दूसरा नहीं है। मैं जब तक खुश न होऊँ उस दवा को बतला नहीं सकती। और खुश तभी हूंगी जब मेरी यह बात बरस रोज़वाली मानोगे नहीं तो तुम हमारा हाथ पाँव लोहे की साँकल में बाँधो गरम लोहे से सारा शरीर जलाओ एक एक कर के सिर के बाल उखाड़ डालो सँड़सी से एक एक दाँत उखाड़ लो कान मुंह में गलता सीसा डालो चाहे जैसी पीड़ा

पहुंचाओ मैं अभी बतलानेवाली नहीं हूं। मुझे कच्चा अ-सामी मत जानो। बोलो क्या कहते हो?"

जुमेलिया झोंक में मन के आवेग में खड़ी हुई थी और देवेन्द्र आंखों में आँसू भरे मलीनमुख चुपचाप गम्भीर जैसे के तैसे खड़े रहे।

जुमेलिया ने पूछा—"बोलो देवेन्द्र! मंजूर है?"

दे०—"रेवती कहाँ है?"

जु०—"यहीं है।"

दे०—"उसके पास हमको ले चलो।"

जु०—"किस वास्ते?"

दे०—"उसको देख कर तो तुम्हारी बात का जवाब दूंगा"

जु०—"मैं अभी तुमको उसके पास ले जा सकती हूं।"

दे०—"ले चलो।"

जु०—"तब वहां तुम मेरी बात का जवाब दोगे?"

दे०—"हाँ।"

जु०—"अच्छा तो मेरे साथ आओ। देवेन्द्र! उसको देखकर उसका चेहरा देखकर जरूर तुम मेरी बात मंजूर क-रोगे। आओ हमारे साथ आओ।"

जुमेलिया देवेन्द्रबाबू को साथ लेकर पास के कमरे में गई। वहां एक फटे पुराने गलीचे पर रेवती मुरदे की त-रह पड़ी थी।

रेवती का बदन बिलकुल ठंढा, मुखमण्डल मलीन, ठीक मुरदे की तरह देख कर देवेन्द्रबाबू बहुत घबराये। जिन्दगी में इतना दुःख देवेन्द्र को कभी नहीं हुआ था जितना इस वक्त हुआ। फिर जुमेलिया की ओर लाल आँख दिखा कर देवेन्द्र ने कहा --"जुमिलिया तुम्हारी बात हमको मंजूर नहीं है।"

बीसवां बयान।

" मरेगी तो मरे "

देवेन्द्रविजय के मुंह से "मंजूर नहीं" सुन कर जुमेलिया बहुत चौंकी किन्तु वह भाव गोपन करके मुसकुराती हुई बोली—"घबराओ मत देवेन्द्र! खूब देख लो सोच बिचार कर जवाब दो।"

दे०—"खूब सोच बिचार लिया।"

जु०—"मेरी बात नहीं मानोगे?"

दे०—"नहीं।"

जु०—"तुमने अपनी स्त्री की यह दशा देख के कहा है न देवेन्द्र?"

दे०—"हाँ।"

जु०—"क्या देखकर तुमने ऐसा बिचारा?"

दे०—"मेरी स्त्री का कुछ हुआ नहीं है । मुखमण्डल म-
लीन है ज्योतिहीन नहीं है। जुमेला! जितनी नी-
चता हो सकती है उतनी तुमने कर दिखाई । चाहे
जितनीही तू पापिनी हो किन्तु पवित्रता क्या पदार्थ
है सो तुम जानती हो ? क्या अब भी तुम हमको प्यार
करती हो ?"

जु०—"हां। मैं प्यार करती हूं। तुम पर आसक्त हूं। तु-
म्हारे लिये पागल हूं।"

दे०—"होगी, लेकिन मैं तुमको घृणा करता हूं।"

जु०—'देवेन्द्र! यही तुम्हारा जवाब है? तब तो कठिन है!"

दे०—"मैंने कुछ अनुचित नहीं कहा है। तुम्हीं जैसे रेवती
हो और रेवती तुम्हारी जगह जुमेलिया हो और तुम
वहां फटे गलीचे पर पड़ी हो या तुम्हारे पति के सा-
मने कोई दूसरी स्त्री ऐसी बात कहे तो तुम अपने
पति को दूसरी स्त्री को सौंप सकती हो ?"

जु०—"ऐं! नाः नाः नाः नाः।"

दे०—"फिर तुम अपनी बात का जवाब आप दे लो।"

जु०—"अच्छा तो यदि हमारी बात मंजूर नहीं है तो यह
जानो कि खुद तुम अपनी रेवती के मार डालने के
कारण होते हो।"

दे०—"इस तरह से हमको फिरा नहीं सकोगी जुमेला!

जु०—"तो तुम हमको घृणा करते हो ?"

दे०—"हां।"

जु०—"तो ठीक है, रेवती भी मरेगी।"

दे०—"मरेगी तो मरे।"

जु०—"जरूर मरेगी।"

दे०—"जरूर सही, लेकिन अकेली नहीं मरेगी।"

जु०—"ओहो! तुम हमको डराते हो (हास्य)"

दे०—"हां।"

जुमेलिया फिर हँस पड़ी और बोली—"तुमको मैं कभी नहीं डरती। जुमेलिया ने ड और र पढ़ाही नहीं।"

दे०—"नहीं पढ़ा तो आज पढ़ोगी।"

जु०—"क्यों ?"

दे०—"उसके बिना हमारा काम नहीं पूरा होगा।"

जु०—"तुम्हारा काम ?"

दे०—"हां।"

जु०—"कौन काम ?"

दे०—"जो काम करने के लिये तुमने हमको कहा है।"

जु०—"तुमको क्या करने के लिये मैंने कहा तुम्हारी बात का हमको मतलब नहीं मालूम हुआ।"

दे०—"तुमने अपने वास्ते जो जो सज़ा कही है वह सब भोग करना पड़ेगी मैं मनुष्य हूं इस बात के जहां तक

होगा तुम्हारे लिये भूल जाऊँगा तुम्हारे जवाब मे तुम्हारेही समान पिशाच बनूंगा। तुम्हारे सिर के सब बाल एक एक करके उखेड़ूंगा फिर अपनी छुरी आग में लाल करके तुम्हारे कपार में दाग दूंगा फिर दोनों आंख निकालूंगा।"

सुन कर जुमिलिया हँसना चाहती थी लेकिन हँस न सकी।

दे०—"फिर क्या जाने तुम जहर खाकर अपनी जान निकाल डालो इससे तुम्हारे पास कुछ जहर हो तो पहिले उसको निकाल लेंगे। फिर तुम्हारा बिना बाल का सिर, जला हुआ कपार, और झौंसा मुंह रास्ते पर छोड़ दूंगा। जब तक तुम्हारी मौत नहीं होगी तबतक तुम तड़पती फिरोगी।"

गरज कर जुमिलिया बोली—"हैं! तुम ऐसा करोगे?"

दे०—"हां ऐसा करेंगे।"

जु०—"तुम करोगे तुम! देवेन्द्रविजय का इतना कलेजा?"

दे०—"नहीं, नहीं! जुमिला! तुम भूलती हो। देवेन्द्रविजय नहीं इसके बदन में इस वक्त तुम्हारे जवाब के लिये एक पिशाच का प्रवेश हुआ है। वही तुमको मरते दम तक तरह की पीड़ा पहुंचावेगा।"

उसी भाव से जुमिलिया बोली—"अरे पागल देवेन्द्र! तुम

क्या समझते हो कि यही सब दुःख सहने के वास्ते मैं तुम्हारे सामने चुपचाप खड़ी हूं।"

दे०—"नहीं तो और क्या करोगी। अब आत्महत्या भी नहीं कर सकती ज्योंही जहर निकालने चलोगी कि पिस्तौल की गोली से हाथ तोड़ दिया जायगा। भागने के वास्ते कदम उठाओगी तो इसी की गोली से पैर तोड़ दूंगा।"

इतना सुन कर जुमेलिया ने हँस कर देवेन्द्र का अपमान किया। देवेन्द्रविजय ने कहा—"जुमेला! हँसो मत! हँसने की बात नहीं है! थोड़ीही देर में सब आगे आवेगा"

जु०—"अच्छा दिखाओ?"

दे०—"देखोगी? तुम्हारे कान में जो दो कुण्डल हिलती हैं इनमें भी तुमने चतुराई से जहर छिपा रक्खा है इन दोनों को भी दूर कर देना जरूर है।"

इस बात के पूरा करने से पहिलेही देवेन्द्रबाबू ने दो बार लगातार फैर किया। जुमेलिया के दोनों कानों से दोनों कुण्डल दूर जा पड़े। घर धूयें से भर गया। देवेन्द्र बाबू ने चट पिस्तौल छिपा डाला।

जुमेलिया चिल्ला कर दस पग पीछे हटी और कोने में जा खड़ी हुई। ज्योंही हाथ उठाती है कि देवेन्द्रबाबू ने

कहा—"खबरदार। हाथ मत उठाना, नहीं अभी पिस्तौल की गोली से तोड़ दूंगा। जुमिला! यह हँसी खेल नहीं एक बियोगान्त नाटक है।"

इक्कीसवाँ बयान।

पकड़ा गया।

दो बार लगातार पिस्तौल के फैर होने से देवेन्द्रबाबू ने मनमें बिचार किया कि शचीन्द्र अब जल्दी यहां आ पहुंचेगा। क्योंकि दो बार लगातार पिस्तौल परही उसको आने के लिये कह चुके हैं। शचीन्द्र कुछ देर बाद चुपचाप जमेलिया के पीछे आकर खड़ा हो गया। देवेन्द्र ने देखा लेकिन जुमेलिया ने नहीं देखा।

देवेन्द्र ने कहा—"जुमेला! एक दिन तुमने कहा था न कि मरने बाद भी तुम मेरा पीछा करोगी। मैं अगर मरता तो तुम्हारा भी इस वक्त पीछा करता। भूत की तरह तुम्हारे पीछे आकर खड़ा होता। तुम कुछ भी नहीं जान सकती। फिर तुम्हारे दोनों हाथों को पीठ की ओर उलटा करके बांधता कि हिल नहीं सकती। समझा जुमेला! समझा?"

जु०—"नहीं समझा नहीं।"

दे०—"अब समझो।"

इतना सुनतेही शचीन्द्र ने जुमेलिया का दोनों हाथ पीछे की ओर उलटा कर ज़ोर से पकड़ा। जुमेला छटपट करने और चिल्लाने लगी, लेकिन किसी तरह शचीन्द्र से पार न पा सकी।

जुमेलिया से बात करने में जिस वाक्य के नीचे लकीर खींची है वह सब देवेन्द्रबाबू ने शचीन्द्र के लिये कहा। शचीन्द्र ने भी इशारा समझ कर उसी के अनुसार काम किया।

"जुमेला।" कह कर देवेन्द्र ने कहा—"अब तुम असहाया हो। भागने का उपाय नहीं है। अब तुम्हारे हाथ में हथकड़ी पाँव में बेड़ी डालूंगा। फिर तुमको और सब सज़ा दूंगा।"

उसी वक्त जुमेलिया को हथकड़ी और बेड़ी पहनाया गया। देवेन्द्रबाबू ने उसको एक कुर्सी पर बिठा कर लोहे की साँकल में कुर्सी सहित उसको बाँध दिया। अब जुमेलिया ने शचीन्द्र को देखा और कहा—"अरे राम रे। यह कौन भूत आ गया? मैं तो कुछ जानतीही नहीं थी।"

श०—"अगर जान सकती तो जिसको तुमने बगान में चौकी देने को रक्खा था। उसका हाथ पाँव बाँध कर पेड़ तले कैसे बाँध आ सकता था। जुमेलिया! अब तुम्हारा प्राण हमलोगों की दया पर निर्भर है।"

दे०—"हां जुमेला ! तुम जिसको प्यार करती हो उसी की दया पर तुम्हारी जिन्दगी है।"

जु०—"तो देवेन्द्र ! तुम हमारे साथ सुलह नहीं करना चाहते ?"

दे०—"सुलह ? नहीं, सुलह क्यों करूंगा ?"

जु०—"तुम रेवती को नहीं बचाओगे ?"

दे०—"अगर हो सकेगा तो बचाऊँगा।"

जु०—"तो जान बूझ कर क्यों उसको मारते हो ?"

दे०—"कैसे ?"

जु०—"हमारे साथ सुलह नहीं करना और उसको मारना बराबर है।"

दे०—"जिस दवा से उसको होश होगा वह हमको दोगी?

जु०—"दे सकती हूं। अगर तुम हमको छोड़ दो और ४८ घंटे के वास्ते हमको यहां से जाने दो तो मैं दे सकती हूं।"

दे०—"ऐसी आशा करना वृथा है।"

जु०—"तो तुम अपनी स्त्री को बचाना नहीं चाहते ?"

दे०—"वह बचेगी यह हमारा विश्वास नहीं है। अब तुम्हारी सजा शुरूअ होगी।"

फिर देवेन्द्र ने शचीन्द्र से कहा—"शचीन्द्र ! अब एक एक करके जुमेलिया के सिर का बाल उखाड़ना शुरूअ करो।"

चिल्ला कर जुमेलिया बोली—"बचाओ ! दया करो ! गुहार लगो ।"

दे०—किस बात की दया ?"

जु०—"मैं रेवती को बचा सकूंगी तो बचाऊंगी ।"

दे०—"अच्छा तो बचाओ ।"

जु०—"मुझे छोड़ दो ।"

दे०—"यह आशा छोड़ दो ।"

जु०—"तो तुम हमारी बात मानोगे ?"

दे०—"नहीं, नहीं किसी तरह नहीं मानेंगे !"

जु०—"तो मैं नहीं बचाऊँगी । वह चाहे मरे चाहे चूल्हे में जाय ।"

दे०—"जुमिला ! तुम उसको बचाओ अगर वह तुमको छोड़ देने को कहेगी तो जरूर छोड़ दूंगा ।"

जु०—"अच्छा अगर वह कहेगी तो छोड़ दोगे न ? तब मैं उसको बचाऊँगी मुझे छोड़ो मैं बचाऊँ ।"

दे०—"नहीं नहीं ।"

जु०—"तो फिर कैसे मैं बचाऊँ ?"

दे०—"जैसे उसको होश होगा सो बोल दो । मैं वैसा करूँगा । नहीं तो तुमको सजा भोगनी होगी ।"

जु०—"अगर वह बच जायगी तो हमको छोड़ दोगे ।"

दे०—"हां ! अगर रेवती छोड़ने को कहे ।"

जु०—"जिस घरमें तुमको पहिले मैं ले गई थी उसी मे टेबल के भीतर काठ का एक छोटा बक्स है। उसको लाओ जैसा है वैसेही लेते आओ खोलना मत।"

देवेन्द्र बाबू उसी दम गये और बक्स लेकर लौट आये जुमेलिया ने कहा—"इसमें से १७ नं० की शीशी निकालो पांच बूंद उसमें से रेवती को खिला दो।"

दे०—"किस नम्बर की दवा से तुमने रेवती को बेहोश कर रक्खा है।"

जु०—"इससे तुमको क्या काम है?"

दे०—"कुछ मतलब है।"

जु०—"सात नम्बर की दवा है।"

दे०—"अच्छा अगर १७ नं० दवा काम न करे तो सात नं० की दवा जबरदस्ती तुम्हें खिलाऊँगा।"

जु०—"उसका फल भी होगा।"

देवेन्द्र बाबू ने रेवती का सिर धीरे से अपनी गोद में लिया उस समय देवेन्द्र को जो मर्मवेदना हुई वह जिन्दगी मे पहिले कभी नहीं हुई थी। फिर देवेन्द्रविजय रेवती के मुंह में उसी शीशी की दवा बूंद बूंद करके टपकाने लगे।

इसके पांच मिनिट बाद सहसा रेवती ने आँख खोलकर देखा। और चकचकाकर घरके चारोओर देखने लगी।

बाईसवाँ बयान ।

यह क्या इन्द्रजाल है ।

आँख उघार कर रेवती ने जो देखा उससे बहुत चकचकाई। उसको घरसे क्लोरोफार्म देकर जुमेलिया यहां लाई थी। उस क्लोरोफार्म का असर दूर होने से कुछ मिनिट पहिलेही जुमेलिया ने अपनी दवा खिलाई। तभी से वह बेहोश की बेहोशही रही। अब जब होश में आई तब उसने अपने को देवेन्द्रविजय की गोद में पाया सामने भिखमङ्गा के भेष में शचीन्द्र खड़ा था। पासही एक कुर्सीपर हथकड़ी बेड़ी पहिने सिर नीचे किये जुमेलिया बैठी है।

देवेन्द्र बाबू ने रेवती से पूछा "कैसी हो?"

रेवती—"अच्छी हूं।"

दे०—"उठ सकती हो?"

सुनतेही रेवती उठ खड़ी हुई। देवेन्द्र ने कहा—"चल सकोगी?"

रे०—"हां चल सकती हूं किन्तु सिर थोड़ा भारी मालूम देता है।"

उसके बाद देवेन्द्र बाबू ने अपनी बीती हुई सब संक्षेप में रेवती से कह सुनाई। केवल जुमेलिया की एक बरस-

वाली बात रेवती से छिपा लो। इसके लिये जुमेलियाने क्षत-ज्ञता की दृष्टि से देवेन्द्रविजय की ओर देखा।

देवेन्द्र बाबू ने रेवतीसे कहा—"इस वक्त तुम्हारेही हाथ में जुमेलिया का भला बुरा निर्भर है। मैंने जुमेलिया से वादा किया है कि तुम उसको छोड़ने को कहोगी तो छोड़ूंगा नहीं तो कैद रक्खूंगा। इसी जुमेला ने तुमको कालके गालमें डाला था लेकिन याद रखने की बात है कि इसीने तुम्हारा प्राण बचाया है। अब मैं बाहर पंद्रह मिनटके लिये जाता हूं। क्योंकि मेरे सामने जुमेला तुमसे जी खोलकर प्रार्थना निवेदन नहीं कर सकेगी। लेकिन बाहर जाते समय तुमको इतना बतलाये जाता हूं कि तुम जुमेलिया के पास नहीं जाना न उसका शरीर छूना।"

देवेन्द्र बाबू शचीन्द्र को साथ लेकर वहां से बाहर गये बाहर से साँकल बन्द कर दी। देवेन्द्र बाबू और उनका भाञ्जा शचीन्द बाहर खड़े इन्तिजारी करने लगे।

पन्द्रह मिनट बीतने बाद कुछ भी खबर नहीं मिली। और दस मिनट बीता फिर भी भीतर से किसी ने जबाब नहीं दियावे केवल एक दीवार के अन्तर पर खड़ेथे लेकिन कुछ भी शब्द सुनाई नहीं दिया।तब देवेन्द्र बाबू घबड़ाये। बाहर उच्च स्वर से बोले—"और मैं पांच मिनट ठहरूँगा। जो तुमको कहना हो ठीक करलो।"

जेब से घड़ी निकालकर देखने लगी। पांच मिनट और उसी तरह बीत गया । देवेन्द्र बाबू ने उसी वक्त किवाड़ खोला खोलतेही एक दम चिल्ला उठे।

जिस घर में हाथ पांव बँधे जुमेलिया को रेवतीके साथ छोड़ गये थे वह घर खालीही मिला । वहां रेवती थी न जुमेलिया। उनका वहां कुछ निशान भी नहीं था।

जिस सांकल में जुमेलिया बँधी थी वह कुर्सी के नीचे पड़ी मिली। हथकड़ी और बेड़ी वहीं खुली पड़ीथी। कुर्सी पर एक कागज पड़ा था। उसमें यह लिखा था:—

"कैसी मजे की बात हुई! गधे जासूसराम! बड़े बीर बने थे। अब मैं स्वाधीना हूं रेवती फिर हमारे हाथ में है। ताकत हो तो बचाओ। वही जुमेला।"

"कैसे भागी?" देवेन्द्र बाबू ने कहा क्यों शचीन्द्र! जुमेलिया बँधी थी उसके आगे रेवती थी फिर कैसे भाग गई? तुमने जिसको बाँधकर बाहर पेड़ तले छोड़ा था वही तो नहीं यहां आ गया है क्या।"

शचीन्द्र इस बात को जांच के लिये जाने को ज्योंहीं घर से बाहर हुआ चाहता था की आग का एक तेज़ झटका आकर उसे भीतरही फेंक गया । उसी दम गुड़ुम् करके पिस्तौल का फैर हुआ।शचीन्द्र मुर्दा सा होकर देवेन्द्र बाबू के पांव के पास गिर गया । देवेन्द्र बाबू क्या करेंगे?

चिन्ता का कुछ भी अवसर नहीं है। इतने में पिस्तौल निकाल कर जिधर से आग का झटका आया था उसी ओर को निशाना साधकर फैर किया। उसी दम किसी आदमी के धमाकसे गिरने और कोलाहल करने की आवाज़ सुनाई दी। पिस्तौल का निशाना खाली नहीं गया।

देवेन्द्र बाबू द्वार के पास पड़े शचीन्द्र को लाँघकर कमरे के बाहर आये जहां से आवाज़ आई उधर गये तो देखते क्या हैं कि एक आदमी मुर्दे की तरह पड़ा है। पास जाने से मालूम हुआ कि वह मरा नहीं है। देवेन्द्र बाबू चुपचाप वहां खड़े देखने लगे।

तेईसवाँ बयान।

अन्त का उद्योग।

जब देवेन्द्र बाबू ने देखा कि वह आदमी पहिले से बहुत कुछ सचेत हो गया तब उन्होंने पूछा—"क्योंरे! मैं तुझसे जो कुछ पूछता हूं उसका ठीक जवाब देगा? अगर नहीं देगा तो अभी जीभ बाहर खींचकर खतम करदेंगे।"

उसने जवाब दिया—"आप क्या पूछते हैं?"

दे०—"जुमेलिया कैसे छूटी है?"

वह आदमी—"उसको मैंने छुड़ाया है।"

दे०—"जो दूसरी स्त्री वहां खड़ीथी वह कुछ नहीं बोली ?"

व० आ०—"पहिले उसी को क्लोराफार्म से बेहोश करके मैं बाहर गाड़ीपर रखआया पीछे उसका बन्धन खोला।"

दे०—"गाड़ी पर ? किसकी गाड़ी ?"

व० आ०—"मैंने पहिले वहां पूरब ओर के रास्ते पर ला रक्खी थी।"

दे०—"किसके हुक्म से ?"

व० आ०—"जुमेलिया के।"

दे०—"किसवास्ते गाड़ी लाये थे ?"

व० आ—"उसके साथ आपही जानेवाले थे इसीवास्ते।"

दे०—"गाड़ी में और कौन है ?"

व० आ०—"गिर्धारी नाम का हमाराही एक आदमी जिसको आप के आदमी ने पेड़ के नीचे बाँधकर मुंह में उसके कपड़ा ठूंस दिया था मैंनेही आकर उसको भी छुड़ाया था। फिर छिपकर यहां का हाल सुनता रहा जब मौका देखा तब यहां आकर काम खतम किया। अब वह सब चले गये हैं।"

दे०—"तुम क्यों रह गये ?"

व० आ०—"आपका खून करने के वास्ते।"

दे०—"गाड़ी कहां गई ?"

व० आ०—"दमदमा की ओर गई।"

दे०—"दमदमा में कहां किस जगह ।"

व० आ०—ठिकाना तो पूरा नहीं मालूम है । बैलगाड़ी से आगे जाना होगा शायद ।"

दे०—"बैलगाड़ी से कितनी दूर आगे ?"

व० आ०—बहुत दूर नहीं । दोही चार बागानों के बाद एक बड़ा फाटकवाला बागान है उसी में ।"

दे०—"वह हरखराम का बागान है क्या ?"

व० आ०—हां, हां । उसी का है ?"

दे०—"अगर झूठ बोलोगे तो मैं————"

व० आ०—"(बात काटकर) मैं झूठ नहीं कहता ।"

देवेन्द्र बाबू ने पूछा—"जुमेलिया के साथ तुम्हारे गिर्धारी की जान पहचान कब से है ?"

व० आ०—"एक हफ़्ता होगा ।"

दे०—"उस बागान में और कोई है ?"

व० आ०—"एक और दरवानहै जिसकानाम पहाड़सिंहहै।"

दे०—"जुमेला और गिर्धारी को गये कितनी देर हुई ?"

व० आ०—"जब मैंने आप के साथी को गोली मारी उस से थोड़ीही देर पहिले ।"

दे०—"हमको मारने के लिये तुम क्यों ठहरे रहे ?"

व० आ०—"जुमेलिया ने कहा था कि तुमको मैं मार डालूंगा तो मेरे साथ ब्याह करेगी ।"

दे०—"तुम उसकी बात पर विश्वास करते हो ?"

व० बा०—"नहीं पहिले तो करता था अब नहीं करता।"

धीरे धीरे शचीन्द्र को होश आया । थोड़ी देर बाद उठकर बैठगया। देवेन्द्र ने पूछा—"शचीन्द्र चल सकते हो?"

श०—"हां चल सकते हैं।"

दे०—"जुमिला इस वक्त कहां जायगी सो मैं जानता हूं मैं इसी दम उसकी खोज में जाता हूं । तुम इस वक्त यहीं रहो । जब तक मैं न आऊँ तब तक तुम यहीं ठहरो। रास्ते में कोई पहरावाला मिलेगा तो तुम्हारी मदद को भेज दूंगा।"

देवेन्द्र बाबू इतना कहकर वहां से जल्दी २ रवाना हुये। और बहुत जल्द जग्गुबाबू की बाजार की राह पर आ पहुंचे। वहां दो एक भाड़ेकी गाड़ी उसवक्त भी किरायेदारों की तलाश में इधर उधर जा रही थी। देवेन्द्र बाबू उनमें से एक के ऊपर चढ़ बैठे। घोड़े की लगाम और चाबुक अपने हाथ लेकर ज़ोर से गाड़ी हांक दी। गाड़ीवान उनका हांकना देखकर अवाक् हो रहा । देवेन्द्र बाबू को पहिले पागल समझकर डर गया।

देवेन्द्र बाबू ने उसको कहा—"गाड़ी दमदमा को चलने की बड़ी जरूरत है रोको मत किसी तरह नाह नूह करोगे तो गाड़ी से गिरा दूंगा । चुपचाप बैठे रहो, अगर

दस रुपया भाड़ा लेना है तो कुछ मुंह से बात मत करो।"

गाड़ीवान नसीब ठोंक कर चुपचाप बैठा रहा। दो दिन से एक पैसा भी नहीं मिला था। आज रात को दस रुपया पाने की बात सुनकर बड़ा खुश हुआ गाड़ी बड़े ज़ोर से चलती हुई।

चौबीसवाँ बयान।

देखतेही देखते गाड़ी श्याम बाजार पार करके थोड़ी ही देर में दमदमा पहुंची। अब भी उसी तरह तेज़ी से चली जाती थी।

जब उसी हरखराम के बागान के पास गाड़ी पहुंची तब सामने का एक चक्कर गिर गया। गाड़ी खड़ी होगई। देवेन्द्र बाबू अब कूदकर नीचे आ गये। गाड़ीवान के हाथ में दस रुपये की एक नोट देकर आगे बढ़े।

देवेन्द्र बाबू ने थोड़ी देर बाद हरखराम के बागान में प्रवेश किया। भीतर पश्चिम ओर को चले कुछ दूर जाकर एक दो-महला मकान देखा। उसके भीतर जाकर सीढ़ी से ऊपर चढ़ने लगे। बरामदे में बैठा पहाड़सिंह हुक्का गुड़-गुड़ा रहा था। देवेन्द्र बाबू चुपचाप उसके पीछे जाकर खड़े हुये। ज्योंही पहाड़सिंह ने हुक्के का लम्बा दम खींचा दे-

देन्द्र ने दोनों हाथ से उसका गला इतना ज़ोर से दबाया कि चिल्लाने तक की छुट्टी नहीं मिली । आँख पहाड़सिंह की उलट गई हुक्का हाथ से गिर गया। आप बेहोश होकर धरती पर गिर गया। देवेन्द्र बाबू ने अब उसी की धोती से उसका हाथ पांव कसके बाँध दिया और मुंह में खूब कपड़ा ठूंस दिया कि हाथ पांव हिलाना तो दूर रहा मुंह से बोल भी न सके। फिर देवेन्द्र बाबू वहांसे नीचे उतर आये।

पचीसवाँ बयान।

उपसंहार ।

बैठक में देवेन्द्र बाबू ने आकर देखा तो वहां कोई नहीं है! एक ओर मैली सेज पर थक कर बैठ गये थोड़ी देर बाद बागान के बाहर गाड़ी की घरघराहट सुनाई दी। देवेन्द्र बाबू ने खिड़की में से देखा तो एक गाड़ी फाटक से होकर भीतर आई । उसमें जुमेलिया और उनकी स्त्री है यह देवेन्द्र ने ठीक समझ लिया! ऊपर जो हांकता था वह गिर्धारी है। गाड़ी मकान के दर्वाजे पर आलगी। गिर्धारी कूदकर चट नीचे उतरा और "पहाड़सिंह—"पहाड़सिंह" कहकर पुकारने लगा । लेकिन पहाड़ की आत्मा पहाड़ पर गई है कौन जवाब दे?

गिर्धारी बोला—"अरे पाजी बदमाश न जाने कहां गया है? जुमि०—"गांजा खाकर बेहोश पड़ा होगा। अच्छा गिर्धारी हमारी बहिन को उठा ले जाव।"

गिर्धारी ने उठाया और कहा—"मरी है क्या?"

जुमि०—"नहीं मरी नहीं है ले जाव।"

कहकर जुमिलिया मुसकुराई।

गि०—"कहां रक्खूं?"

जु०—"वहीं बैठक में।"

बैठके में देवेन्द्र बैठे राह देख रहे थे। अब गिर्धारी का आना जरूरी जानकर दर्वाजे पर छिप रहे। चट बेहोश रेवती को लिये गिर्धारी वहां पहुंचा। रोशनी न रहने से देवेन्द्र को न देख सका। लेकिन पश्चिम ओरवाली खिड़की कुछ खुली थी उसी से जो चन्द्रमा की रोशनी कुछ आती थी उसी के सहारे सेज पर रेवती को रखकर बाहर जाने को आगे बढ़ा। इतने में देवेन्द्र बाबू उस पर पड़े। जैसे पहाड़सिंह को किया था ठीक वैसेही गिर्धारी को भी बेहोश करके पलङ्ग के नीचे बांध रक्खा। उसके बाद रेवतीके पास पहुंचे। मुंह के पास मुंह ले जानेसे मालूम हुआ कि क्लोरोफार्म से वह बेहोश पड़ी है। मनही मन बोले—"अबकी चाण्डालिनी का दिन पूरा हुआ।"

गिर्धारी! गिर्धारी! "कह कर बाहर से जुमिलिया ने

पुकारा। देवेन्द्र ने गिर्धारी की आवाज़ में कहा—"अब आव न अब क्या चिल्लाती हो?"

जु०—"यहां से दवाई का बक्स और २ कपड़ा सब तो ले चलो?"

वैसेही स्वर में देवेन्द्र ने कहा—"रहने दो वहीं बाक्स टाक्स तुम्हारी बहिन को लिये मैं यहां गिर गया सिर में चोट आई है।"

जुमेलिया उसकी बात सुनतेही खिलखिलाकर हँसी। खिड़की से देवेन्द्र ने सुना और देखा तो वह भी तेज़ी से चली आती है उसके हाथ में वही पहिली किरिच चांदकी रोशनी में चमक रही है। जुमेलिया बैठक के सामने आकर धीरे से बोली "गिर्धारी?"

उसी दम गुप्त लालटेन की जासूस देवेन्द्र ने कील दबाई और झट रोशनी हो गई सारी रोशनी जुमेलिया के चेहरे पर डालकर देवेन्द्रने कहा—"गिर्धारी कहा जुमेला! यहां तो देवेन्द्रही तुम्हारी राह देखता है!"

"देवेन्द्रविजय! बापरे बाप।"

बहुतही अकचकाकर जुमेलिया बोली।

"हां देवेन्द्रविजय! तुम्हारा जम! तुम्हारा काल! खबरदार एक कदम हटो और खोपड़ी उड़ी।"

जु०—"दैयारे! दैया! गोली मारोगी?

देवेन्द्र ! जुमिला की गोली ? । तुम्हारा कलेजा तो इतना ही है । तुम्हारे हाथ से मरने में भी जुमिलिया का निरादर है । फिर हाय ! जिसको मैं प्यार करूँ उसके हाथ से मरूँगी ? ऐसी मौत तो बडे दुःख की मौत है ! तुमको प्यार करती हूं नहीं तो कभी दुनिया से देवेन्द्र को बिदा कर चुकी होती । सुनो देवेन्द्र तुमसे हजार गुना जबरदस्त और अक्लमन्द जासूस हमारा बाल भी टेढ़ा नहीं कर सकता मैं कच्चा खा जाने की दांत रखती हूं । लेकिन तुम्हारे रूप और गुण में मैं भूल रही इतना सङ्कट देख रही हूं । नहीं तो अब तक तुम्हारी हड्डी कहां होती तुम्हारी क्या दशा होती सो कौन कहे ? अब तक तुम्हारा कहीं और जन्म हो चुका होता । तुम को प्यार करके ही मैंने अपना सर्वनाश किया । अपनी मौत आप अपने सिर बुलाई ! क्या करूँ मन मेरे ताबे नहीं है । मैं मनकी दासी हूं । जब तुम अपने गुरु और उस्ताद थे हमारे स्वामी या शिक्षक डाक्टर फूल साहब को जब तुमने गिरफ़ार किया । तब से तुमको न जाने मैंने किस आँख से देखा है कह नहीं सकती ।

देवेन्द्र यह तुम सदा याद रक्खो जो जुमिलिया तुम्हारी वैरन है वही तुम्हारी प्रेमभिखारिनी है जिस जुमिला के तुम दुश्मन हो उसी जुमिला के तुम हृदय के राजा हो । तुम्हारे

[illegible] के [illegible] में [illegible] को बड़े दुःख की मौत होगी। मैं खुद [illegible] हूं [illegible] तुम्हारे सामने मरती हूं। हंसती हुई मरती हूं [illegible] लुसिया का [illegible] हंसते मुंहसे देखो। लुसिया [illegible] देवेन्द्र [illegible] में [illegible] छोड़े।"

इतना कहकर लुसिया ने [illegible] छाती में बड़े जोर से घुसेड़ दिया। और [illegible]। एकदम लुसेलिया का प्राणान्त हो गया।

देवेन्द्रविजय का [illegible] स- [illegible] होतेही डाक्टर की दवा से [illegible] गया। [illegible] प्रकार होकर [illegible] के पास [illegible] और सबके साथ [illegible] खुशी [illegible] पहुंचे।

समाप्तम्।

॥ चुनेहुये उपन्यास ॥

अमलावृत्तान्तमाला	॥)
अकबर १	॥,
ईला	॥≠)
कमलिनी	।)
दीनानाथ	।-)
कुसुमलता प्रथम भाग	≡)
कुसुमलता दूसरा भाग	॥)
कुसुमलता तीसरा भाग	॥)
कुसुमलता चौथा भाग	॥)
दीपनिर्वाण	॥)
कटोराभरखून	॥≠)
गंगागोविन्दसिंह	॥)
चन्द्रकला	।)
चित्तौरचातकी	॥)
चन्द्रकान्ता चारो भाग	२)
चन्द्रकान्तासन्तति सोलह हिस्सों में	८)
छाया	॥)
ठगवृत्तान्तमाला चारो भाग	२॥)

दलितकुसुम	।≠)
संसारसुख	।≠)
नरेन्द्रमोहनी दोनों भाग	१)
नीलमणि	॥)
भयानकभ्रमण	॥।)
प्रणयिनीपरिणय	≠)
पुष्पवती	।≠)
प्रमीला	॥≠)
पुलिसवृत्तान्तमाला	॥)
परीक्षागुरु	॥।)
बंगविजेता	१)
बड़ा भाई	॥≠)
मधुमालती	॥।)
मायाविलास	।)
माधवीकङ्कण	॥।)
भारताख्यानकरता	≠)
राजहैरत दोनों भाग (उर्दू)	१॥)
रसेलस	॥≠)
राजसिंह	॥)
लावण्यमयी	≠)
लैले मजनू	≠)
वेनिस का बांका	॥।)

सासपतोहू	[illegible]
सुन्दरसरोजिनी	[illegible]
सच्चासपना	[illegible]
गौरीफरशाद	[illegible]
संसारदर्पण	[illegible]
सौन्दर्यमयी	[illegible]
स्वर्णलता	[illegible]
कुलवन्ती	[illegible]
[illegible] उर्दू	[illegible]
हीरे का मोल	।)
मनोरमा	॥)
सुहिवनी	॥)
कुसुमदेवी	।)॥
कपटीमित्र	[illegible]
तैमूर की फांसी	।)
संदूक का मुरदा	।)
सिरकटी लाश	[illegible]
देवी	१)
सरस्वती	१)

मैनेजर भारतजीवन
बनारस।

सो हे मैना ! इसप्रकार राजकुमार अनेक प्रकारसे रुदन करनेलगा तब पदमावती राजकुमारको बहुत व्याकुल देख समझाने लगी कि, हे प्राणनाथ ! कालसे किसीका वस नहीं चलता तुम्हारा उनका इतनाही संयोग था अब रोनेसे क्या होता है वह कहावत कि साँप निकल गया लकीर पीटनेसे क्या होता है इस कदर ऊंच नीच सुनकर और रानीके समझानेसे राजकुमारको कुछ कुछ धीरज बँधी परंतु यह राजकुमारने कुछभी नहीं जाना कि यह सब कर्म उसी रानीके किये हुए हैं सत्यहै स्त्रियोंके चरित्रोंको देवता मुनि ऋषि गंधर्व दानव दैत्य आदि भी नहीं जान सक्ते तो बिचारे पुरुषकी क्या सामर्थ्य है जो जानै ॥

दोहा

कहा न अबला करसके, कहा न सिंधु समाय ॥
कहा न पावकमें जरै, काहि काल नहिं खाय ॥

सो हे मैना ! इस रानीके साथमें ऐसा क्या बुरा काम चन्द्रदत्तने कियाथा जिससे रानी पदमावतीने इसके प्राण लेनेका उपाय किया हे मैना ! जरा मेरी तरफ देख इसमें शरमानेकी क्या बातहै तूही अपने दिलमें सोच कि इसमें कुसूर किसका तब मैना बोली कि हे तोते! इसमें शरमानेकी क्या बातहै तू इस दास्तानको खतमकर तब मैं भी तुझे इसका जबाब दूंगी तब तोता बोला कि हे मैना ! जब राजकुमार को चन्दरोज गुजर गये तो शामके वक्त रोज हवा खानेको जाया करै और जब महलसे निकलै तो साधूको दंडवत किया करै तब साधू राजकुमारको आशीर्वाद दे कि बच्चा तेरा भला हो हर बलासे बचंता रहियो यह कहकर चुप होजाय सो हे मैना ! राजकुमार सैर करने तो जाया करै परंतु अपने मित्र चन्द्रदत्तकी याद करके उदास रहै एक दिनका जिक्र है कि जब राजकुमार हवा खानेको निकला तब कुछ

दिलमें आई तो मन बहलानेके वास्ते साधूके पास बैठगया तब वही उसका मित्र साधू बोला कि हे राजकुमार ! आज बच्चा उदास कैसे हो हम जब तुमको देखतेहैं तब तुमको उदासही देखतेहैं इसका क्या कारणहै ? तब राजकुमार बोला कि हे बाबा साहब ! मैं अपनी उदासीका हाल आपसे कह नहीं सक्ता क्योंकि जो कहताहूं तो मेरा कलेजा फटता है एक मेरा बालापनका यार मेरे प्राणोंका प्यारा हमारे दीवानका बेटा सर्पके काटनेसे मरगयाहै सो उसी दिनसे उसका गम मेरे कलेजेपर सवारहै किसी तरहसे उतरता नहीं.तब चन्द्रदत्त बोला कि हे बच्चे ! मेरा सुगन यह कहताहै कि वह तेरा मित्र अभी मरा नहींहै जीताहै और चन्दरोजमें तुझसे आन मिलैगा तू हमारा वचन सत्य मान. यह सुनकर राजकुमार बहुतही खुश भया और बाबाजीको दंडवत कर महलोंको चला गया सो हे मैना ! वह राजकुमार तो उसी दिनसे चन्द्रदत्तके मिलनेकी आशामें रहनेलगा एक दिनका जिक्रहै कि पदमावती अपनी सहेलियोंको साथ लेकर अपने बागमें सैर करनेको गई तो रास्तेमें एक छोटासा बगीचा नजर आया और उस बगीचेमें एक सौदागर बच्चा जिसकी उमर चौबीस बरसकी होगी बैठाहुआ देखा पदमावती और सौदागरके लडकेकी जो चार नजरें हुई तो देखतेही पदमावती उसपर आशिक होगई और महलको लौटकर आई तो रात्रिके समय राजकुमारको पानीके बदलेमें शराब पिलाकर उसे गाफिल कर दिया और आप अपनारूप बदलकर उस सौदागर बच्चेके पास पहुँची और कुछ देरतक भोग विलास कर अपने महलमें आनकर राजकुमारके पास सोगई इसीतरह आनंद करते कुछ दिन बीते कि एक दिन राजकुमारने अपने ससुर से कहा कि हे पिता ! अब आपकी आज्ञा होय तो हम अपने वतनको जाँय क्योंकि हमको हमारे माता पिताको छोडे बहुत दिन हुए न जाने

उनका क्या हाल होगा. यह सुनकर राजानें कहा बहुत अच्छा हम आपको कल बिदा करदेंगे सो हे मैना ! यह सुन राजकुमार अपने महलमें आया और सब हाल अपनी प्यारी पदमावतीसे कह सफर-की तैयारी करने लगा.इतनेमें रात हुई तो पदमावती अपने समयपर रूप बदलकर सौदागर बच्चेके पास चली तब चन्द्रदत्तनें मनमें सोचा कि यह स्त्री नित्त कहां जातीहै इसका हाल देखना चाहिये. यह विचारकर बगलमें एक सिपाहीकी तलवार लेकर उसके पीछे हो-लिया और जब पदमावती उस सौदागर बच्चेके पास पहुँची तो भोगविलास कर कहनेलगी कि, हे प्राणप्यारे ! कल मैं अपनी सुस-रालको जाऊंगी यह सुन सौदागर बच्चेको बडा क्रोध आया कि हरा-मजादी हमनें तो तेरे पीछे अपने और सौदागरोंका संग छोडा मा-लके जहाजकी भी खबर न ली कि उसका क्या हुआ अब तू कहती है मैं सुसरालको जातीहूं!यह कह बहुत क्रोधितहो छुरा निकाल उसके तमाम सिरके बाल मूंड कुरूपा कर निकाल दिया. वह तो रोती हुई अपने महलको आई और चन्द्रदत्तनें जब यह देखा तो गुस्सेमें आ-कर उस सौदागरबच्चेका सिर भुट्टासा उडा दिया और वहांसे चल अपने आसनपर आन बैठा और पदमावती अपनें महलोंमें आन कर बडे जोरसे चिल्लाने लगी कि अरे कोई चलियो मेरापति मुझे मारे डालताहै और मेरा सिर मुंड डालाहै. यह सुनकर पहरेवाले दौडे और जो राजकुमारीको देखा तो उसका हाल बेहालहै और सिर घो-टमघोटहै ये हाल देखकर सिपाहियोंने जाकर राजासे कहाकि आज राजकुमारने पदमावतीका सिर मूंडकर हाल बेहाल करदियाहै.तब राजानें हुक्म दिया कि, राजकुमारकी मुश्कें बांधलो और उसे कचह-रीमें हाजिर करो. तब सिपाहियोंने जाकर राजकुमारकी मुश्कें बां-धली और सबेरा होतेही उसे कचहरी ले चले यह देख चन्द्रदत्तभी उनके साथ होलिया.जब राजकुमार कचहरीमें पहुंचा तो राजा उ-

सको देखकर आग बबूला होगया और कहा कि इसे अभी सूली देदो तब राजकुमारका हाथ पकड जल्लाद लेजाने लगे तब चन्द्रदत्त बोला कि हे राजा ! बेकसूर सूली देना अच्छा नहीं होता क्योंकि तेरी बेटीका सिर इस राजकुमारनें नहीं मूँडाहै तेरी बेटी की दोस्ती एक सौदागरबच्चेसे होगई यह भेष बदलकर उसके पास गई तो मैं भी पीछे पीछे इसके साथ होलिया जब ये दोनों भोगविलास करचुके तो सौदागर बच्चेने तेरी बेटीको बहुतसा मारा और उसका सिर मूँड- डाला यह देख मुझको जो गुस्सा आया तो मैंने उस सौदागरबच्चेका सिर काटडाला अगर आप इसे मिथ्या समझो तौ चलकर देखिये इस राजकुमारीके बाल मूँडेपडेहैं और उसकी लहास मौजूदहै मेरा नाम चन्द्रदत्तहै मैं इस राजकुमारका मित्रहूं सो एकदिन मुझे भीआप की बेटीनें जहर दियाथा सो मैं तो दैवयोगसे बचगया यह सुन राजा उस तकियेपर गया देखा तो सब बातें सत्य हैं यह हाल देखकर राजाने राजकुमारको तो रिहा किया और पदमावतीको फांसी दी तब राजकुमार चन्द्रदत्तको पहिचानकर छातीसे लगाकर कहने लगा कि हे मित्र ! आपकी ही कृपासे मेरी आज जान बचीहै आपने तो मुझे बहुत समझाया पर मैंने एक न मानी उसीका फल पाया है यह कहते हुए दोनों यारोंने अपने वतनकी राहली. तब तोता बोला कि हे मैना ! पदमावती और राजकुमारमें किस कदर प्यार था और फिर पदमावतीने कैसी वेरुखाई की अब तुमहीं इस बातको विचारो कि स्त्रियोंकी जातका क्या विश्वास है इसीसे मैं औरतोंका विश्वास नहीं करता तब मैना बोली कि ऐ तोते! तैंनें कहा सो ठीकहै परंतु मैं इसका जबाब तुझे देतीहूं अब जैसा जबाब इस दास्तानका मैना देगी वह इस किताबके चौथे भागमें देखना ॥

इति श्रीपण्डित रंगीलाल वैकुठवासीकृत तोता मैना

तीसरा भाग समाप्त ॥ शुभम् ।

सातवाँ दास्तान मैनाका.

मैना बोली कि, ऐ तोते! अब मैं तेरे सामने मर्दों की बेवफाईका हाल कहतीहूं कहीं शरम खाकर उड मतजाना, तब तोता कहने लगा कि, हे मैना! तू इतनी बढकर क्यों बोलती है तुझे तो मर्दोंकी बेवफाईके दस वीस ही दास्तान याद होंगे और मुझे तो स्त्रियोंके चरित्रोंके इतने दास्तान यादहैं कि सब दास्तानोंको कहूं तो एक बडा भारी ग्रन्थ होजावे और फिर भी मैं वेही दास्तान कहताहूं जिनमें फौश यानी बकवादकी बातें नहीं और जो मैं उन सबोंको भी कहूं तो एक सालभरमें किस्सा पूरा होगा यह सुनकर मैना बोली कि ऐ तोते! तू इतनी नाक भौंहें क्यों मरोडताहै जो कुछ तुझको यादहै उनको क्यों नहीं कहता तुझको डर किसकाहै तब तोता कहनेलगा कि ऐ मैना! आजकलके जमानेमें महाराजा राजराजेश्वर सप्तम एडवर्डका राज है इस राजमें कोई फौश बातें नहीं कहीजातीं इससे अब तुझको जो दास्तान यादहै वह कह, तब मैना बोली कि, ए तोते! हिन्दुस्तानके बीच एक बडा नामी और अति शोभायमान रमणीक काशी नाम शहरहै और वह हिन्दुओंका बडाभारी तीर्थ है और उसमें सैकडों धर्म शाला और ब्राह्मणोंकी पाठशाला हैं वहां रामकृष्णानंद पण्डितकी पाठशालामें बहुतसे विद्यार्थी विद्या पढतेथे सो उनमें एक लडका कृष्णदत्त नाम ब्राह्मण अतिस्वरूपवान बारह वरसकी अवस्था मथुरापुरीका रहनेवाला पढता था सो एक दिनका जिक्र है कि, काशीसे पांच या सात कोशपर एक शहर था और उसमें एक बडा भारी सेठ रहता था उसने किसी पर्वमें एक लक्ष अशर्फी संकल्प कीनी सो उन अशर्फियोंका बाँटना उस सेठने शुरू किया कि एक ब्राह्मणको एक अशर्फी देता सो यह बात काशीमें विद्यार्थियोंने सुनी तब रामकृष्णानंद पण्डितकी पाठशालाके विद्यार्थी भी उस शहरको उस सेठके यहांसे अशर्फी लेनेको चले तब

कृष्णदत्तभी उनके संग चला उस समय सब विद्यार्थियोंसे पंडितने कहा कि हे शिष्यो ! तुम लोग जाते तो हो परंतु एक वचन हमारा याद रखना जो रस्तामें कहीं श्यामचिरैया बैठी हों तो उसे दाहिनी लेकर जाना इस बातको सुनकर सब विद्यार्थी चले सो ऐ तोते ! जब वे काशीसे एक कोस निकल आये तो सबोंने कहा कि देखो इस पेड पर श्यामचिरैया बैठी है और कुछ बोलरहीहै तब सब विद्यार्थी उस को दाहिनी लेने को भगे उनको देखकर श्यामचिरैयाभी पेडसे उडदीनी तब सब विद्यार्थीभी उसके पीछे भगे थोडी दूर भगकर फिर सब थककर बैठगये परंतु कृष्णदत्तने अपने मनमें कहा कि, मैं तो गुरुकी आज्ञा नहीं टालूंगा ये चिरैया चाहे जितनी दूर जाओ परंतु दावें अंगही लेके जाऊंगा-यह विचारकर जिधर श्यामचिरैया उडकर जातीथी उधर उधरही उसके पीछे कृष्णदत्तभी भगा चला जाताथा निदान इसी तरह कृष्णदत्तको भागते भागते शाम होगई तब चिरैया एक पेडपर बैठगई कृष्णदत्त उस शामाको दाहिने लेकर वहांसे चला तो गिरता पडता हैरान होता हुआ उसी शहरमें पहुँचा तब आधी रात उसको गुजरगई और उस सेठका दर्वाजाभी बन्द होगया तब वह बिचारा रास्तेका हारा थका दिनभरका भूँखा प्यासा एक खाली दूकानमें सो रहा सो ऐ तोता ! उसी दिन उस शहरके राजाकी बेटी चन्द्रावतीका विवाह था सो किसी दूसरे शहरसे बरात आई थी परंतु वह दूल्हा कानाथा इससे उसके बापको सोचथा कि, ऐसा न हो मेरे बेटेको काना देखकर ये राजा अपनी बेटीकी शादी न करे जो ऐसा हुआ तो हमको दुनियांमें मुख दिखानेको ठौर न रहेगा इससे बेहतर यह हैकि किसी रूपवान्‌लडकेको बुलाकर उसेदुलहाके कपडे पहनाकर बिठादें जब उससे फेरे पडजायँगे तब उसको कुछ देकर बिदा करदेंगे और मेरे बेटेके हाथ बहू पडजायगी यह बात मनमें बिचारकर अपने दीवानसे सब हाल कहा तब दीवानने भी कहा कि

आपनें ये बहुत अच्छी सलाह बिचारीहै तब राजा बोला कि यहहाल किसीसे जाहिर तो हो नहीं और शहरमें जाकर किसी खूबसूरत लडकेको ले आवो तब दीवान शहरमें गया और लडकेको चारों तरफ देखने लगा कि एक दूकानमें कृष्णदत्तको सोता हुआ देखा दीवाननें कृष्णदत्तको सोतेसे जगाया और उससे कहनेलगा कि हे ब्राह्मणके लडका एक हमारा कामहै उसे तू करदे तो हम तुझको एक हजार रुपया देंगे तब कृष्णदत्त बोला वह क्या कामहै उसको मुझसे कहिये. तब दीवान बोला कि तुमको हम आज दूल्हा बनाना चाहतेहैं और प्रातःकाल होतेही तुम को एक हजार रुपया देकर बिदाकर देंगे तब कृष्णदत्त बोला कि बहुत अच्छा मुझको यह बात आपकी कबूल है. तब दीवान उस कृष्णदत्तको अपने साथ लेगया राजा उसको देखकर बहुत खुश हुआ और उसको अपने कपडा व जेवर पहनाकर दूल्हा बनाकर बिठादिया और बडी खुशीके साथ नाचरंग होने लगा इतनेमें समय जान चन्द्रावतीके पितानें आनेके खेतसे आदि लेके सब अपने कुलकी रीति कीनी और वह दूल्हा को देखकर बहुत खुश हुआ और अपने महलमें जाकर फेरोंकी तैयारी करने लगा और इधर बडी धूमधामसे बरात चढी कि जिसकी शोभा देखनेहीसे बन आवे जब बरात बेटीवालेके द्वारपरसे पहुँची और राजाने मोहरोंकी बखेर की फिर दूल्हा तोरन मारकर भीतर गया तो रानियां देखकर मगन होने लगीं सो हे तोते! जब वारोठी होगई और फेरान का सामान आया तब ब्राह्मणोंने वेदकी विधिसे चन्द्रावती और कृष्णदत्तके साथ विवाह कर दिया जब भांवर पडगईं और नेगचार होचुके तब चन्द्रावती और कृष्णदत्त दोनों चित्रसारीमें गये और आपसमें केलि करने लगे. सो हे तोते! उस ब्याहमें सब तरहका आनंद तो हुआ परंतु कृष्णदत्तके पेटकी बाबत किसीने न पूछी। कि तुमने कुछ खाया या नहीं खाया सो जब कृष्णदत्त चन्द्रा-

वतीके संग केलि आनंद करके बैठा उसवक्त कृष्णदत्तको भूखने ऐसा सताया कि मारे भूखके दम निकलता जाताथा अन्तमें उसने लाचार होकर रानी चन्द्रावतीसे कहा कि प्राणप्यारी इसवक्त मुझको भूखने ऐसा सता रक्खा है कि मारे भूँखके मुझसे हंसा बोलाभी नहीं जाता क्योंकि कल प्रातःकालसे मैंने कुछ नहीं खायाहै तब चन्द्रावती हाथ जोडकर कहनेलगी किहे प्राणनाथ! आपने मुझसे पहिलेसे क्यों नहीं कही क्योंकि जो आप पहिलेसे कहते तो मैं अपनी बांदियोंको भेजकर आपके वास्ते खानेको मँगादेती परंतु अब तो भंडार बंद हो गया अब मैं क्या उपाय करूं तब कृष्णदत्त बोला कि हे प्राणप्यारी! कुछ उपाय कर जिसतरह बने उसतरह मेरे वास्ते खानेकी तजवीज कर नहीं तो इसवक्त मारे भूखके मेरे प्राण निकले जातेहैं तब चन्द्रावती बोली कि हे महाराज! इस वक्त यहां और तो कुछ उपाय नहींहै परंतु कल मेरी माताने मेरी चामरीसे गोद भरीथी सो वे सूखे चाँवल तो रक्खेहैं तब कृष्णदत्तने कहा कि हे रानी! तू इन्हींको ला तब रानी उनको लाई और अपनी पुरानी साडीको जलाकर गंगाजलकी झारीमें उन चावलोंको पकाकर कृष्णदत्तकोखिलाये जिनको खाकर उसने थोडासा पानी पिया जिससे उसको सहारा आया फिर कृष्णदत्त और चन्द्रावती दोनों आनंदमें आकर केलि करने लगे सो ऐ तोता! जब इन दोनोंको केलि आनंद करते सब रात गुजरगई और प्रातःकाल होनेपर आया तब कृष्णदत्त तो जनमासेको गया और रानी चन्द्रावती सोती रही जब कृष्णदत्त जनमासेमें पहुँचा तो उस राजाने कृष्णदतसे दूल्हेके सब कपडा व जेवर लेलियाऔर एक हजार रुपया देकर बिदा किया सो ऐ तोता! कृष्णदत्त तो एक हजार रुपया लेकर काशीको चलागया और इधर सबेरा होते ही कुँवरकी कलेवाकी तैयारी भई तब राजाने अपने मनमें कुछ सोचकर पुत्रकी कानी आंखमें पट्टी बांधकर भेज दिया जब वह सुसरालको गया

तो वहां सब स्त्री पुरुष देखकर कहने लगे कि रातको तो दूल्हेकी आंख भली चंगीथी अभी अबमें इसकी आँखोंको क्या होगया तब दूल्हेके साथियोंने बात बनाकर कहा कि रातको तो बहुत अच्छी तरह थी परंतु आज सुबहहीसे इसकी आंख दूखनी आगई है इस बातको सुनकर चन्द्रावतीभी चिकमें से उझक कर देखने लगी तो उसने जानलिया कि ये पुरुष रातवाला राजकुमार मेरा पति नहींहै इसमें कुछ छल मालूम होताहै तब चन्द्रावती अपने माता पिताको बुलाकर हाथ जोड कहने लगी कि,ऐ पिता!आपके सामने कहनेकी बात तो नहींहै परंतु मैं लाचारहूं, क्योंकि विना कहे काम नहीं चलता और दूसरे मेरा धर्म्म नष्ट होता है इससे लाचार होकर अनुचितबात आपके सामने कहनी पडी और धर्म्मशास्त्रमें भी लिखाहै-

दोहा

तन मन धन कुल लाज सब, तजिये मन चित लाय।
इन सबको गयो सोच ना, जो निज धर्म्म बचाय॥

दोहा

तनदे मनदे ध्यानदे, रखियो धर्म्म बचाय॥
एक धर्म्मके कारने, सर्वस दियो गमाय॥ १॥

दोहा

प्राण जाय तो जानदे, रखियो धर्म्म बचाय॥
यही सोच निज हृदयमें, कहौं अर्ज दुखपाय॥

सो हे पिता!इन धर्म्मशास्त्रके वाक्योंको यादकरके अपने धर्म्म जानेके डरसे मैं आपसे कुछ अर्ज किया चाहती हूं तब चन्द्रावतीका पिता बोला कि हे बेटी! इस समय जो कुछ तू उचित अनुचित बात कहैगी सो सब माफ करूंगा तू अपने मनका हाल मुझसे कह-तब चन्द्रावती कहने लगीकि हे पिता!जिससे मेरी भांवर पडीथी और जो

पति मेरी चित्रसारीमें सोया वह मेरा पति ये नहीं है ये तो कोई और राजकुमार है- क्योंकि आपही समझकर देखो कि जैसा वह रूपवान् राजकुमार था वैसा यह नहीं है क्योंकि उसके तो नेत्र सुबह तक मृगकेसे थे और ये शक्स एक आंखसे कानाहै ये मेरा भरतार किसी सूरतसे नहीं है तब राजाने बेटीका वचन सुनकर राजकुमारकी आंख खुलवाकर देखी तो हकीकतमें वह काना था तब तो राजाको बडा गुस्सा आया और उस राजकुमारको उलटा लौटादिया और उस राजासे बडी गुस्सा खाकर कहने लगा तुम इसी वक्त मेरे शहरसे निकलजाओ नहीं तो उसी लडकेको लाओ कि जिसके साथ मेरी लडकीकी रातको भांवर पडीथी तब वह दूल्हेका बाप लाचार होकर अपने घरको लौट गया और चन्द्रावतीका पिता अतिदुः-खितहो उदास होनेलगा तब चन्द्रावती अपने पिताको उदास देखकर बोली कि हे पिता ! तुम इतना सोच क्यों करतेहो माता पिता तो जन्मके साथी होतेहैं कर्मके साथी नहीं होतेहैं इसमें कुछ आपका दोष नहींहै आपने तो अपनी जानमें घर वर दोनोंही अच्छे देखे इसमें आप क्यों सोच करतेहो इसमें आपका क्या दोषहै ॥

दोहा

होनहार होके रहै, बिसर जाय सब सुद्ध ।
जैसीहो होतव्यता, तैसी उपजे बुद्ध ॥

हे पिता ! ये संसार कर्मके वश बँधाहै सो जिसवक्त ये मनुष्य जन्म लेताहै उसीवक्त जो ललाटमें विधनाके अंक लिखे जातेहैं वे किसी तरह मेटे नहीं जाते देखो एक पुरानी कथाहै सो मैं तुम्हारे सामने कहतीहूं हे पिता ! आप चित लगाकर सुनिये तब राजा बोला कि अच्छा बेटी कहो तब चन्द्रावती कहनेलगी कि हे पिता ! एक भद्रपूर नाम नगरथा और उसमें एक प्रेमदत्त नाम सेठ रहताथा

उस सेठके सात पुत्रथे एकसमय दैवयोगसे उस सेठके घरमें एक प्रेत प्रगट भया और उसने सेठके सातों पुत्र बहू और सेठसेठानी सबको मारडाला केवल उस सेठके छोटे बेटा की बहू बची वह गर्भवतीथी उस हवेलीका ताला बंद कर किसी और गाँवमें अपने पीहर चलीगई और वह प्रेत उसमें रहनेलगा कि, इतनेमें कुछ दिन व्यतीत हुए तो उस सेठके छोटे बेटाकी बहूके पीहरमें लडका पैदाहुआ और वह लडका दिन दिन चन्द्रमाके समान बढने लगा जब वह लडका बारह वर्षका होगया तब वह बराबरके लडकोंमें खेलनेलगा सो एक दिन लडकोंमें आपसमें लडाई हो पडी तो एक लडकेने उस सेठके नातीको तायना दिया कि अब तू हमारे सग खेलने लायक नहींहै, क्योंकि अपना घरबार छोड कर मामा के टूकडोंपर पडाहै यह बात सुनतेही सठका नाती बडी गुस्सा खाकर अपनी माताके पास आया और क्रोधकर बोला कि, हे माता ! तू सत्य बतादे कि हमारा मकान कहां है तब बेटेकी बात सुनकर माता और उसके नाना मामा सब समझानेलगे कि, बेटा यही तुम्हारा घरहै और कोई तुम्हारा घर नहीं है. यह सुन लडकेने कहा ये तो हमारी ननसारहै ये हमारे बापका घर नहींहै या तो मेरा घर मुझे बता और नहीं तो जहर खाकर अपने प्राणोंको गमाऊँगा यह हठ बेटाका देखकर उसकी माताने कहा कि, ऐ बेटा ! हमारा घर तो भद्रपुरमें है सो उस घरमें थोडे दिनोंसे एक प्रेत प्रगट हुआ सो उसनें हमारे सब घरके स्त्री पुरुष मारडाले तब मैं अकेली रहगई और तू मेरे गर्भमें था सो मैं तेरे प्राण बचानेके लिये उस मकानका ताला बंद कर यहां आगई और मैंने उसी प्रेतके डरके मारे आजतक तुझसे वहांका हाल नहीं कहा यह बात माताकी सुनकर मकानकी ताली लेकर चल दिया उसको नाना मामाओंने बहुत रोका परंतु उसने किसीकी

न मानी. निदान वह लडका भद्रपुरमें पहुँचा और ज्योंही अपने मकानका ताला खोलकर ताला रक्खा सोई उस प्रेतने आनकर उस लडकेसे कहा कि यहां न आ नहीं तो मैं तुझे खाऊंगा. और मैंने ही तेरे सब कुटुंबको खायाहै यह बात प्रेतकी सुनकरके वह लडका बोला कि जो तू मुझको न खाय तो मैं तुझको अनेकों तरहके भोजन तैयार करके खिलाया करूंगा यह बात उस लडकेकी सुनकर प्रेतने मंजूर की तब इसप्रकार लडकेको कितनेही दिन रहते गुजरे तब एक दिन वह लडका उस प्रेतसे कहनेलगा कि आप नित कहां जातेहो तब वह प्रेत कहने लगा कि, मैं हमेशा विधाताके दरबारमें जाया करताहूं यह सुनकर लडका बोला कि हे प्रेत! तुम विधातासे यह पूछना की इस लडकेकी उमर कितने दिनकी है तब प्रेतने कहा कि, बहुत अच्छा यह कहकर जबवह प्रेतविधाताके दरबारमें गया और पूछनेलगा कि जो ये लडका मेरे पास रहताहै उसकी उम्र कितने वर्षकी है तब विधाताने कहा कि उसकी उम्र ७० वर्षकी है इस बातको सुनकर प्रेतने आनकर लडकेसे कहा कि तेरी उमर ७० वर्षकी है तब तो लडका फिर बोला कि अब तुम विधातासे यह कहना कि उस लडकेने यह कहा है कि मेरी उम्रमेंसे १ वर्ष घटादो या एक बरस बढादो तब वह प्रेत विधाताके पास गया और कहने लगा कि उस लडकेकी उम्रमेंसे एकवर्ष घटादो या एक वर्ष बढादो. विधाताने कहा कि जो मैं लिखचुकाहूं उसमेंसे एक क्षणमात्रभी कम नहीं होसक्ता तब उस प्रेतने इसीतरह लडकेसे कहा प्रेतका ऐसा वचन सुनकर लडका चुप होगया जब दूसरे दिन वह प्रेत चलागया तब लडका खा पीकर एक जलता हुआ लक्कड हाथमें लेकर बैठगया इतनेहीमें वह प्रेत भी आगया और उस लडकेसे कहनेलगा कि भोजन ला तब वह लडका प्रेतसे कहनेलगा कि आज भोजन नहींहै इसपर प्रेत बोला मैं तुझे खा जाऊंगा तब वह

लडका उस जलते हुए लक्कडको हाथमें लेकर प्रेतके पीछे दौडा और कहने लगा कि, "ऐ मूर्ख ! जब विधाताकी सामर्थ नहींहै कि मेरी उमरको घटावे या बढावे तो तेरी अब क्या सामर्थ्य है जो तू मुझको खाजावेगा" यह बात लडकेकी सुनकर प्रेत भागगया और वह लडका अपनी माता आदि सबको बुलाकर उसमें रहनेलगा और चन्द रोजमें वही कारखाने उसके होगये सो चन्द्रावती कहनेलगी कि हे पिता ! विधाताके अंकुर झूठे नहीं होते देखो किसी कवीश्वरका वचन है.

दोहा

जो विधिनाने लिख दिये, छठी रातके अंक ।
राई घटे न तिल बढे, रहरे जीव निशंक ॥ १ ॥

हे पिता ! इससे आप मेरी तरफका सोच न करें क्योंकि जिस परमेश्वरने आज आपको और मुझको सुख दिखाकर दुःख दियाहै वही परमेश्वर किसीदिन फिर इसी दुःखको मेटकर सुखदिखावेगा और वह मेरा पति आप लोगोंके ढूँढनेसे नहीं मिलेगा उसके पानेका एक उपायहै कि काशी आदि बडे बडे शहरमें आप एक पत्र टकवा दीजिये और उसमें यह लिखदीजिये कि हमारी बेटी चन्द्रावती एक प्रश्न किया चाहती है सो जो कोई उसका जबाब देगा उसको एक लाख रुपया मिलेगा.यह बात बेटीकी सुनकर उस राजाने बहुतसे पत्र लिखवाकर हर एक शहरमें टका दिये तब उस पत्रको बांच बांचकर बहुतसे लोग आये रानी चन्द्रावती अपने पिताको पास बिठाकर उन पण्डितोंके सन्मुख यह दोहा पढने लगी ॥

दोहा

व्याह भयो भामर पडी, भयो अधिक आनंद ॥
फिर दोऊ नर नार मिल, गये केलिके मन्द ॥

सिज्यापै वरको जभी, लागी भूख अपार ॥
फिर आगेको हाल कुछ, पण्डित कहो विचार ॥

यह दोहा चन्द्रावतीके सुनकर बहुतसे पण्डित तो चुप होगये और बहुतसे लोगोंने अपनी बुद्धिके अनुसार बनाकर जवाब दिया परंतु रानी चन्द्रावतीके मतलबको कोई न हुँचा. तब चन्द्रावतीने सब ब्राह्मणोंको एक एक अशर्फी देकर बिदा किये सो हे तोता ! इसी तरह रानी चन्द्रावतीको हरएकसे प्रश्न करते करते मुद्दत गुजर गई तब एक दिनका जिक्रहै कि कृष्णदत्तभी लोगोंसे सुनताथा कि चन्द्रावती रानी एक प्रश्न करती है और जो कोई आदमी उसके प्रश्नका जबाब देगा उसको रानी एक लाख रुपैया देगी और जिससे उसके प्रश्नका उत्तर नहीं आता है उसको एक अशर्फी देती है तब कृष्णदत्त विद्यामें तो निपुण थाही इस बातको ब्राह्मणोसे सुनकर उसी शहरमें गया और रानी चन्द्रावतीके महलमें पहुँचा तब चन्द्रावतीभी अपने पिताको अपने पास बिठलाकर कृष्णदत्तके आगे उन्हीं दोनों दोहोंको पढने लगी तब रानी चन्द्रावतीके दोहोंको सुनकर कृष्णदत्तको उस दिनकी याद आई तब कृष्णदत्त चन्द्रावतीसे कहनेलगा कि, हे रानी ! आधाही हाल क्यों कहतीहो सब हाल कहो तब कृष्णदत्तकी यह बात सुन रानी चन्द्रावती मनमें सोचने लगी कि हो नहो मेरा पति यहीहै क्योंकि इसको यह बात किस तरह मालूम पडी कि मैंने आधा हाल कहाहै ये बात सोचकर चन्द्रावती कृष्णदत्तसे कहनेलगी कि हे महाराज ! मुझको तो इतनाही हाल मालूम है आपको सब हाल मालूम है तो कहो तब कृष्णदत्तने कहा ॥

दोहा

काशीमें हम पढतथे, अपने गुरुके पास ॥
द्रव्य लेन या नगरमें, आये परम हुलास ॥
तब गुरुने हमसों कही, सुनो शिष्य चितलाय ॥

श्यामाको कर दाहिनी, जैयो नगरी मांय ॥
जब सब हम वहँसो चले, बढ्यो अधिक उत्चाय ॥
यापर ऊपर मार्गमें, श्यामा देखी आय ॥
जब हम वाको दाहिनी, लैवे कियो विचार ॥
तब श्यामा वह पेडसे, उठके उडी अपार ॥
सब सँगके थक रहगये, मैं पीछे गयो धाय ॥
सांझ समय वा श्यामको, लई दाहिनी जाय ॥
दिन बूडत वहाँसे चलो, भई रैन अँधियार ॥
रात जान वा सेठके, घरके लगे किंवार ॥
जब मैं मार्‍यो भूखको, रह्यो दुकानमें सोय ॥
उछक अनन्तर पुरुष एक, लैजु गयो सँग मोय ॥
बचनोंका दूल्हा बना, कीना सभी सिंगार ॥
मौर बांध हाथी चढा, लाये तेरे द्वार ॥
तब तोसों फेरा लिये, बहुत भयो आनंद ॥
फिर हम तुम दोनों जने, गये केलिके मंद ॥
तब तुमरे हम संगमें, कीन्हीं केलि विहार ॥
ता पीछे मों उदरमें, लागी भूँख अपार ॥
तब तोसों निज भूँखको, दीनों मर्म जताय ॥
तब तैंने ओदन कियो, अपने वस्त्र जलाय ॥
सो ओदन हम खायके, पीयो गंगानीर ॥
तब मेरे निज हृदयमें, आई कछु इक धीर ॥
इतनेमें भयो भोर जब, तोय निद्रा गइ आय ॥
तब मैं उठ तो भवन ते, जनमासे गयो धाय ॥
तब नृप मोय द्रव्यदे, विदा कियो ततकाल ॥
फिर मैं काशीको गयो, गुरु समीप सुनु बाल ॥

यह हाल कृष्णदत्तका सुनकर चन्द्रावतीने अपने पितासे कहा कि हे पिता! मेरा पति यहीहै तब तो राजाने कृष्णदत्तकी बडी खातिर की और बहुत लाड चावसे रखनेलगा और चन्द्रावतीभी अपने पति कृष्णदत्तकी बडी हित चितसे सेवा करने लगी सो हे तोता! इस तरह दोनों आपसमें केलि आनंद करने लगे और दोनोंमें इसकदर मुहब्बत बढी कि एकके बिना देखे दूसरेको एक घडीभर कल नहीं पडती. इसप्रकार कृष्णदत्तको रहते बहुत दिन बीते तब एक दिन कृष्णदत्तने अपने मनमें विचारा कि, जबसे हमने अपने माता पिताको छोडेहैं तबसे अबतक उनका दर्शन नहीं किया इससे अब उनके दर्शन करने चाहिये परंतु एक बडी गजबकी बातहै कि मैं इस रानीको वहां कैसे लेचलूं क्योंकि जो मेरे माता पिता भाई बंधु कुटुम्ब परिवारके लोग इस रानीको देखैंगे और उनको यह बात मालूम होजायगी कि, यह क्षत्रीकी बेटीको व्याह लायाहै तो मुझे जातसे खारिज करदेंगे और जो मैं इस रानीसे बिना कहे चला जाऊं तो यह रानी मेरा पता लगाकर मेरे घर आजायगी इससे अब क्या करना चाहिये यह बात विचारकर कृष्णदत्त रातको चन्द्रावतीको तलवारसे मारकर बहुतसा धन लेकर अपने वतनको चला गया सो मैना कहनेलगी कि ऐ तोता! जरा गर्दन नीची मतकर मेरी बातका जबाब दे कि उस कृष्णदत्तकी बराबर कौन बेपीर होगा कि, अपनी ऐसी प्राणप्यारी पतिव्रता स्त्रीको मारगया अब तूही अपने दिलसे सोच कि इसमें बेवफाई किसकीहै तब तोता बोला कि ऐ मैना! इस बातका जबाब मैं तुझको देताहूं क्योंकि स्त्रियोंके दास्तान तो बहुतहैं अब मैं तेरे सामने एक दास्तान कहताहूं कान लगाकर सुन ।

आठवाँ दास्तान तोतेका ।

तोता बोला कि, हे मैना! एक कंचनपुर नाम नगरथा और उसमें अंगध्वज नाम राजा राज करता था और उसकी रानीका नाम च-

न्द्रप्रभा था सो वहे रानी बडी सुशील और पतिव्रता थी एक दिनका जिक्र है कि राजा अंगध्वजके यहां एक ब्राह्मण आया और उसने आकर अंगध्वजको दो कागज दिये उनमें से पहिले कागजमें यह लिखा था कि।

दोहा

भूपति या जगके विषे, रात्रि जागरण सार॥
ताको फल उत्तम मिलै, ऋषि जन कहो विचार॥

और दूसरे कागजमें ये दोहा लिखा था—

दोहा

वैरीको सतकार भल, करै पुरुष जो कोय।
ताहि क्षमा दुर्जन करै, कैसेऊ शठ होय॥

राजा अंगध्वजने वे दोनों कागज लेकर अपनी जेबमें रख लिये और उस ब्राह्मणको द्रव्य देकर बिदा किया जब कुछ दिन बीतगये तब एक दिन राजाने अपने मनमें विचारा कि अब उस ब्राह्मणके वचनोंको भी अजमाना चाहिये सो एक रोज रात्रिके समय सब कामसे निचिन्तहो अपने महलमें जा बैठा और रात्रिभर सोया नहीं इसीतरह रात्रिभर जागतेहुए राजाको कितनेही दिन बीतगये सो एक दिनका जिक्र है कि, आधीरातके समय राजा अपने महल पर बैठाथा इतनेही में देखता क्या है कि, कोई महा दुखिया रोरहाहै उसके रोनेकी आवाज सुनकर राजाके हृदयमें बडी दया आई और वह अपने मनमें कहने लगा कि, ऐसे भी दुखिया मेरे शहरमें वसतेहैं इसीवक्त चलकर इससे दुःखका कारण पूँछना चाहिये क्योंकि राजोंका धर्म है और राजनीतिमें भी लिखाहै॥

दोहा

दुख सुख परजा को लखै, सुत सम पाले ताहि॥

धर्म न्याय सबको करै, राजा कहिये ताहि॥
निशिदिन परजाको लखै, नीत अनीत विचार॥
जो जो को अपराधहो, तैसो कर निरधार॥
जा हितसों पुत्रहि लखै, जा हितसों परवार॥
ताहीसों परजहि लखै, सो राजा सरदार॥

यह बात मनमें विचारकर पांचों हथियार बांधकर अकेला रोनेकी अवाज सुनकर उस तरफ गया और जाकर देखा कि एक सौ वर्षकी डोकरी पीसती जातीहै और हाय मारकर रोती जाती है तब राजाने कहा कि, हे माता! तुझको ऐसा क्या दुःख हुआहै जिससे तू ऐसी जार बेजार इस आधी रात्रिके वक्त रोरही है ?तब डोकरी बोली कि, ऐ मुसाफिर तुझे इस बातसे क्या पडीहै तू अपनी रास्ता चला जा मुझपर जो दुःख पडाहै उसको दूर करनेकी आदमीकी सामर्थ्य तो क्या परंतु ब्रह्माकी भी सामर्थ नहींहै ये बात डोकरीकी सुनकर राजा कहनेलगा कि हे माता ! तू कृपाकर अपना दुःख मुझसे कह तो सही फिर वह डोकरी बोली मैं अपना दुःख तुझसे कहती हूं परंतु जो तू उस बातको किसीके सामने कहैगा तो तू पत्थर का हो जायगा. तब राजा बोला कि हे माता! मैं किसीके सामने नहीं कहूंगा. तब वह बुढिया बोली कि हे बेटा! कल रात्रिके दस बजे इस शहरके राजा अंगध्वजको सांप काटेगा और उसके काटनेसे राजा मरजायगा सो मैं इसवास्ते रोती हूँ कि ऐसा धर्मात्मा राजा हमको कहां मिलेगा ये बात बुढियाकी सुनकर राजा बोला कि, हे माता! जैसे तैंने कृपाकरके इतना हाल मुझसे कहाहै तैसे ये भी कहदे कि, वह साँप राजाके काटनेको कहांसे आवेगा बुढिया बोली कि हे बेटा! इस शहरके पश्चिम दरवाजेके बाहर एक शिवजीका मंदिरहै और उसके पास एक पीपलका वृक्षहै उस वृक्षकी जडमें एक बांबीहै उसमेंसे सांप निकलकर राजाको

काटनेको आवेगा और उस सांपका और राजाका पूर्वजन्मका वैर है सो वह अपना दाँव राजासे आज चुकावेग तब राजा बोला कि, हे माता! आप कृपा करके ये भी कहो कि उसका दाँव राजासे किस बातपरहै? तब वह बुढिया कहनेलगी कि, हेबेटा! ये जो राजाहै सो पहिले जन्ममें साहूकार था और मणिसेन इसका नाम था और इसकी स्त्रीका नाम केशर था सो उसकी उम्र बीस बर्षकी थी और बडी स्वरूपवान थी सो एक दिनका जिक्रहै कि मणिसेन तो सौदागरीको दूर किसी देशको गया और उसकी स्त्री केशर घरमें रहने लगी उसके पास एक ठाकुरका लडका १८ वर्षका रहता था सो एक दिन उसके शरीरको कामदेवने ऐसा सताया कि वह बडी बेचैन होने लगी तब उसकी तबीयत उस ठाकुरके ऊपर आई और उस लडकेको बुलाकर पलंगपर लेगई और उससे कहा कि, इस वक्त मुझको कामदेवने ऐसा सतायाहै कि मुझको बेकल कर डालताहै सो हे प्यारे! आज तू मुझसे भोग विलास कर में तेरे ऊपर दिलोजानसे कुर्बान हूं और हमेशा तेरी ताबेदार रहूंगी, यह बात केशरकी सुनकर वह लडका हाथजोडकर बोला कि हेसाहूकारजादी! मैं ऐसा काम आपके साथ कभी नहीं करूंगा, क्योंकि मैंने अपने बडोंकी जबानी सुना है कि जो मनुष्य अपनेको अन्न वस्त्र खाने पहरनेको देताहै वह माता पिताके समान होताहै और जो मनुष्य अपने स्वामीके संग बुरा काम करै तो वह पुरुष नर्कवास करताहै.तब लडकेकी यह बात सुनकर केशर कहने लगी कि,या तो तू मेरे साथ भोग विलास कर नहीं तो तेरा बुरा हाल कराऊंगी.इसतरह केशरनें उस लडकेको बहुत धमकाया परंतु उस लडकेने एक न मानी तब लाचार होकर अपने मनको मार सो रही फिर कुछ दिन बाद मणिसेन आया तब उसने अपने पतिको आया सुनकर मनमें बिचार किया कि शायद कहीं

इस लडकेनें यह बातें साहूकारसे कह दीं तो न जाने साहूकार मेरी क्या दशा करावेगा इससे कोई ऐसा उपाय करना चाहिये जिससे मेरे ऊपर तो आफत न आवे और इस लडकेको मेरा अपमान करनेका फल मिले ये बात मन में विचारकर खटपाटी लेकर सोरही इतनेहीमें मणिसैन घरमें आया देखा तो साहूकारजादी उदास पडीहै तब मणिसेन कहने लगा कि हेप्यारी ! आज आप उदास क्यों पडीहो तब केशर बोली कि हे महाराज ! आप आगये अपना घर सँभाल लीजिये क्योंकि अब मैं अपने प्राणत्याग करूंगी तब मणिसेन बोला कि ऐसा आपने क्या दुःख पायाहै जिससे अपने प्राण खोतीहै तब केशर कहने लगी कि, हे प्राणनाथ ! मैंने दुःख कुछ नहीं पायाहै आपके प्रतापसे सभी सुख पायाहै परंतु आपका जो ये खिदमतगारहै इसने आपके पीछे मेरे साथ बडा जुल्म कियाहै सो या तो इसको सजा दीजिये नहीं तो मैं अपने प्राणत्याग करूंगी-तब मणिसेन बोला कि उसनें तुझपर क्या जुल्म कियाहै सो सब साफ साफ कहो तब केशर बोली कि, हे प्राणनाथ ! एक दिन रात्रिके समय मैं अपने चौबारेकी छत्तपर सोती थी कि वह अचानक मेरी छातीपर आन चढा और मुझसे बुरा काम करना चाहा परन्तु उसी वक्त मेरी आंख खुलगई तो मैं उसको अपने ऊपर बैठा देखकर चिल्लानेलगी तब उसने मुझे छोडी मेरा चिल्लाना सुनकर और नीचेके लोग भगे आये परंतु मैंने शरमके मारे किसीके सामने कुछ नहीं कहा उस दिन मेरा धर्म्म परमेश्वरनेही रक्खा नहीं तो मेरे धर्म्मके लेनेमें इसने कुछ कसर नहीं की थी-इस बातको सुनकर मणिसेन आग बबूला होगया और कहने लगा कि हे प्राणप्यारी ! आप इतना रंज क्यों करतीहो आप स्नान करो खाओ पीओ मौज उडाओ तुमको जो उसने दुःख दियाहै उसका फल आजही रातको तुम्हारे सामने उसे दूँगा यों कहकर मणिसेन दूकान पर चलागया जब रात हुई तब घर आया और उस

लडकेको अपने पास बुलाया और छुरियोंसे गोदकर अपने आंगन में गाड दिया इससे हे बेटा ! वह लडका सांप हुआ है और अपना बदला लेनेको आयाहै, इस बातको सुनकर राजा अपने महलोंको गया. तोता बोला कि हे मैना! जरा इस बातपर गौर कर कि उस बिचारे लडकेका क्या कुसूर था जिससे उस स्त्रीने जरा भी दया न बिचारी और उस लडकेको जानसे मरवा दिया. तब मैना! बोली कि इस बातमें तो स्त्रीपुरुष दोनोंही वेपीर ठहरे क्योंकि मणिसेनने भी उसको बिना हाल पूछे स्त्रीकेकहनेसे मारडाला. तब तोता बोला कि हे मैना ! मैं तो इस बातको पहिलेही कह चुका हूँ कि यह स्त्री ऐसी मोहनीरूपहै जिसवक्त पुरुषके गलेसे लगकर मीठे मीठे वचनकहकर तिरछी चितवन करकर कामके बाणोंसे पुरुषको मोहित करतीहै, तब मैना बोलीकि मैं इसका जबाब देतीहूं तब तोता बोला कि हे मैना ! तू इस दास्तानको पूरी सुनले जब तू भी जबाब देना. तब मैना बोली कि अच्छा कह तब तोता कहने लगा कि जब वह राजा अपने महलोंको गया तो मारे सोचके उसे नींद नहीं आई इतनेमें राजाका हाथ जेबमें पडा तो उस ब्राह्मणका दिया हुआ दूसरा कागज निकल आया जब उसे खोलकर पढा तो उसमें लिखा था कि वैरीकाभी सतकार करना चाहिये इस बातको लिखा देखकर राजा मनमें कहनेलगा कि उस ब्राह्मणकी एक बात तो सत्य हुई अब दूसरी भी अजमानी चाहिये. अब सांपके सिवाय इस वक्त मेरा वैरी कोई नहीं है इससे इसका ही आदर करना चाहिये ऐसा अपने मनमें दृढ विचार कर राजाने प्रातःकाल होतेही सब दीवान मुसद्दियोंको बुलाकर कहा कि आज रातके दसबजे हमको सांप काटने आवेगा सो तुमलोग मेरे पलँगसे लगाकर उस सांपकी बांबी तक सब जगह साफ कराकर गुलाबके फूलोंकी पतियां बिछवादो और गुलाब केवडा आदिके अतरोंको खूब छिडकवादो और दूधमें मीठा और सुगंध मिलाकर

सकोरेमें भरकर दोनों तरफको बांबीसे लगाकर मेरेपलँगतक रखवादो. राजाका वचन सुनकर दीवानने वैसाही किया और फिर राजाके पास आनबैठा इतनेहीमें उस सर्पके आनेका समय हुआ तब वह बडा क्रोध करके बाँबीसे चला और अपनें मनमें कहने लगा कि, आज राजाको मैं जीता न छोडूंगा ये मनमें विचार करता हुआ बाँबीमें कंकरोंसे छिलता हुआ मारे क्रोधके बडे जोरसे चला सो हे मैना ! जब वह सांप उस बांबीके बाहर निकलकर आया तो मारे खुशबूओंके मग्न होगया और कोमल कोमल फूलोंपर लोटने लगा और जिधर मुँह करे उधरही सुगंधित दूध पीनेमें आया तब वह इस आरामको देखकर बहुत खुश हुआ और मनमें कहने लगा कि इस राजानें मुझे अपना वैरीजानकर मेरी ऐसी खातिर करी है ऐसे धर्मात्मा राजाको मैं नहीं काटूंगा और मैंने अपना दाँव इससे भर पाया परंतु उसके सामने तो जरूर चलना चाहिये क्योंकि राजाको कैसे मालूम होगा कि मुझसे सांपने प्रसन्न होकर दाँव छोड दिया इस बातको बिचारकर सुगंधोंसे मग्न होता हुआ राजाके पलंगके पास आपहुंचा तब सर्पको आता देखकर दीवानने सर्पके मारनेको तलवार खींची तब राजा कहने लगा कि, खबरदार इससर्पके ऊपर हाथ मत छोडो इसप्रकार कहकर राजाने अपना हाथ सर्पके आगे बढाया और कहने लगा कि हे सर्पदेवता ! अब आप मुझको काटकर अपनाबदला लो. तब सर्प बोला कि,राजा धन्यतेरे माता पिताको जिन्होंने तुझसे साहसी धर्मात्मा वीरको पैदा किया है और धन्य तेरे साहस और धर्मको है कि तुझने मुझसरीखे अपने वैरीका सत्कार किया अब में तुझपर प्रसन्नहूं तुझको नहीं काटूंगा मैंने अपना दाँव भरपाया अब मेरा तेरा कुछ दाँव नहीं है येकहकर वह सर्प चला गया इस हालको देखकर सब लोग अचम्भेमें रहगये तब रानीनें कहा कि हे राजा! ये हाल तुमको किस तरह मालूम हुआ

सो तुम मुझसे कहो- ये बात रानीकी सुनकर राजा कहने लगा कि हे रानी ! यह किसीके सामने कहनेकी बात नहींहै तब रानी बोली कि हे प्राणनाथ ! आप मुझसे इस बातको कह दोगे तभी अन्नजल करूंगी राजा बोला कि हेरानी ! तू इस बातका हठ मत करै इसबातके कहनेमें मेरी जान जावेगी क्योंकि जिस शख्सने मुझसे ये बात कही है उसने मुझसे यह कह दियाहै कि जो तू इस बातको किसीके सामने कहैगा तो पत्थरका हो जायगा तब रानी बोली कि हे राजा चाहै तुम पत्थरके हो चाहे नहो परंतु इस हालको तौ मुझसे कह ही दो नहीं तो मैं अपने प्राणत्याग करूंगी इस बातको सुनकर राजा बेकल होने लगा क्योंकि राजाकी वह रानी ऐसी प्यारी थी कि बिनादेखे उसके क्षणभर भी नहीं रहाजाता था वह उसकी प्रीतिमें ऐसा अंधा होरहाथा कि उसके हठ करनेपर उसने कुछ नहीं कहा केवल कहा कि अच्छा जो तेरे मनमें मुझे पत्थरका ही करना है तौ अच्छा चल तुझे गंगाजी पर बताऊंगा क्योंकि मैं पत्थरकाभी हो जाऊंगा तो गंगाजीकी रेतीमें तौ भी पडा रहूंगा- यह बात सुनकर उस राजाके प्राणोंकी भूँखीने उस बातको मानली तब राजाने गंगाजीके जानेकी तैयारी की जब यह बात राजाके नौकर चाकर वा शहरके लोगोंने सुनी तौ सब लोग राजाके साथ हुए और राजाभी अपनी रानीको साथ लेकर गंगाजीको चला तब मुत्सद्दियोंने राजाको समझाया और कहने लगे कि, हे राजा ! जो आपका देह रहेगा तो सैकडों रानी आजायँगी आप ऐसे बुद्धिमान होकर स्त्रीके कहनेमें आकर नाहक अपनी जान खोतेहो इस तरह लोगोंने राजाको बहुत समझाया परंतु वह उस रानीके वशीभूत ऐसा होरहाथा कि लोगोंका समझाना उसके जीमें जरा न आया तब दीवानने जाकर रानीको समझाया कि हे रानी ! आपही इस हठको छोड दो तो राजाकी जान बचे

कदाचित् राजाने आपसे वह बात कही और राजा पत्थरका हो गया तो आप फिर इस राजाको कहां पाओगी और विना राजाके यह राज कैसे रहैगा राजाके मरतेही तुम्हारे वंशमेंसे जो गद्दी पर बैठेगा वह आपका इतना आदर काहेको करेगा क्योंकिं कहावतहै कि (घोटूं नवेंगे तो पेटको ही नवेंगे)सो हे रानी ! वह अपने घरवालोंको ही चाहेगा सो आप हमारी बात मानकर और अपने मनमें सब ऊंच नीच सोचकर इस हठको छोडदो देखो जिस स्त्रीनें हठाकियाहै उसीने दुःख पायाहै तब रानी बोली कि कौनसी स्त्रीने दुःख पायाहै सो मुझे एकका तो हाल सुनाओ तब दीवान कहने लगा कि हे रानी! माधवी नाम एक नगर था उसमें एक रूपसेन नाम वैश्य रहता था उसकी स्त्रीका नाम हेमाद्री था सो बडी स्वरूपवान थी और व्यभिचारिणीभी थी वह रूपसेन वैश्य उस स्त्रीको अत्यंत प्यारसे चाहताथा परंतु आप जानती हो कि जिनका जो स्वभाव पडजाताहै वह किसी ढबसे नहीं छूटताहै उस हेमाद्रीकी एक खत्रीके बेटेसे आंख लगगई जब रूपसेन अपनी दूकानको चला जाता तब वह उस खत्रीके लडकेके पास जाकर भोगविलास करती और जब रूपसेनके आनेका वक्त होता तब अपने घरमें आजाती थी इसी तरह भोगविलास करते करते कुछ दिन बीते तब एक दिन रूपसेनको यह हाल मालूम हुवा उसने हेमाद्रीको धमकाकर कहा कि तू इस खत्रीके यहां क्यों जाया करती है।तब उसने बेधडक होकर कहा कि मेरी और उस खत्रीकी दोस्ती है इससे मैं उसके पास जातीहूं तब रूपसेनने कहा कि खबरदार आजसे जो उसके पास गई आजसे मेराकहनामानकरउससेप्रीत छोडदे तब हेमाद्री बोली कि मैं आपको छोड दूंगी परंतु उस खत्रीको न छोडूंगी रूपसेनने उस ऊंच नीच कर बहुत समझाई परंतु हेमाद्रीने ऐसी हठ पकडी कि रूपसेनकी एक भी बात न मानी अन्तमें रूपसेनने लाचार होकर हेमाद्रीको अपने घरसे निकाल दी. तब अपने

यारके मकानपर पहुंची उसको देखकर खत्री बोला कि इस वक्त कैसे आईहो यह वक्त तो आपके आनेका नहीं है तब हेमाद्रीनें सब हाल कहा जिसको सुनकर वह खत्री बोला कि हेमाद्री अब मेरे भी कामकी नहीं है हेमाद्री बोली कि हे प्यारे ! ऐसा मैंने क्या कसूर किया? जिससे मैं तेरे कामकी नहीं रही. तब खत्रीने कहा कि जब तू अपने व्याहता पुरुषकी साथी न हुई तो मेरा साथ क्या देगी इससे मैं ऐसी निर्लज्ज स्त्रीसे प्रीति नहीं करता यह कहकर उस खत्रीने भी हेमाद्रीको निकाल दी. तब तो वह अपने मनमें अत्यन्त लज्जित हुई और इधर उधर मारी मारी फिरने लगी इसप्रकार कहकर दीवान बोला कि, हे रानी!जैसे हेमाद्रीने हठपर आनकर दुःख उठाया और पीछे पछताई इसी तरह आपभी इस हठके वश होकर दुःख पाओगी और पीछेपछताओगी इस बातको सुनकर रानी बोली कि मैं तो बिन पूछे नहीं जाऊंगी तब दीवान फिर बोला कि हेरानी ! हम फिर आपसे वारंवार कहतेहैं कि आप इस हठको छोड दीजिये नहीं तो जैसे हठके वश होकर रानी चन्द्रकान्ताने दुःख उठाया था उसी तरह तुमभी दुःख उठाओगी तब रानी बोली कि चन्द्रकान्तानें क्यों दुःख उठाया सो मुझसे कहो तब दीवान कहने लगा ॥

दास्तान चन्द्रकान्ताका।

दीवान बोला कि हे रानी ! एक सुरसेन नाम नगर था और वहांका राजा रूपदत्त कि जो बडा रूपवान् था और उसकी चन्द्रकान्ता नाम रानी अतिस्वरूपवती जोबनमें भरपूर आफतावके मानिंद थी. परंतु वह अपने पीहरमें विवाहसे पहिलेही व्यभिचारिणी होगई थी सो जब व्याह होकर अपने सासरे आई तो अपने यारको भी खोजाका रूप बनाकर अपने साथ ले आई जब राजा कचहरीको जाता तब वह अपने यारके साथ भोगविलास किया करती इसी-तरह रानीको भोगविलास यारके साथ करते करते बहुत दिन बीते

एक दिन यह हाल राजाको मालूम होगया तो राजाने रानीको बहुत समझाया कि, देखो आप ऐसा काम मत करो तब रानीने कहा कि मेरा दिल इसपर मुश्ताकहै सो आप चाहै सो करो परंतु मैं तो इसको न छोडूंगी तब राजाने उसे बहुत समझाया: परंतु वह अपनी हठपर ऐसी चढी कि राजाकी एक भी बात न मानी. तब राजाने उस रानीकी नाक और कान दोनों कटवाकर अपने महलसे निकाल दिया और उस खोजाको फांसी देदी तब विरूप होकर भूँख प्यासकी मारी दुःख पाने लगी और अपने मनमें बडी धिक्कार देने लगी कि हाय ! मैंनें बडा बुरा काम किया जो अपने पतिका कहना नहीं माना और इसीसे मेरी यह गति भई। दीवान कहने लगा कि हे रानी ! जो स्त्री किसीका कहा नहीं मानतीहै उसकी ऐसी ही गति होतीहै हम इसीसे आपको बारबार समझातेहैं कि आप इस हठको छोडदो क्योंकि ये राजाहैं इनके स्वभावका हाल मालूम नहीं होता इसीसे किसी कविने कहाहैः—

राजा जोगी अग्नि जल, इनकी उलटी रीत ।
बचते रहियो परसराम, यह थोडी पालें प्रीत ॥

हे रानी ! अभी तो ये राजा तुम्हारे बशमें हैं इससे अपनी हठ छोडकर राजाको लौटाले चलो जो कदाचित किसीके सिखानेसे राजाकी मति फिरगई तो आपके हक़में न जाने क्या हो-इस तरह दीवानने रानीको बहुत समझाया परतु रानीने अपने प्रारब्धबश हो एक न मानी तब लाचार हो दीवान वहांसे उठ गया और ज्यों त्यों कर रात काटी फिर प्रातःकाल होतेही राजानें कूच किया जब दोपहरका वक्त हुवा तब रास्तेमें एक नदी आई राजाने उसी नदीके किनारेपर डेरा कर दिया और आप स्नान करनेको उस नदीपर गया और स्नान करके नदीके किनारे पर बैठकर ईश्वरका स्मरण करने लगा कि इतनेमें एक बकरियोंका झुंड पानी पीनेको नदीपर आया सब

बकरियां पानी पी पीकर चली गईं केवल एक बकरी पानी पीती पीछे रहगई इतनेमें एक बहुत अच्छा फूल उस नदीमें बहताहुआ चलाआया उस फूलको देखकर बकरीकामन ललचाया और मनमें कहने लगी किं किसी तरह यह फूल मेरे खानेमें आवे तो अच्छाहै यह बात बिचारकर उसने बहुतेरा मुंह चलाया परंतु फूल हाथ न आया और वह वहीं खडी रहगई। जब बकरेने देखाकि सब बकरी तो आगईं परंतु एक बकरी नहीं आई वह उस बकरीके पास आ-या और बकरीसे कहने लगा कि सब बकरी तो चली गईं तू यहां क्यों खडीहै तब वह बकरी बोली कि जो तू मुझको उस फूलको लादे तो तेरे साथ चलूं और जो तू इस फूलको न लावेगा तो मैं तेरे साथ नहीं चलूंगी इस बातको सुनकर बकरेने कहा कि जो मैं इस फूल को लेने को गया और इसमें डूब गया तो कैसी होगी तब बकरी बोली कि हे बकरे! चाहे सो हो परंतु मैं विना इसफूलके लिये नहीं चलूंगी यह बात बकरीकी सुनकर बकरेको बडी गुस्सा आई और लाल लाल आखें कर उस राजाके सामनें खडा होकर यह वचन बोला कि हे बकरी! तू मुझको नहीं जानतीहै कि मैं राजा अंगध्वज सरीखा बेवकूफ मर्द नहीं हूं जो कि बसमें आनकर अपनी जान खोनेको गंगाकिनारेपर जाताहै यह कहकर बकरेने अपने सींगोंकी मार उस बकरीमें दी तब वह बकरी मारके डरके मारे बकरेके आगे आगे होली बकरेकी यहबात राजाके कलेजेमें बाणके समान लगी और उसके अंतःकरण में ज्ञान हुआ कि देखो हम इस बकरेसेभी हीनहैं जो इस रानीकी मोहब्बतमें आनकर सब राजपाट छोडकर अपनी जान गमानेको चलेहैं. हाय हमको हमारे दीवानोंने भी समझाया परंतु हम इस स्त्रीके मोहरूपी जालमें ऐसे फँसे कि इसके सबबसे हमने किसीकी बात न मानी और रानीके कहनेमें आनकर

हम अपने प्राण गमानेको यहां आये हमको इस बातकाभी ज्ञान न हुआ कि जिस रानीपर इतना प्यार करतेहैं वह हत्यारी हमारे प्राणोंहीकी भूँखी है देखो किसी कवीने कहा है सो ठीकहैः—

दोहा

जन्म कारन भई जननी, भोग कारन बालिका ।
पूजा कारण भई देवी, अंत कारण कालिका ॥

राजा अपने मनमें कहने लगा में बडा मूर्ख हूं मेरी इस बुद्धिको धिक्कारहै और स्त्रियोंको भी धिक्कारहै जो अपनी मीठी मीठी बाणियोंसे पुरुषको अधीन कर लेतीहैं और उन पुरुषोंको भी धिक्कारहै जो इन कपटकी कोथरी स्त्रियोंकी मोहरूपी बातोंमें आनकर अपना सरबस खोकर इनके अधीन होजातेहैं ये बातें बिचार राजा उस नदीसे उठकर अपने डेरेमें आया और सब दीवान मुत्सद्दियोंको बुलाकर अपने पास बिठालिया फिर रानीको बुलाकर कहा कि हे रानी! अब हम तेरे सामने उस बातको कहेंगे और हम पत्थरके होंगे अब तेरी क्या मरजीहै तब रानी बोली कि हे राजा ! चाहै सो हो परंतु मुझसे तो उस हालको कहदो तब राजा गुस्सेमें आनकर घोडेका चाबुक हाथमें लेकर रानीको मारने लगा पांच सात चाबुकोंके लगतेही रानीकी खाल उडने लगी तब रानी चिल्लाकर कहनेलगी कि हे राजा ! अब मैं इस बातको आपसे कभी नहीं पूछूंगी तब राजाने कहा कि अच्छा इस रानीको जल्लादोंके सुपुर्द करदो और उनसे कहदो कि इस रानीकी दोनों आंखें निकालकर किसी जंगलमें छोड आवें जल्लादोंने वैसाही किया और रानी अपने कियेकी सजाको पहुंची। तोता कहनेलगा कि हे मैना! भला औरतोंकी जातका क्या भरोसाहै भला मुझसे तू बिचारी औगुनोंकी पिटारी क्या जीत सकेगी ? तब मैंना बोली कि ऐ तोता !बहुत बढ़कर मत बोल देख मैं भी मरदोंकी बेवफाईका हाल तुझसे कहतीहूं तब तोता बोला

कि हे मैना ! अब हमको तुमको सवाल जवाब करते आज दूसरी रातभी बीतनेपर आचुकी और न जाने तू कितना बडा दास्तान कहेगी और मेरी आँखोंमें इस वख्त नींदकी खुमारी आतीहै इससे बेहतर यहहै कि अब तो चार घडी आराम करलें फिर कल रातके समय इसका तू जबाब देना यह बात कहकर तोता और मैना!अपनें२ स्थानोंपर सोरहे अब जो मैना जबाब देगी वह इस किताबके पांचवे भागमें लिखेंगे.

इति श्रीतोता मैना चौथाभाग सम्पूर्ण ।

अथ तोता मैना पांचवाँ भाग.

नवाँ दास्तान मैनाका ।

मैंना बोली कि, ऐ तोते ! इन्द्रप्रस्थ नाम करके हिंदुस्थानमें बडाभारी और शोभायमान एक शहर था उसमें चन्द्रगुप्त नाम राजा राज्य करता था उसके चार बेटे अति स्वरूपवान नौजवान विद्यामें निपुण धनुषबाणमें कुशल इन्द्रके समान तेजावाले थे. सो एक दिन वे चारों भाई अपने अपने घोडोंपर चढकर शिकार खेलनेको गये वहां जाकर एक हिरनके पीछे चारों भाईयोंने अपने अपने घोडे फेंके इन राजकुमारोंको आता देखकर हिरनभी जंगलकी तरफ भागा निदान इसी तरह भागते भागते बहुत दूर निकलगये आखिरको एक जंगलमें जाकर वह हिरन गायब होगया तब उन राजकुमारोंने बहुतेरा देखा परंतु कहीं भी उसका पता न लगा । लाचार होकर अपने अपने घोडोंको पेडोंसे बांध एक पेडके नीचे बैठगये एक तो रास्तेके थके हुए थे दूसरे जंगलकी ठंडी ठंडी हवा लगनेसे ऐसी नींद आई कि सब रात होश न हुआ. जब प्रातःकाल उठकर अपने अपने घोडोंपर सवार होकर चले तो परमेश्वरका करना ऐसा हुआ कि वे अपनें वतनका रास्ता भूलकर किसी और रास्तेको

चले गये और चलते चलते एक शहरके दरवाजेपर पहुँचे वहां देखते क्या हैं कि एक पनघटका कुआ बनाहै और उस पर बहुतसी स्त्री पानी भररहीहैं इनको भी प्यास अधिक लगरही थी सो एक राजकुमारने कूएपर जाकर एक स्त्रीसे कहा—

दोहा

हम परदेशी लोगहैं, दीजे नीर पिलाय ॥
प्यास अधिक हमको लगी, जीव रहा अकुलाय ॥

इतनी बातें राजकुमारकी सुनकर उस स्त्रीने जबाब दियाः—

दोहा

कूआको मुख सांकरो, नीचो नीर दिखाय ॥
भरते कटि तिरछी भई, सबरी देह पिराय ॥

स्त्रीका ये जबाब सुनकर राजकुमार कहनेलगाः—

दोहा

हम परदेशी पाउने, दूर हमारे देश ॥
प्यासेको जल प्यायदे, निरख आपनो भेष ॥

तब उन स्त्रियोंने देखा कि ये प्यासेहैं इनको जल जरूर पिलानाचाहिये यह बिचारकर अपना लोटा माँजकर चारों राजकुमारोंको पानी पिलाया तब वे राजकुमार वहांसे पानी पीकर आगे बढे तो एक शहर और नजर आया उस शहरके लोग जादूगार थे ये चारों राजकुमार उस शहरमें गये और चारों तरफ सैर करने लगे इसी तरह सैर करते करते जब शाम होगई तौ एक सरायमें पहुंचे वहां भटियारीके चार बेटियां अति स्वरूपवती थीं और उन चारों बेटियोंके न्यारे न्यारे मकान बने हुए थे सो जब वे राजकुमार सरायमें उतरे तो उस वक्त उस भटियारेकी छोटी बेटीने देखा और इनको देखकर अपने मनमें कहने लगी कि

आजतक ऐसे स्वरूपवान् पुरुष हमारी सरायमें कभी नहीं आये हो न हो ये तो कोई राजकुमार हैं यह बात मनमें विचारकर वह अपनी तीनों बहनों के पास गई और जाकर कहने लगी कि ऐ बहनों ! आज हमारी सरायमें चार मुसाफिर ऐसे आयेहैं कि उनके रूपकी तारीफ मुझसे कुछ नहीं होसक्ती तरुण अवस्था विशाल जिनके नेत्र चम्पाकासा रंग साक्षात् कामदेवके समान हमारे मनके हरनेवालेहैं ये बात छोटी बहनकी सुन वे तीनों भटियारेकी लडकियाँ राजकुमारोंको देखनेको सरायमें आईं और राजकुमारों को देखकर मोहित होगईं फिर अपने मकानमें जाकर आपसमें कहनेलगीं कि ये राजकुमार तो ऐश करने लायकहैं इनको जादूमें गिरफतारकरके एक एक चारों बहन बाँटलें और इनके साथ ऐश आरामकरें. क्योंकि दुनियामें आरामकी बराबर कोई चीज नहींहै. और हमारी इनकी जोडी भी परमेश्वरनेही मिलाईहै ये बात मनमें विचारकर भटियारेकी चारों बेटियोंने ऐसा जादू फेंका कि जब वे राजकुमार सबेरे उठकर चले तो जादूके जोरसे एक एक राजकुमार उन चारों बेटियोंके मकानमें यानी बडा राजकुमार तो बडीके घरमें चला गया और दूसरा दूसरीके घरमें तीसरा तीसरीके घरमें तथा छोटा चौथीके मकानमें चला गया-इसी तरह चारों राजकुमार भटियारेकी बेटियोंके घरमें चले गये तब उन्होंने जाते जातेही जादूके जोरमें मेंढा बकरा बना लिये परंतु भटियारेकी छोटीबेटीने छोटे राजकुमारको कुछ न बनाया और बडी प्रीतिके साथ रखने लगी और हर एक तरहसे ऐश व आराम करने लगी और उन तीनों लडकियोंका हाल यह रहै कि दिनमें तो राजकुमारोंको मेढ़ा बकरा बनाकर रक्खें और रातको मनुष्य बनाकररक्खें और अच्छे अच्छे भोजन करावें और उनके साथ रात भर ऐश करें इसी तरह ऐश आराम करते बहुत दिन बीतगये उस भटियारेकी छोटी बेटी और

छोटे राजकुमारमें ऐसी मोहब्बत बढी कि उस भटियारीको बिना देखे राजकुमारके एक पलभर चैन नहीं पडता था. एक दिनका जिक्रहै कि राजकुमारको अपने माता पिताओंको याद आई सो उनकी फिक्रमें सुस्त बैठा था कि भटियारेकी छोटी बेटीने देखा तो बहुत प्यारके साथ राजकुमारके गलेसे लिपटकर कहने लगी कि हे प्यारे! आज आप उदास क्यों हो ? आपकी उदासी देखकर मेरा दिल घबडाताहै सो आप अपने उदास होनेका हाल कहिये जहांतक मुझसे होसकेगा वहांतक मैं आपके सोच दूर करनेका उपाय करूंगी मैं तो आपका दिलोजानसे ताबेदार होचुकीहूं फिर आपको मुझसे किसी बातका छिपाव नहीं करना चाहिये, तब छोटा राजकुमार कहनेलगा कि हे प्राणप्यारी! मैं भी तुझे दिलोजानसे चाहताहूं और तेरी मोहब्बतने मुझे ऐसा गिरफतार कियाहै कि बिना तेरे देखे एकपल (वर्ष) समान कटताहै परंतु आज कुछ इसवक्त मेरा दिल अपने मावापोंकी तरफ चलागया तो मैंने अपने मनमें ये सोचा कि देखो हमारे मातापिताके हम चारही बेटेथे और हम चारोंही आपके फन्देमें फँसगये अब उनका न जाने क्या हाल होगा क्योंकि दुनियामें पुत्रके बराबर चीज प्यारी और कोई नहींहै और जिसमें भी इन तीनों भाइयोंकी तो शादी होगईहै सो इनकी रानियां महा दुखी होंगी इस बातका सोच मुझको इसवक्त आगया था सो हे प्राणप्यारी ! जो तुम मुझे दिलोजानसे चाहती हो तो ऐसा कोई उपाय करो कि मेरे भाई इस जालमेंसे निकलकर अपने वतनको चले जावें और अगर आपकी राजी हो तो आप और हम भी चलें. क्योंकि वहां आपके लायक हर एक तरह के ऐश वा आरामके सामान मौजूदहैं हमारी राजधानी इन्द्रप्रस्थमें है और एक यह भी बात है कि यहां तो आप भटियारी कहलातीहो और वहां चलकर रानी कहलाओगी इस बातको सुनकर भटियारी एक दफे तो चुप्प होगई फिर मनमें सोचने-

लेगी कि अब क्या उपाय करूं जो इस्के भाइयोंको निकालतीहूं तो मेरी बहनोंको दुःख होगा और जो नहीं निकलतीहूं तो मेरे प्यारे राजकुमारको सोच रहेगा. इस सबबसे न तोअच्छी तरह खाय पीवेगा और न अच्छीतरह बोलेगा और इसका रंज मुझसे हरगिज नहीं सहा जायगा इससे जो कुछ होनाहै सो होगा परंतु अपने प्यारेके भाइयोंको तो अपनी बहनोंके फन्देमें से निकालही दूंगी लेकिन सबसे पहिले मुझे इस राजकुमारके दिलकी बातभी जान लेनी चाहिये कि ये मुझे छोडकर चला तो न जायगा ये बात सोचकर राजकुमारसे कहनेलगी कि हे प्यारे! जो आपकी यही मरजीहैतो आपको चार गुटिका देतीहूं सो एक एक गुटका अपने अपने मुखमें रखकर चारों भाई यहांसे चले जाओ तुम पर कोई जादू नहीं चलेगा ये बात भटीयारीकी सुनकर राजकुमारने मनमें सोचा कि ये बात भटियारीने मेरी परीक्षा करनेके लिये कहीहै भला ऐसा कौनहै जो अपने आरामको अपने हाथसे जान बूझकर खोवेगा इसे अभी तो अपने भाइयोंके छुडानेका उपाय करना चाहिये अपने निकलनेकी फिर देखी जायगी क्योंकि मुझे किसी बातका दुःख नहीं है यानी खाना पीना ऐश अशरत का सब सामान मौजूदहै अभी तो मुझको इससे मोहब्बत बढानाही मुनासिबहै जल्दी करना अच्छा नहीं किसी कविने कहाहैः—

दोहा

धीरे धीरे मालिया, धीरे सब कुछ होय ॥
माली सींचे केवडा, ऋतु आये फल होय ॥
काज विषय धीरज धरे, सो कारज फलदाय ॥
जल्दी करनों काजमें, काजें देय नसाय ॥
सोच समझ लीजे हृदय, जब कुछ कीजे काज ॥
बिना बिचारे काजमें, आवत अति उर लाज ॥

इस प्रकार राजकुमार अपने मनमें सोचनेलगा फिर भटियारीसे बोला कि, हे प्राणप्यारी! मुझको चार गुटका लेनेसे क्या कामहै मुझको तो तीनों भाइयोंके वास्ते तीनही गुटका दे और मुझको गुटका दे तो मेरे साथ अपना चलना मंजूर कर.क्योंकिःबिना तेरे देखे मुझे एक पलभर भी चैन नहीं होगा.तब भटियारीने कहा कि मेरा चलना तो आपके साथ अभी नहीं होसक्ता, राजकुमार बोला कि आपके बिना मुझे जाना हरगिज मंजूर नहीं क्योंकि मैं तो दिलोजानसे तेरा तावेदार होचुका ये बात राजकुमारकी सुनकर भटियारीने अपने मनमें जान लिया कि ये राजकुमार तो मेरे ऊपर दिलोजानसे मुश्ताकहै और मुझे छोडकर कहीं नहीं जानेका है ये बात सोचकर अपनी संदूकसे तीनगुटका निकालकर राजकुमारको दिये और कहा कि ये तीनों गुटके लेजाकर एक एक तीनों भाइयोंको देदो वे अपने अपने मुखमें लेकर खांयगे तो किसीका जादू नहीं चलेगा और वे राजी खुशी अपने वतनको चले जायँगे तब राजकुमार बोला कि तैंने मेहरबानी करके गुटका तो मुझे दिये परंतु ये भी तो बतादे कि ये गुटिका उनको कैसे दूं क्योंकि वे तो दिनभर मेंढा बकरा हिरन बने रहतेहैं और घरमें तेरी बहन आठों प्रहर रहतीहैं उनके सामने गुटके कैसे दिये जाँय तब भटियारी कहने लगी कि आजसे आठ रोज पीछे दिवालीका दिनहै सो उस रोज तीसरे पहर हम सब देवीपर मंत्र सिद्धि करने जायँगी सो तुम उस वक्त उनके पास जाकर एक एक गुटका तीनोंके मुखमें रखदेना, गुटकाके रखतेही उनका सब जादू दूर होजायगा सो तुम उनको यहांसे रवाना करदेना ये बात भटियारीकी सुनकर राजकुमार बहुत खुशहुआ निदान कई रोजके बाद दिवालीका दिन आया और तीसरे पहरके वक्त वे भटियारी तो सब देवीपर गई और राजकुमार अपना मौका पाकर उनके घरमें गया और उन तीनोंके मुखमें एक एक गुटका रक्खा

गुटका रखतेही वे तीनों राजकुमार अपने असलीरूपमें आगये. तब छोटे राजकुमारने सब हाल उनसे कहा और कहनेलगा कि हेभाइयो! अब तुम यहांसे बहुत जल्दी चले जाओ ऐसा न हो कि कोई बला सिरपर आजावे. तब वे तीनों भाई कहनेलगे कि तुम भी तो हमारे साथ चलो तुम्हारे बिना हम माता पिताको कैसे मुँह दिखलावेंगे? छोटा राजकुमार बोला कि हे भाइयो ! आप तो इस फन्दसे निकल-कर जाओ ईश्वरने चाहा तो मैंभी जल्दी आऊंगा ये बात छोटे भाईकी सुनकर घरमें घुसकर अपने कपडे लत्ते और कुछ रास्तेके लिये खर्च ले वे तीनों राजकुमार वहांसे चलदिये थोडी देरके बाद जब भटि-यारी अपने अपने घरोंमें आईं और घरमें राजकुमारोंको न देखा तो अपने मनमें सोचनेलगीं कि ये क्या गजब हुआ जो यहांसे राज-कुमार गायब होगये एक दूसरीसे और दूसरी तीसरीसे आपसमें पूँछ नेलगीं जब कुछ न मालूम हुआ तो उन्होंने अपने अपने वीर उनको ढूंढकर पकड लानेको भेजे परंतु उन गुटकोंके जोरसे उनपर बीर जोर न करसके तब वे वीर भटियारियोंके पास आये और कहने लगे कि उन राजकुमारोंके मुखमें एक २ गुटका रक्खाहै इस सबबसे हमारा जोर न चलसका. यह बात वीरोंकी सुनकर भटियारी सोचने लगी कि चलकर देखों तो सही उस चौथीका राजकुमारभी गया या नहीं ये बात मनमें विचारकर वे तीनों भटियारी अपनी छो टी बहनके मकानमें गईं जाके देखा तो दोनों स्त्री पुरुष सार फांसे खेल रही हैं इस बातको देखकर उन तीनोंने अपने मनमें जान लि-या कि यह इसी हरामजादीका कामहै और उसे हर एक तरहकी गालियां देने लगीं और कहने लगीं कि अच्छा छिनाल तैंने इस भडुएकी मोहब्बतमें आनकर हमारे सुखमें फर्क डाला भला हमभी तो देखैं कि तू इसके साथ कैसी मौज उडाती है जिस दि-न हमारा दाँव लगगया उस दिन तुझे और इस भडुएको कच्चाही

खा जायँगी यह कहकर अपने अपने घरमें चली गईं और इधर भटियारेकी छोटीबेटीने राजकुमारसे कहा कि ऐ प्यारे ! मेरेकिये हुये करतब मेरी बहनोंने जानलिये हैं सो ये अब अपनी करनी में नहीं चूकेंगी जहांतक बनेगी वहांतक मेरे और तुम्हारे प्राण लेनेकी फिक्र करेंगी इसलिये आप एक गुटका मुखमें धर लीजिये जिससे आपके ऊपर जादूका जोर न चले मुझसे जो कुछ बीतेगी सो मैं देखलूंगी. मैना बोली कि ऐ तोते ! ये तो आपसमें बात करही रहेथे कि इतनेमें उन तीनोंने अपने बीर छोडे सो वे बीर बडे वेगसे उस छोटीके मकान पर आये उन बीरोंको आते देख इसनेभी अपने बीर छोडे दोनोंके बीर आपसमें लडनेलगे तब उन तीनों ने जादूके सांप बनाकर उसके ऊपर छोडे उसनेभी सांपोंको आते देखकर अपनेभी सांप छोडे तब वे सांपभी आपसमें लडने लगे. इसी तरह आपसमें दोनोंकी खूब जादूकी लडाई हुई जब इन तीनोंका जादूसे वश न चला तब वे तीनों भटियारी उस छोटीपर हमला करके लडनेको गईं और उसके सिरके बाल पकडकर मारने लगीं तब राजकुमारने उठकर मारे डंडोंके तीनोंकी हड्डी हड्डी तोड डाली और वे तीनों तोबा दैया मचाती हुई अपने घरको आईं उनको इसी तरह लडते झगडते कितनेक दिन गुजर गये आखिरको छोटी भटियारी मनमें दुःख पाकर एकरोज कहने लगी कि हे प्यारे ! मेरा और मेरी बहनोंका आपसमें बैर बँधगयाहै सो इसमें ऐसा न हो कि कोई धोखा खाकर मारे जाँय इससे बेहतर यहीहै कि इस शहरमें रहना नहीं चाहिये क्योंकि बडोंने कहाहै ॥

दोहा

जा नगरी बैरी बसे, ताहि त्याग कर देय ॥
जो बसिहै वा नगरमें, प्राण दान करदेय ॥

इससे हे प्यारे! अब आप अपने देशको चलो क्योंकि वहां न हमको देखेंगी और न जलेंगी यह सलाह दोनों करके रातको थोडा सा असबाब लेकर वहांसे चलदिये जब यह चलते चलते कई मंजिल निकल गये तो एक दिनका जिक्रहै कि एक शहरमें जाकर ठहरे रातको जब भटियारी सोगई तब राजकुमार अपने मनमें सोचने लगा कि अब परमेश्वरने मेरे भी निकलनेकी तजबीज करदीहै अब मुझको इसके फन्देमें न रहना चाहिये क्योंकि न समय न वारंवार, फिर वही कहावत होगी कि (औसर चूकी डोमनी गावे ताल बेताल) और जो मैं ये सोचूं कि इसे मैं साथही लेचलूं तो इसमें एक बडा भारी डरहै कि यह जादूगरनीहै इसको सैकडों जादू ही जादू यादहैं किसी समय दैवयोगसे इसके दिलमें फर्क आजाय तो मुझको उसी तरह मेढा या बकरा बनाकर अपने वतनको लेजायगी. क्योंकि अव्वल तो अच्छे मनुष्य स्त्रियोंका भरोसा नहीं करते जिसमें तो ये पूरी पूरी जादूसे भरी आठोंगाठ कुम्मैत है वही मसलहै कि "एकतो गिलोय दूसरे नीम चढी" इस समय तो मेरे पास इसका दियाहुआ गुटका मौजूदहै इससे इसका कोई जादू मुझपर कारगर न होगा और जो किसी समय ये गुटका मेरे पाससे जाता रहा या इसीने लेलिया तो फिर मुझसे कुछ न होगा इस लिये बेहतर यही है कि इसको कतल करके यहीं गाड जाऊं परन्तु इसने मेरे साथमें कई सलूक कियेहैं इससे इसको मारना तो नहीं चाहिये परन्तु इसे यहीं छोडकर अपने वतनको रवाना होजाऊं. यह बात अपने मनमें बिचारकर अपने कपडे लत्ते लेकर और उसे सोती छोडकर चलदिया. इतनी कथा कहकर मैना बोली कि ऐ तोता! देख राजकुमारके साथ उस भटियारीने कैसा सलूक किया कि अपनी जान और माल सब उसके सुपुर्द करदिया और सब घरवालोंकी दुश्मन भई फिर भी राजकुमारने ये नेकी की कि उस बिचारीका सब घरबार छुडा जंग

लमें अकेली छोडकर चलदिया जब वह भटियारी सोकर जागी तो अपने पास राजकुमारको न देख घबडाकर चारों तरफ देखनेलगी जब उसको इसी तरह उसकी इन्तजारीमें दोपहर गुजरगये और वह न आया तब तो वह अपने मनमें बहुत घबडाई और जान गई कि वह निरमोही मुझे छोडकर चलागया अब मैं क्या करूं और किधर जाऊं यह कहकर कदी बाहर और कदी भीतर बावलोंकी तरह इधर उधर फिरनेलगी देखना चाहिये इस मोहब्बतके जादूको कि वह भटियारी बडी अकलमन्द थी और हर एक जादूमें उस्ताद थी मगर राजकुमारकी मोहब्बतमें जादूको भूलगई और अपने कपडे जेवर आदि सब फेंककर तनमें खाक रमाकर जोगनका भेष बनाकर जंगलकी तरफ चलदी और मतवालोंकी तरह घूमनेलगी और कभी कभी राजकुमारकी यादकर यों पुकारने लगती थीः-

दोहा

चन्द्रवदन चम्पा वरन, मेरे चितके चोर ॥
कौन दिशामें छिपरहे, प्यारे तुम मुखमोर ॥ १॥
तेरे मुख देखे बिना, पडे न मोको चैन ॥
आले बनकी लाकडी, ज्यों सिलगत दिन रैन ॥ २ ॥
प्यासी हूं तेरे दरशकी, प्यारे राजकुमार ॥
आय दरश अब दीजिये, मेरी चूक बिसार ॥ ३ ॥

एक दिन इसतरह विरह भरा हुआ शब्द करती हुई जंगलको चली जाती थी कि आगे उसके एक फकीरका तकिया नजर आया जिसमें बहुतसे फकीर जमा थे वह उस तकियेके पास गई और सलाम करके बैठगई और आपकी सांस भरने लगी तब एक बूढा फकीर उसे देखकर बोला कि हे बच्चा! तू कौनहै और तुमपर ऐसी क्या मुसीबत पडीहै जिससे तेरी आंखोंसे पानी मानिन्द मेहके वरसताहै और तेरे दिलसे आहका शब्द निकलताहै सो अपना सब

हाल मुझसे कह. ये बात फकीरकी सुनकर भटियारी कहनेलगी कि ऐ फकीरसाहब! अपनी मुसीबतका हाल मैं आपसे क्या कहूं जो जो मुसीबत मेरे दिलपर बीतीहैं उनके कहनेमें मेरा कलेजा फटताहै मगर आपने पूछाहै तो आपके सामने कहतीहूं:-

बैत

मैं कहतीहूं सब हाल मेरा सुनो ॥
जरा ध्यान धर हाल मेरा सुनो ॥
मेरा यार मुझसे बिछुड यहां गया ॥
कहूं ब्यान अव्वलसे मेरा सुनो ॥ १ ॥
जुदाईकी मारी तडफती फिरूं ॥
ये किस्सातो भारीहै मेरा सुनो ॥
नथी मुझको मालूम इस रंजकी ॥
जो बीता है दिलमें वो मेरा सुनो ॥ २ ॥

इसप्रकार अव्वलसे आखिरतक अपना सबहाल फकीरके सामने कहा तब फकीर बोला कि बच्चा तू सोच तो सही कि इस दुनियामें कौन किसीका दोस्त और कौन किसीका दुश्मनहै सब झूंठा झगडाहै दुनिया मोहमें फँसकर सब भूल रहीहै ऐ बच्चा! मेरा कहा मानकर इस झूंठे ख्यालको छोडकर खुदाकी यादकर और उसके सिवाय एक औरभी बातहै कि तू कहती है कि मेरा दोस्त राजकुमार मुझे छोडकर चला गया सो तू नहीं जानतीहै कि राजा लोग किसके मित्र होतेहैं इनपर विश्वास करना झूठा है किसी कवीने कहाहै:-

दोहा

राजा जोगी अग्नि जल, इनकी उलटी रीति ॥
बचते रहियो जगतमें, इनके थोडी प्रीति ॥

देख तेरे सामने एक राजाका हाल कहताहूं तू सुन एक धर्मपूरनाम नगर था उसमें खड्गसेन राजा राज करता था सो उसके यहां

तिन्दुक नाम नौकर था वह नौकर राजाको ऐसा मन चढा कि राजाने उसे कुल राजका मालिक करदिया और जब राजा भोजन करता तब उसको अपने पास बिठालेताथा इसी तरह बहुत दिन गुजर गये एक दिनका जिक्रहै कि राजाने कहा कि हे तिन्दुक ! इस वक्त हमारा जी चाहताहै कि तुम चलो तो हवाखानेको चलें उस वक्त तिन्दुक बोला कि महाराज ! आज मुझको राजकाज बहुत करनाहै इससे मेरा चलना नहींहै अगर आपका दिलहै तो आप जाइये इस बातको सुनकर राजा बहुत गुस्सा भया और मनमें कहनेलगा कि इस नौकरको बडा अभिमान होगयाहै जो इसने हमारा हुकम टाल दिया इस बातको सोचकर हुकम दिया कि इसका घरबार जप्त करलो और इसके हाथ पांव और मुंह काला करके गधेपर चढाकर शहरसे बाहर निकालदो राजाका हुकम सुनकर नौकरोंने वैसाही किया सो हे बच्चा ! उसमें उस बिचारे नौकरका क्या कुसूर था जिसपर राजाने उसकी ऐसी गति की इसीसे अच्छे मनुष्य राजासे प्रीति नहीं रखते इससे मेरा कहना मानकर राजकुमारकी मोहब्बतको छोडकर अपने घरको जाओ और इस झगडेमें पडकर अपनी जिन्दगी बरबाद मत करो, मैना बोली कि ऐ तोते ! उस फकीरने भटियारीको बहुत समझाया मगर उसके दिलमें एक भी न आई लाचार होकर फकीर चुप्प होगया सचहै कि जिसके बदनमें इश्ककी आग लगीहै उसे पानी डालनेसे कब आराम होताहै क्योंकि यह वह आगहै जिसका धूंआ बाहर नहीं निकलताहै और दिनरात कलेजापर सिलगतीहै इसीसे किसीने कहाहैः—

दोहा

जा तनमें लागी अधिक, कठिन इश्ककी मार ॥
वह दुख वोही जानता, जात न होगी पार ॥ १ ॥
लागी लागी सब कहें, लागी बुरी बलाय ॥

लागी जबही जानिये, आर पार होजाय ॥ २ ॥
इश्क आग तनमें लगी, धुँआ न परगट होय ॥
याको दुख वो जानिहै, जिस तन लागी होय ॥ ३ ॥

मैना बोली ऐ तोते! वह भटियारी राजकुमारके इश्कमें सर सा-रहो उस फकीरके पाससे उठकर आगेको चली और आह भरकर शेर पढने लगीः—

शैर

न जानाथा मैंने, इश्के जंजाल ॥
लगा दुख देने ये, मुझको कमाल ॥
अरे इश्क जालिम, तू लाया कहां ॥
न देता दिखाई, अपना जहां ॥
छूटा ऐश आराम, और मुझसे घर ॥
दिखाये ये दुखडा, मुझे सरवसर ॥
कहां तनपै पहनेथी, सुन्दर लिवास ॥
कहां अब रमाई है, तनपे ये खाक ॥
न कीजो कोई इश्क, दुखदाई है ॥
फँसे इसमें आके, वो सो दाई है ॥
कहां सोना सेजों पर, गलेसे लिपट ॥
पडेहैं अब जंगलमें, एक लग सिमट ॥

ये शैर गाती हुई चली जातीथी सो जब शामका वक्त होगया तो एक पेडके नीचे बैठ गई और राजकुमारकी याद करते ये रेखता पढने लगी ॥

शेर

प्रिया तेरी यादगारीमें तडफ, जी निकला जाताहै ॥
फिरूं जंगलमें बन योगन, न घर मुझको सुहाताहै ॥
पिया बिन आह भर भरके, चश्म नाले बहाताहै ॥

कहां देखूं सितमगरको, नहीं कोई बताताहै ॥
बने नहिं कुछ जतन मुझसे, मदन हरदम लजाताहै ॥
महीना सीतका जालिम, जुल्म जाडा मचाताहै ॥
मगर मेरे विरहकी आगसे, वह भाग जाताहै ॥
न कोई ऐसा है रंगी, जो प्यारेसे मिलाताहै ॥

इस तरह रो रो कर रात गमाई सुबह होतेही फिर वहांसे चली निदान इसी तरह हरएक मुसीबत उठाती हुई राजकुमारके शहरमें पहुँची और लोगोंसे उस्का हाल दर्याफ्त किया कि छोटा राजकुमार कहां रहताहै तब किसी मनुष्यने कहा कि बहुत दिनसे गायब हो-गयेथे सो अभी पांच सात दिन हुये अभी आये हैं सो अपने महलमें रहतेहैं और शामके वक्त हवा खानेको केसरबागमें नित्य जातेहैं, तब भटियारीने उनसे कहा कि केशर बाग किधरहै ? लोगोंने पता बतला दिया, वह भटियारी केशर बागके दरवाजेपर जाबैठी और राजकुमा-रके आनेका इन्तजार देखने लगी और अपने मनमें खुश होतीथी कि आज मैं अपने प्यारेको देखूंगी और सारा हाल पूछूंगी कि क्यों मुझको अकेली छोडकर चले आये इसी तरहके मनोरथ कररहीथी कि इतनेमें राजकुमारकी सवारीभी आन पहुँची उसवक्त भटियारी राजकुमारसे कहने लगी कि हे प्राणप्यारे ! ऐसा कठोर दिल क्यों किया जो मुझे सोती छोडकर चले आये देखो आपकी जुदाईने मेरी यह सूरत बनाईहै और ये दासी बडी मुसीबतें उठाकर आपकी खिदमतमें आई है ये बात भटियारीकी सुनकर और उसकी सूरत देखकर राजकुमार मनमें डरगया और सोचनेलगा कि बडा गजब हुआ जो ये हरामजादी यहां आगई अब ये बिना बदला लिये कब मानेगी इससे इसको गिरफ्तार करादो सुबह जैसा होगा वैसा देखा जायगा ये बात मनमें सोच सिपाहियोंको हुक्म दिया कि इस जोग-नको गिरफ्तार करलो और सुबह कचहरीमें हाजिर करना यह सुन

कर चपरासियोंने उसे पकड लिया तब भटियारी बहुत पुकारी परंतु राजकुमारने एक भी न सुनी चपरासी उसे लेगये सुबह होतेही राजकुमारने दरबार किया और उस भटियारीको बुलाया तब उस भटियारीका कुल हाल राजकुमारने दीवानोंके सामने कहा और ये कहा कि इसको क्या सजा देनी चाहिये? तब दीवानोंने कहा कि आपके प्रश्नोंका उत्तर जैसा हमनें सुनाहै और राजनीतिमें देखाहै वैसा हम कहतेहैं "एक विराटदेशका राजा था उसके पास एक जोगी रहताथा सो वह जोगी सब शास्त्रोंमें बडा प्रवीन था और जादूभी खूब जानताथा सो एकदिन राजाको बडे दूरदराज शहरको जानाथा उस शहरका आठ दिनका रास्ताथा और राजाको वहाँ सुबह जरूर पहुँचनाथा इस बातके सोचमें राजा बैठाथा कि, इतनेमें वह जोगी आगया राजाको सुस्त देखकर कहनेलगा कि आज आप उदास क्यों बैठेहो जब राजाने सब हाल कहा तब वह योगी बोला कि आप इतना फिकर क्यों करतेहो आज मैं अपना करतब आपको दिखाऊंगा और रातहीमें आपको उस शहरमें पहुंचाऊंगा जब आधी रात हुई तब जोगीने अपने बीरोंको याद किया उसी वक्त वे बीर हाजिर हुए उनसे जोगीनें कहा कि "तुम राजाको फलाँ शहरमें लेजाओ और जब महाराज हुक्मदें तब ले आना" यह बात सुनकर बीरोंनें राजाका सिंहासन उठाकर एक पहरके बी-चमें उस शहरमें पहुँचादिया और फिर दूसरे दिन उसको अपने शहरमें ला बैठाया इस बातको देख राजाने अपने मनमें बिचारा कि ये जोगी तो बडा जादूगरहै इसके पास रहना अच्छा नहीं क्यों-कि जो कदापि मेरी इसकी बिगडगई तो यह ऐसेही मुझको उडा लेजायगा ये बात मनमें बिचारकर उसको फांसी देदी" सो हे राज-कुमार! हमारी रायमें तो इस्को भी यही सजा देनी चाहिये क्योंकि अभी तो तुम्हारा और इसका प्यारहै और जो कभी आपकी और

इसकी बिगडगई तो ये आपकी जानकी दुश्मन होजायगी जैसा हमारे समझमें आया वैसा अर्ज किया आगे आप मालिकहैं यह बात दीवानोंकी सुनकर राजकुमारने भटियारीको फांसी दिलवादी मैंना ! बोली कि ऐ तोते ! राजकुमारके साथ भटियारीने कैसी नेकी कीथी और राजकुमारने कैसा फल दिखाया भला जब मैं ऐसी ऐसी बातें मर्दोंकी जानतीहूं तो मर्दोंका कब विश्वास करने लगी ! तब तोता बोला कि इस बातमें मर्दकी वेसुरब्बती नहींहै क्योंकि जो स्त्री आदमीको जानवर बनाले उनका मनुष्यके मारनेमें क्या ताज्जुबहै ऐसी स्त्रीको मार डालनाही राजोंका धर्म्महै और ये दास्तान तो मेरे कहने लायकथा जो तैंनें कहा, मैं जानताहूं कि तुझको अब स्त्रीका दास्तान याद नहींहै देख एक ब्राह्मणका दास्तान कहताहूं तू चित्त लगाकर सुन ॥

दशवा दास्तान तोतेका ।

एक उज्जैन नगरी नाम बडा शहर था और वहांके राजाका नाम विक्रमथा सो वह राजा बडा धर्मात्मा सत्यवादी और परोपकारीथा उसके राज्यमें कोई भूँखा दरिद्री न था और उस राजाके एक ब्राह्मण नौकर था वह राजा ब्राह्मणसे कभी नौकरी नहीं लेताथा हमेशा घर बैठेही तनख्वाह देताथा उस ब्राह्मणकी स्त्री बडी सुशील और पति-व्रताथी जब उस ब्राह्मणको राजाकी तनख्वाह खाते खाते बुढापा आ गया तब एक दिन वह ब्राह्मण अपनी स्त्रीसे बोला कि देखो हमको राजाका धन खाते खाते इतने दिन भये और राजाने हमसे कोई नौकरी न ली इस भारसे हम कैसे उऋण होंगे यह बात मनमें बिचार वह ब्राह्मण राजाके पास गया और कहनेलगा कि हे राजा ! तेरी नौ-करी खाते खाते हमको बहुत वर्ष बीते और तुमने हमसे आजतक कोई नौकरीका काम नहीं लिया सो हम तेरे ऋणसे कब उऋण होंगे इससे मेरी यह इच्छा है कि आप एक दिन भी मुझसे नौकरी

लेले तो आपके ऋणसे निवृत्त होजाऊं. यह बात ब्राह्मणकी सुनकर राजा कहनेलगा कि हे महाराज ! मेरी यह प्रतिज्ञा है कि मैं ब्राह्मणसे नौकरी नहीं करवाता और जो आपकी यही इच्छा है तो आप मेरे कहनेसे गंगा स्नानकर आओ और एक छोटीसी शीशी गंगाजलकी मेरे लिये लेते आना यही आपके लिये नौकरी है यह वचन सुनकर ब्राह्मण अत्यन्त खुश होकर अपने घरको आया और सब हाल अपनी स्त्रीसे कहा तब अपने पतिके वचन सुनके ब्राह्मणी बोली कि, हे स्वामी ! जो आप गंगाजीको जाओगे तो मैं आपके पीछे अन्नजल कैसे करूंगी क्योंकि मेरे तो यह नियमहै कि बिना आपके दर्शन किये मैं अन्नजल नहीं करती तब ब्राह्मण बोला कि मैं अपनी मूर्ति तेरे घरकी भीतमें लिखे जाताहूं सो तू उसके दर्शन करके सब काम कर लीजो. यह सुन ब्राह्मणीने कहा बहुत अच्छी बातहै तब ब्राह्मणने अपनी मूर्ति लिखदी और आप डोर लोटा लेकर राजाके पास गया और राजाके सामने कहने लगा कि हे राजा! मैं गंगास्नान करनेको जाताहूं आप मेरी ब्राह्मणीकी खबर लेते रहना वह आपकी सशरणहै राजा बोला कि आप किसी बातकी चिन्ता मत करें यह कहकर और कुछ खर्च देकर उस ब्राह्मणको बिदा किया सो वह ब्राह्मण तो गंगाजीको गया और राजा विक्रमका यह हालरहै कि दिनभरमें एक दफे नित्य उस ब्राह्मणके घर आना इसीतरह कई दिन बीतगये कि एक दिन उस ब्राह्मणीके पडोसमें आग लगी सो मनुष्योंने बहुत बुझाई परंतु न बुझी और यहांतक लगी कि उस ब्राह्मणीके घरमें भी आन लगी वह ब्राह्मणी अपने घरमें आग लगी देख हाथ जोड अपने पतिकी मूर्तिसे कहने लगी कि हे स्वामी ! आपके घरमें आग लगी है सो आप बाहर चलो इस तरह उस ब्राह्मणीने कई दफे कहा परंतु वह भीतमें लिखा चित्र कैसे बाहर आसक्ता था इतनेही में आग घरके भीतर आन लगी तब वह ब्राह्मणी चित्र पर

छाती देकर खडी होगई और उसी जगह जलगई थोडी देर पीछे राजा वहां आया और उस ब्राह्मणीको मरी देखकर अपने मनमें सोचने लगा कि बडा गजब हुआ जो ये ब्राह्मणी मरगई अब वह ब्राह्मण मुझसे पूछेगा तो मैं क्या जबाब दूंगा इसतरह सोच करताथा कि इतनेमें वह ब्राह्मणभी गंगाजी न्हायकर घरको आया और घरमें आग लगी देखकर और अपनी ब्राह्मणीको जली देख आग बबूला होगया और कहने लगा कि राजा लोग बडे अभिमानी होतेहैं देखो मैं चलती दफै कहगया था कि राजा मेरी ब्राह्मणीकी खबर लेते रहना सो इस राजाने राजके अभिमानमें आकर मेरी ब्राह्मणी की खबर नहीं ली इससे इस राजाको शाप दूंगा ये बात मनमें बिचार राजाके पास गया और बडी गुस्सासे कहनेलगा कि हे राजा! मेरी ब्राह्मणी कहां है! तब राजाने सब हाल कहा परंतु ब्राह्मणने एक न मानी राजा बोला कि हे ब्राह्मण! आपके वास्ते ब्राह्मणकी कन्या वि- वाह दूंगा इस बात पर भी ब्राह्मण राजी न हुआ तब राजाने कहा कि अच्छा आप एक काम कीजिये कि अपनी ब्राह्मणीकी ल्हाशको एक महिना तेलमें रखिये मैं आपकी स्त्रीके जिलानेकी तदबीरमें जाताहूं ब्राह्मणने वैसाही किया और राजा विक्रमाजीत भी अपना रा- जकाज मंत्रियोंको सौंपकर अमृतकी तलाशमें चला कई दिनके बाद राजा एक गांवमें पहुँचा वहां रस्तेके सहारे एक ठाकुरका मकानथा और उस मकानके दरवाजे पर एक चौतरा था उपसर एक छप्पर पडाथा सो राजा विक्रमाजीत गर्मीका मारा हुआ और रास्तेका हारा हुआ तो थाही उस चौतरे पर छाया देखकर बैठगया उस मका नमें एक डोकरी और उस्के बेटेकी बहू रहतीथी उस डोकरीका बेटा बहुत दिनोंसे निकल गया था इतनेहीमें उस डोकरीके बेटाकी बहू किसी कामके वास्ते घरसे बाहर आई और राजाको बैठा देखकर मनमें सोचने लगी कि हो न हो मेरा पति यही है क्योंकि इसकी

सुरत एकसी हीहै यह बात मनमें बिचारकर भीतर गई और साससे कहने लगी कि मुझको तो ऐसा मालूम होताहै कि आज द्वारपर तुम्हारा बेटा बैठाहै यह बात बहूकी सुनकर डोकरी दौडकर दरवाजे पर आई और अपने बेटेकी सूरतके राजकुमारको देखकर गलेसे लिपट गई और कहने लगी कि अरे बेटा ! तू इतने दिनोंसे कहांथा देख-तेरी याद कर कर मेरी यह गति होगई है और तैनें मेरी खबर आजतक नहीं ली ये बात डोकरीकी सुनकर राजा अपने मनमें घबडाने लगा और सोचने लगा कि हे ईश्वर ! यह क्या बला सिरपर आई फिर राजा मनमें हिम्मत बांधकर डोकरीसे कहने लगा कि हे डोकरी ! मैं तेरा बेटा नहीं हूं पर तू अपने बेटाका सब हाल कहदे मैं तेरे पुत्रको तुमसे मिलादूंगा ये बात राजाकी सुनकर डोकरी कहनेलगी कि हे बेटा ! मेरा पुत्र बारह वर्षकी उम्रमें अपना व्याह करके चलागयाहै सो आज वीस वर्ष होने आये और उसकी बहू बिचारी उसके फिकरमें सूख सूख कर पीली पडगईहै तब राजा बोला कि तुमको उस्का कुछ पताभी मालूमहै कि वह कहां है तब डोकरीने कहा कि मैंने कई आदमियोंके मुखसे सुनाहै कि दक्षिण दिशामें एक वीरसेन राजाहै वह सवा मन सोना नित्य पुण्य करताहै उसी राजाके पलंग पर मेरा बेटा नौकरहै और दुर्जन उसका नामहै ये बात डोकरीकी सुनकर राजाने कहा कि माता ! अब तू किसी बातकी चिन्ता मत कर ईश्वर चाहेगा तो तेरा बेटा तुझसे बहुत जल्द मिलेगा यह बात कह राजा वहांसे चला जब रात भई तब राजाने वीरोंको यादकिया तब वे दोनों बीर आनकर हाजिर भये राजाने वीरोंसे कहा कि मुझे राजा वीरसेनके देशमें पहुंचादो यह बात सुनकर वीरोंने राजाको अपने कंधे पर बिठाकर एक पहरमें उस शहरके दरवाजे पर जा पहुंचाया और आप राजासे विदा होकर चले आये. फिर विक्रमाजीत पूछते पूछते राजा वीरसेनके दरवाजे पर पहुंचे

वहां जाकर ड्योढीवानसे कहा कि आप दुर्जनसे कहदो कि तुम्हारे गांवसे एक बिक्रमनाम आदमी आयाहै सो आपको याद करताहै ये बात ड्योढीवानकी सुनकर दुर्जन बाहर आया और विक्रमाजीतको अपने गांवका जानकर मिला और अपने डेरेमें लिवागया तब राजाने कहा कि हे भाई ! तुमको ऐसी न चाहिये थी कि जबसे तुम आये हो तबसे घरकी सूरत तक नहीं देखी और तुम्हारे रंजमें तुम्हारी माता और बहू रो रोकर दिन गुजारतीहैं अब आपको मुनासिबहै कि जैसे बनै तैसे उन्हें अपनी सूरत दिखा आओ इस बातको सुनकर दुर्जन कहनेलगा कि भाई मैं क्या करूं मैं परवशहूं न तो महाराज मुझे सीख देतेहैं न इस्तेफा लेतेहैं अब किस तरहसे मेरा जाना बने तब विक्रमने कहा कि आपके बदले राजाकी नोकरी हम करेंगे आप राजासे कहो कि मेरे बदले मेरा भाई नौकरी देगा और मुझे रुखसत दीजिये यह बात विक्रमाजीतकी सुनकर दुर्जन राजाके पास गया और मौका पाकर अर्जकरी कि महाराज ! मेरे घरसे मेराभाई आयाहै सो वह कहताहै कि तेरी एवजी महाराजकी नोकरी मैं बजाऊंगा और तू महाराजसे रुखसत लेकर घर होआ तब राजा वीरसेनने कहा कि अच्छा उसको अपनी नौकरी पर नियत करके तुम एक महिनेके वास्ते अपने घर हो आओ यह बात सुन राजा वीर विक्रमाजीतको अपनी नौकरी पर कर आप राजासे बिदा हो अपने घरको गया और राजा वीर विक्रमाजीत राजा वीरसेनके पलंगकी नौकरी देने लगा सो तोता बोला कि ऐ मैंना! देख दुनियामें कैसे कैसे साहसी मर्द हैं और दयावान हैं कि आप महाराज होकर दूसरेके दुःखको दूर करनेके लिये वीरसेनकी ताबेदारी की और राजा वीरसेनका यह दस्तूर था कि आधीरातके वक्त शहरके बाहर एकदेवीका मंदिर था वहां आता था और वह देवी वीरसेनको पकडकर तेलके औंटतेहुए कढावमें पटक देती वीरसेन उसमें भुनजाता जब उसे

निकालकर वह देवी खाजाती और उसकी हड्डियोंको इकट्ठा करके अमृत छिडक देती तब राजा जग उठता था और फिर देवी अपने अक्षय झझरको हिलाकर सवामन सोना राजाको देतीथी तब राजा प्रातःकाल दान चौतरापर बैठकर ब्राह्मणको दान देता था. एकदिन राजा विक्रमने मनमें सोच किया कि राजा सोना कहाँसे लाया करताहै इसका भेद जरूर जानना चाहिये ये बात मनमें बिचारकर जब रातको राजा वीरसेन देवीपर चला तो पीछे पीछे राजा विक्रमभी चले गये औ अलग छिपगये और राजाका कुल्ह हाल देखकर राजासे पहिले अपने स्थानपर आगये और मनमें सोचनेलगे कि राजा बडे कष्टसे सोना लाताहै किसी ढबसे इसका दुःख दूर करना चाहिये ये बात मनमें बिचारकर विक्रमाजीतनें एक आदमीसे तरह तरहकी मेवा आदि अतर सुगंधित बस्तु मँगाय और जिन मसालोंसे मांस स्वादिष्ठ होजाय वे मसालेभी मँगाये फिर अपने शरीरको चाकूसे चीर चीरकर बदनमें वे मशाले भरे जब रातको वही आधी रातका समय भया तब विक्रमाजीतने अपने वीरोंको याद किया तब उसवक्त वे वीर हाजिर हुए विक्रमाजीतने वीरोंसे कहा कि जब तक मैं न आऊँ तबतक तुम इसे ऐसा दाबे रहना कि इसको चेत न हो ये वचन राजा विक्रमके सुनकर वीरोंने कहा बहुत अच्छा फिर विक्रमाजीत उसी देवीके मन्दिर पर पहुँचा देवीने पकडकर राजाको उसी कढावमें डाल दिया जब राजा भूनगया तब उस देवीने राजाको निकाल कर खाया तो उसे रोज मेवा और मसालोंके सबबसे राजाके मांसमें ऐसा स्वाद होगया कि जिस्की तारीफ नहीं होसक्ती देवी उस मांसको खाकर बहुत प्रसन्न भई और अपने मनमें कहने लगी कि आज इस राजाने मुझे बहुत प्रसन्नकिया सो आज जो माँगेगा सो दूंगी इस प्रकार देवी प्रसन्न होकर राजाके मांसको रुचि कर खाने लगी जब सब मांस खा चुकी तब उसकी हड्डियां इकट्ठी

कर उनपर घडेसे ले मृत छिडक दिया तब राजा जी उठा और देवी राजासे कहने लगी कि राजा ! तैनें आज मुझको बडी प्रसन्नकी है अब मैं तुझपर बहुत राजीहूं जो तुझे चाहिये सो मांगले. तब राजा विक्रमने कहा जो आप मुझको वरदेतीहो तो मुझको वचन दो तब उस देवीने राजाको तीन वचन दिये और राजाने कहा कि एक बचनमें तो मुझको अमृतका पात्र दो और दूसरे बचनमें अपना अक्षय झझर दो दोनों देदिये और आप भी सब कढावोंका औंधाय कर चल दीनी तीसरे वचनमें राजाने यह समझा कि इसका अमृत और झझर तो मैंने लेलिया और कदापि राजा वीरसेन यहां आया और उस्को नित्यकी तरह भून खाया तो फिर कहांसे जिलावेगी तो राजाकी नाहक जान जायगी इससे उत्तम यह है कि इसको यहांसे भगानाही मुनासिबहै क्योंकि नतो यहां रहैगी और न राजाकी जानका डर रहेगा सो जब वह देवी वहांसे चली गई तब राजा उन दोनों चीजोंको लेकर वहीं राजाके पलंगके पास आ बैठा इतनेमें आधी रात पर तीन बज गये तब विक्रमादित्यने अपने वीरोंको हटाया सो वीरसेनकी आंख खुली तो फडफडाकर उठकर देवीके मंदिरको दौडा गया वहां जाकर देखा तो मंदिरमें कोई नहीं है और कढाव सब औंधे पडेहैं इस हालको देख राजा बहुत घबडाय और सोचने लगा कि आज हम सोना कहाँसे दान करेंगे हमारी आज बडी बदनामी होगी लोग कहेंगे कि राजाके खजानेमें धन नहीं रहा होगा और कोई कहेगा कि राजा सूम होगया इस तरहसे सोच करते करते अपने महलोंमें आया और पलंग पर सुस्त हो पड रहा मारे फिकरके इसी सोच फिकरमें नींद नहीं आई सो सोचते सोचते प्रातःकाल होगया और सूत मागध बन्दीजन बोलने लगे और द्वार पर आनकर भिक्षुक लोग पुकारने लगे कि हे महाराज ! पुण्यकाल हो आयाहै आप दानचौतरापर विराजिये और दान

हमको दीजिये भिक्षुक लोगोंकी आवाज सुनकर राजाको अत्यंत सोच होता था तब राजाको सोचसमुद्रमें डूबा देख हाथ जोड राजा विक्रम बोला कि हे स्वामी ! आप आज सुस्त क्यों हो आज आप स्नान दान नहीं करते इसका क्या सबबहै तब बीरसेन बोला कि भाई अपने सोच विचारका हाल तुझसे क्या कहूं जो कुछ मेरे दिलपै बीती है वो मेरा दिल जानता है किसीके सामने कहनेसे क्या होगा तब विक्रमादित्यने कहा कि महाराज ! हम आपके नौकरहैं सो सुख दुःखके संगीहैं जहांतक हो सकेगा वहांतक आपका सोच दूर करनेका उपाय करूंगा तब बीरसेन बोला कि, हे विक्रम ! मेरे सोच करनेकी ये बातहै कि हमारे शहरके बाहर एक देवीका मंदिर था सो उस देवीके पास आधी रातके समय नित्य जाता था वह देवी मुझे औटते तेलके कढावमें डाल देतीथी और जब मैं उसमें भुन जाता था तब वह निकाल कर मुझको खा जाती थी और फिर मेरी हड्डि-योंको इकट्ठी करके उसके पास अमृतपात्र था सो उसमेंसे अमृत लेकर मुझपर छिडक देतीथी जब मैं जी उठता था तब वह अक्षय झझरको हिलाकर सवामन सोना मुझे देती तब मैं उस सोनेको लाकर अतिथि और ब्राह्मणोंको दान करता था इसी कारणसे मेरे नग रमें कोई भूँखा नहीं रहताथा आज दैवगतिसे वह देवी न जाने कहाँ चली गई सो अब मैं उसी सोचमें बैठाहूं कि आज मैं सोना कहांसे लाकर पुण्य करूंगा और ये ब्राह्मण द्वारसे निरमुख जायँगे तो कैसा अपराध लगैगा. तब राजा विक्रम कहने लगा कि हे स्वामी ! इस छो-टीसी बातका क्या सोच करतेहो आप स्नान करिये परमेश्वर सब भला करैगा ये बात सुनकर बीरसेन संतोषकर उठे और स्नान ध्यान करके निवृत्त हुए तब विक्रमने वह अक्षय झझर राजाको देकर कहा कि हे स्वामी ! पहिले तो आप ऐसा कष्ट भोगकर सोना लातेथे अब

आप सहजमें ही इसमेंसे सोना लेकर दान किया करो ये. बात विक्रमादित्यकी सुनकर और उस झझरको देखकर वीरसेन बोला कि ये झझर आपके हाथ कहांसे लगा तब विक्रमादित्यने सब हाल कहा तब वीरसेन बोला कि हे विक्रम ! तूं सच कह दे कि तू कौनहै ? तब बोला कि हे राजा ! मैं उज्जैन नगरीका राजा विक्रमादित्यहूं और मैं एक ब्राह्मणके वास्ते अमृत लेने आया हूं सो यहां दोनों काम होगये कि आपको तो सोना मिलगया और मुझको अमृत मिल गया अब आप मुझको आज्ञा दो जो मैं अपने शहरको जाऊं यह सुन वीरसेन विक्रमके चरणोंमें गिरपडा और हाथ जोड कहने लगा कि धन्य आपके साहसको है जैसा मैंने सुनाहै वैसेही आपहो आपने मेरे ऊपर बडी कृपा की जो दर्शन दिये और मेरे कष्ट निवारण किये इस तरह वीरसेनने विनती करके विक्रमादित्यको बिदा किया. जब राजा विक्रमादित्यने वीरोंको याद किया तब वे वीर आनकर हाजिर हुए और राजाको वीरोंने कंधेपर बिठाकर एक पहरमें उज्जैन नगरीमें जा उतारा सो तोता बोलाकि हे मैना ! देख मर्दोंकी बरोबर कोई साहसवाला नहीं है और वचनोंका सच्चाहै क्योंकि राजा विक्रमने उस डोकरीको वचन दिया था कि तेरे बेटेको तुझसे मिला दूंगा सो पूरा किया अब तुझसे आगेका हाल कहताहूं जब राजा विक्रमादित्य आया और उस ब्राह्मणको बुलाकर कहा कि आपकी स्त्रीकी ल्हास (शव) कहां है तब ब्राह्मण बोला कि आपके यहां तेलके कुंडमें पडी है तब राजाने उसे निकलवाके उसके ऊपर अमृत छिडका तो वह ब्राह्मणी जी उठी और तरुण अवस्थावाली होगई तब वह ब्राह्मण अतिप्रसन्न होकर घर लेगया सो हे मैना ! जब वह ब्राह्मणी तरुण होगई तो उसे काम सतानें लगा क्योंकि उसका पति तो वृद्ध था और वह तो तरुण होगई तो पुरुषकी इच्छा करने लगी सो एक ब्राह्मण हरदत्त नाम करके उसके मकानके पास रहता था और वह

युवा अवस्थाका था और स्वरूपवान् था सो उस हरदत्तकी और उस स्त्रीकी आंख लगगई और उन दोनोंमें ऐसी प्रीति बढी कि, एकको दूसरेके देखे बिना कल नहीं पडतीथी. सो इसी तरह उनको केलि आनंद करते बहुत दिन बीत गये सो उस स्त्रीको गर्भ रहगया तब उसके पतिको यह हाल मालूम हुआ उसने उसको खूब मारी तब उस स्त्रीने उसको जहर देकर मार डाला और आप हरदत्तके साथ किसी और शहरको चली गई सो जब उसको नौ महीना पूरे हुए तब उसके पुत्र हुआ लडका कुछ दिनमें हुशियार हुआ तब एक समय हरदत्त रोजगारके वास्ते किसी दूसरे शहरको गया और वहां छःमहीने रहा पीछेसे उस स्त्रीको कामदेवने सताया सो उस गलीमें एक सिपाही गश्त देनेको आया करता था सो उससे उस औरतकी आंख लग गई सो उस सिपाहीके साथ भोग विलास करने लगी कि एक दिन उस लडकेने आकर देख ली तो वह लडला बोला कि मैं तेरी यह बातें अपने पितासे कह दूंगा और सब पडोसियोंसे कह दूंगा ये बात लडकेकी सुनकर उस कामदेवकी माती स्त्रीको बडा क्रोध आया सो उस लडकेको पकड कर कोठेमें ले गई और उसके हाथ पांव बांधकर मुखमें कपडा भरके उस सिपाहीकी तलवार लेकर उस लडकेके टुकडे टुकडे कर डाले और उसी कोठेमें गाडदिया फिर वो उस सिपाहीके साथ ऐश आराम करने लगी थोडे दिनके पीछे हरदत्त भी अपने घरको आया और लडकेको मरा सुन बहुत दुःखी हुआ तब हरदत्त घरमें रहने लगा तब सिपाहीकी घात न लगने लगी सो एक दिनकी बातहै कि हरदत्त किसी कामके लिये एक गांवको गया था सो उस दिन वो सिपाही आया और दोनों ऐशमें सो रहे. तब तो स्त्री बोली कि हे प्यारे! तेरी जुदाई मुझसे सही नहीं जाती और वह घरमें आठों पहर रहताहै इसका क्या उपाय करना चाहिये! तब सिपाही बोला कि इस्को मार डाले तो हमारी तेरी प्रीत

निबहैगी. तब स्त्रीने कहा बहुत अच्छा ऐसाही करूंगी इतनेमें हरदत्त भी आन पहुँचा और घरमें सिपाहीको देख सिपाहीके मारनेको दौडा उस समय स्त्रीने तो हरदत्तके हाथ पकड लिये और सिपाहीने तलवारसे शीश काटा सो तोता बोला कि मैना देख स्त्रीकी बे सुरव्वती कि कामदेवके वस हो पतिको यारको पुत्रको भी मारा भला ऐसी दुष्टात्मा स्त्रियोंकी तू प्रशंसा करती है और मर्दोंको बे पीर बताती है अब तूही अपने मुखसे कह कि इसमें कौन बेपीर है तब मैना बोली कि ऐ तोते ! इतना क्यों फडकताहै ? देख मर्दोंकी बेसुरव्वतीका दास्तान तेरे आगे कहतीहूं सो अब मैनाका जबाब मैं इसके छठे भागमें लिखूंगा ॥

इति पांचवां भाग समाप्त.

अथ तोता मैना छठा भाग.

दास्तान ग्यारहवाँ मैनाका ।

मैना! बोली कि ऐ तोते ! हिन्दुस्तानमें मुलतान नाम बडा भारी शहर था वहांके राजाका नाम अंगध्वजथा और उसके चार रानीथीं वे चारों रानी बडी स्वरूपवती थीं परंतु सन्तान एकके भी न हुई और उस राजाका बुढापा आगया राजाको इस बात की बडी चिन्ता रहती और हमेशा साधु महात्माओंकी सेवामें रहा करता था एक दिन ऐसा हुआ कि एक साधू आये और राजासे कहने लगे कि हे राजा ! हम तीन दिनके भूँखे हैं सो तुम हमको भोजन कराओ राजाने कहा बहुत अच्छा यह कहकर साधुको महलमें लेगया और उसके चरण धोकर चरणामृत लिया तथा बडे आदर सत्कारसे भोजन कराया जब साधु भोजन करचुका तब प्रसन्न होकर राजासे कहनेलगा कि बच्चा तेरे पुत्र प्रसन्न रहैं अब हम जातेहैं ये वचन साधूके सुनकर राजा हाथ जोडकर कहनेलगा कि हे महाराज ! आपने आ-

शीर्वाद दिया कि तेरे पुत्र प्रसन्न रहें सो मेरे पुत्र तो है ही नहीं प्रसन्न कौन रहेगा ? तब साधु बोला कि हे राजा ! तेरे पुत्र नहीं है और हम तुमको पुत्रका आशीर्वाद देचुके हैं सो तुम एक काम करो कि ये बूटी तुमको देताहूं सो इसके चार भाग करके चारों रानियोंको खिलादो तुम्हारी चारों रानियोंके एक एक पुत्र होगा. यों कहकर वह साधू तो चला गया और राजाने उस बूटीके चार भाग करके चारों रानियोंको खिलादिये जब नौ महीने व्यतीत हुये तब चारों रानियोंके एकही साथ चार पुत्र पैदा हुए तब राजा अंगध्वज बहुत प्रसन्न हुआ राजमहलपर नौबतखाना धरवाया और लाखों रुपयेका पुण्य दान किया जब वे लडके दश दिनके भये तब राजाने सब शहरके ज्योतिषियोंको बुलाया और उनसे कहा कि आप इन लडकोंका नाम धरिये और जन्मपत्री बनाके इनके ग्रह बताओ कि कैसे हैं तब ब्राह्मणोंने इष्ट धर घडी पल शोधकर राजासे कहा कि हे राजा ! आपके चारों पुत्र बडे बलवान होंगे और जगत्‌में आपकी कीर्त्ति बढावेंगे परंतु इनको दक्षिण दिशामें भय है सो ये जरूर होगा ये बात ब्राह्मणोंकी सुनकर राजा अपने मनमें कहनेलगा कि जब ये चारों होशियार होंगे तब इनको हम समझा देंगे कि ये दक्षिण दिशामें नहीं जांयगे ये बात मनमें सोचकर ब्राह्मणोंको बहुतसा द्रव्य आभूषण देकर बिदा किया और आप अपने मनमें अति आनंद मानने लगा. निदान जब वे चारों लडका पढकर हुशियार हुए और राजकाजमें निपुण भये तब एकदिन राजाने कहा कि हे पुत्रो ! जब तुम शिकार खेलनेको जाओ तो सब दिशाओंको जाना परंतु दक्षिण दिशाको मत जाना, एक दिनकी बात है कि वे चारों राजकुमार शिकार खेलनेको गये सो उनकी नजर एक हिरण पडा उन चारों भाइयोंने अपने चारों घोडे उस हिरणके पीछे छोडे वह हिरणभी इन राजकुमारोंको आते देखकर दौडा और एक जंगल में जाकर गायब होगया

उसवक्त वे चारों राजकुमार लाचार हो खडे होरहे और प्यासके मारे चारों तरफ उस वनमें जलकी तलाशमें फिरने लगे जब थोडी दूर जाकर एक सरोवर नजर आया तो वहां चारों भाइयोंने अपने अपने घोडे पेडोंसे बांध दिये और सरोवर पर जाकरके हाथ मुँह धोय पानी पिया फिर उस सरोवरके रमणीक बुर्जपर बैठकर उसकी शोभा देखने लगे कि उस्के चारों तरफ संगमरमरके घाट बने हुएहैं और एक एक घाटपर एक एक तिद्वारी निहायत उम्दा बनी है और चारों तरफ रोसों पर गेंदा गुलाब केवडा चमेली आदि पुष्पोंकी क्यारी बनी हैं और उस्के चारों ओर बडा रमणीय वन था जिसमें मध्याह्नका समय जान पेडोंपर हंस सारस कोयल तोता मैना मोर पपीहा आदि पक्षी बैठे बैठे मीठी २ बोलियां बोल रहेथे इस शोभाको देख चारों भाई मनमें कहने लगे कि इस वीयावान जंगलमें सरोवर या तो किसी राजाकाहै या देवताओंकाहै ऐसा सरोवर तो आजतक हमने कोई नहीं देखाहै इस तरह यह चारोंभाई आपसमें बातें कररहेथे कि इतनेमें चार परियोंके विमान आये और उसी सरोवरपर आनकर उतरे वे परियां अपने अपने वस्त्र उतारकर न्हाने लगीं तब न्हातेमें उनकी दृष्टि राजकुमारोंके ऊपर पडी सो देखते ही चारों आग बबूला होगईं और आपसमें कहनेलगीं कि बडा गजब हुआ जो इन इन्सानोंने हमको नंगे न्हाते देख लिये अब येह हमारा हाल सबसे कहदेंगे इससे हमारे दिलमें ये आतीहै कि इन चारोंको हम चारों खाजांय क्योंकि न तो ये जीते जांयगे और न हमारा हाल किसीसे कहेंगे इस बातको सुनकर सबोंने कहा बहुत ठीकहै परंतु उनमेंसे छोटी परी बोली कि हमारी समझमें तो यह बात नहीं आती क्योंकि अभी इनका मारडालना ठीक नहीं हमारी रायमें ये बात आतीहै कि इन चारोंको उडाकर अपने बागको लेचलो और जब कोई त्यौहार आवेगा उस दिन इनको मारकर खावेंगी- ये बात छोटी परीकी सबके मनमें

आगई तब वे चारों परी जलमेंसे निकलकर अपने अपने कपडे पहन बिमानोंमें बैठ चारों राजकुमारोंको पकडकर अपने बागको लेगई और वहां जाकर एक एक परीने एक एक राजकुमार बांट लिया और अपने अपने कब्जेमें रक्खा इतनी कथा कह मैना बोली कि ए तोते! तीन परियां तो तीनों राजकुमारोंको अपना बैरी समझतीथीं और छोटी परी छोटे राजकुमारको अपने प्राणोंसे प्यारा रखने लगी और उसके साथ ऐश आराम करने लगी इसी तरह उन राजकुमारोंके परियोंकी गिरफ्तारीमें कितनेक दिन बीत गये एक दिन छोटा राजकुमार बैठाथा कि उस्के हुश्नको देखकर छोटी परी आंखोंमें जल भरलाई और मनमें सोचने लगी कि देखो राजकुमार कैसे स्वरूपवान् हैं इनके माता पिता कैसे जीते होंगे जिनके चारों लाल बिछुर गये हैं यहां इनकी जिन्दगी चन्द रोजकी है फिर इनकी सूरतभी ढूंढी नहीं पावेंगी हाय इन कम्बख्त परियोंने बुरा काम किया जो इनको यहां ले आंई और इनके खानेका इरादा कररहीं हैं इस बातको सोचकरअपनी आँखोंसे पानी गेरने लगी तब राजकुमारने उस परीसे पूछा कि आप सुस्तक्यों हो और आपकी आँखोंसे पानी क्यों जारीहै इसका सबब हमको बतलाओ तब वह परी बोली कि हे मेरे प्यारे राजकुमार! ये मेरा रंज तुझसे जाहिर करनेका नहीं है तब राजकुमार बोला कि जबतक तुम अपने रंजका हाल मुझसे न कहोगी तब तक मैं खाना पीना कुछ भी न करूंगा तब वह परी बोली कि हे प्यारे राजकुमार!मेरे रंजका यह कारणहै कि चन्दरोजमें कोई त्यौहार हमारा आवेगा उसी रोज हम चारों परी तुम चारोंराजकुमारोंको मारकर खाजायगी सो इसबातको विचारकर और तुम्हारी सूरतको देखकर मुझकोरहमआगयाहै इससे मेरे नेत्रोंसे पानी गिरने लगाहै ये बात परीकी सुनकर राजकुमार बोला कि हे प्यारी!अब तो चारों भाई तेरी शरणहैं तुझकोअख्तियार

है चाहे हमें मरवादे और चाहे बचादे जिस तरह तैंने हमारे ऊपर तरस कियाहै उसी तरह हमारे प्राण बचानेका उपाय कर. तब परी बोली कि मैं तुम्हारे प्राण बचानेका तो उपाय बताऊंगी परंतु उसमें मेरे प्राण जानेका खौफहै क्योंकि यह बात इन परियोंको जाहिर होगई तो मुझे जीती न छोडेंगी यह सुनकर राजकुमारने कहा कि हे प्यारी ! मेरे तेरे बीचमें ईश्वर जामिन है कि तेरा हाल किसीसे जाहिर न करूंगा तब परीने कहा कि, एक काम कर कि हमारे काठके चार घोडेहैं सो तुम अपने भाइयोंको समझादो कि वे अपनी परियोंसे कहें कि हमारा दिल बैठे बैठे नहीं लगताहै सो हमको कोई ऐसी सवारी मिलनी चाहिये कि जिसपर बैठकर सैर कर आया करें. तब वे परी तुमको उन घोडोंको देंगी सो एक कल तो उनके पुट्ठे पर बनी है जिसके घुमानेसे वे घोडे बीस कोससे ज्यादा नहीं दौडते और दूसरी कल जो उनकी चोटीमें लगी है उसके दबानेसे वे हजार कोस तक दौडतेहैं सो तुम उन घोडोंपर सवार होकर चले जाना परंतु जिस वक्त तुम जाओ उस वक्त उत्तर दिशाके समुद्रमें होकर जाना क्योंकि और रास्तोंमें होकर जाओगे तो ये तुमको पकड लेंगी और जो उत्तरके समुद्रमें होकर जाओगे तो उनका जोर न होगा. क्योंकि वहां हजरत सुलेमानकी आनहै ये बात उस परीकी सुनकर राजकुमारने जाकर अपने भाइयों से सारा हाल कहा तब उन तीनों राजकुमारोंने अपनी परियोंसे कहा कि अब तो हमारा घरमें बैठे बैठे मन नहीं लगता सो हमको सवारी दो जिससे हम रोज दो चार घडी हवा खा आया करें तब उन परियोंने उन राजकुमारोंको एक एक घोडा दिया और पुट्ठेकी कल बतलादी और कहनेलगीं कि इन पर सवार होकर तुम रोज हवा खा आयाकरो मगर ज्यादा देर न लगाना ये बात परियोंकी सुनकर वे चारों राज-कुमार उन चारों घोडों पर सवार होकर चले और थोडी दूर जाकर

उन्होंने घोडोंकी चोटीकी कल दबाई तो वे घोडे हवाके मानिन्दउडे जब इन राजकुमारोंको ज्यादा देर लगी तब वे परी सोचनेलगीं कि आज वे राजकुमार कहीं छलकरके निकल तो न गये हो यह बात विचारकर वे वहांसे राजकुमारोंकी तलाशमें उडींसो आसमानमेंचढकर देखा तो चारों राजकुमार घोडोंको फेंके चले जातेहैं सो वे परी देखतेही आग बबूला होगईं और उनके पीछे दौडीं दैवसंयोगसे जभी राजकुमारोंके घोडोंने समुद्रमें पांव रक्खा तभी वे परी पहुँच गईं उस समय तीन राजकुमारोंके घोडे तो समुद्रमें कूदगये और छोटे राजकुमारका घोडा आधा तो समुद्रमें गया और पिछले दो पांव जमीनमें थे कि एक परीने उस घोडेकी पूँछ पकडली इस बातको देखकर छोटी परी घबडाई कि हाय और तो सब निकल गये मेराही प्यारा राजकुमार पकडगया अब इसे ये जीता क्योंकर छोडेंगी ये बात मनमें सोचकर उसने राजकुमारको हाथका इशारा किया कि अपनी तलवारसे घोडेकी पूँछ काटदे तब राजकुमारने ऐसी तलवार मारी कि घोडेकी पूँछ कटगई और वह परी जमीनपर गिरपडी तब वे तीनों परी बोलीं कि हे राजकुमारो! जरा यह तो बता जाओ कि यह सब हाल तुमको किसने बताया तब छोटा राजकुमार बोला कि यह सब हाल हमको छोटी परीने बताया है ये बात राजकुमारकी सुनकर वे तीनों परी बडी गुस्सा हुई और उस छोटी परीके तमाम पर नोच नोच कर मारडालीं मैना बोली कि ऐ तोते! देख उस परीने राजकुमारके साथ कैसा सलूक किया कि उसकी मुहब्बतमें आनकर उसकी और उसके भाइयोंकी जान बचादी और उस नेकीके बदलेमें राजकुमारने उस बिचारीकी जान ली सो इन्हीं बातोंको मैं याद करके मर्दोंका विश्वास नहीं करती क्योंकि मर्द चालाक और फरेबी होतेहैं और स्त्रियां बिचारीं सूधी होतीहैं क्योंकि इनके नेत्र रूपके लोभी होतेहैं इसीसे मर्दोंकी खूबसूरती देख अपना तन मन धन सब देदेतीहैं और मर्दोंके

प्रीत नहीं होती केवल मतलबके गर्जी होतेहैं ये बात मैनाकी सुनकर तोता बोला कि हे मैना ! जैसी स्त्रियां सूधी हैं और छल बल नहीं जानतीं सो सब मैं जानताहूं इनकी चालाकी और फरेबीका दास्तान मैं तेरे सामने कहताहूं सो तू ध्यान लगाकर सुनः—

बारहवाँ दास्तान तोतेका.

तोता बोला कि हे मैना! अकबरपुर एक शहर था और वहां सरफुद्दीन नाम नवाब राज्य करता था. सो एक दिनका जिक्र है कि एक विदेशी आदमी उस शहरकी सरायमें आनकर उतरा उसके पास एक चन्दो धोबन आई और उसी समय उससे कहनेलगी कि मिया साहब कपडा डालो तो धोलाऊं. मियां साहबने एक अंगरखा और एक दुपट्टा उस धोबनको दिया और कहने लगा, कि नेकवख्त हमारे कपडे सुबहही देजाना और यह भी बतादो कि इन कपडोंकी धुलाई क्या लगेगी तब धोबन हँसकर बोली कि मियां साहब ! अंगरखाकी धुलाईमें दुपट्टा औरदुपट्टाकी धुलाईमें अंगरखा लूंगी ये बात धोबनकी सुनकर मियां साहब हँसकर कहनेलगे कि अच्छा धो लाओ तुम कहोगी सो दैदेंगे. यह बात सुनकर धोबन कपडे लेकर अपने घरको चली गई दूसरा और तीसरा रोज बीत गया लेकिन धोबन कपडा लेकर न आई तब मियां साहब भटियारीसे उस धोबनके घरका पता पूँछकर उसके घर गये और उससे कहा कि ऐ नेकवख्त हमारे कपडे अभी तक नहीं दे आई क्या सबबहै हम परदेशी लोगहैं तीन रोजसे तेरी इन्तजारीमें खर्च उठारहे हैं मियां साहबकी यह बात सुनकर धोबन बोली कि जनाब कहीं बावले तो नहीं होगयेहो? मैं तो आपसे पहिलेही कह आईहूं कि अंगरखाकी धुलाईमें दुपट्टा और दुपट्टाकी धुलाईमें अंगरखा फिर आप अशराफजादे होकर क्यों बेईमान होतेहो. चले जाओ अपना काम करो फिर कपडोंका नाम मत लेना. ये बात धोबनकी सुनकर मियांसाहब कोतवालीको गये

और वहां जाकर दारोगासे कहाकि चन्दो धोबन मेरे कपडे धोनेको लेगईथी सो वह नहीं देतीहै इसलिये उम्मैदवारहूं कि मेरे कपडे उस धोबनसे दिला दिये जांय-तब दारोगाने एक चपरासी को भेजाकितुम जाकर इसी वक्त चन्दो धोबनको पकड लाओ वह चपरासी गयाऔर चन्दो धोबनको पकड लाया और दारोगा बोला कि क्यों बे धोबन हमेशा हमसे अलग रहीहै आज कह तो तुझे बांधकर कचहरीमें भेजदूं तब धोबन बोली कि आप आज रातको नौ बजे मेरे मकानपर आना मैं आपकी राजी करूंगी तबदारोगाने धोबनसे सब हालकोपूँछ कर मियां साहबको बेईमान बनाकर निकाल दिया और कहनेलगा कि जाओ यहांसे बेशरम बदमाश नालायक जब तुम्हारी उस्की धुलाई ठहरगई फिर अब क्यों बेईमान होतेहो? दरोगा साहबका यह जवाब सुनकर मियां साहब कोतवालके पास गये और सारा हाल अपना कोतवाल साहबसे कहा तब कोतवाल बडे क्रोधमें आकर एक चपरासीसे बोले कि चपरासी! वह चन्दो धोबन कौनसी है और कहां रहती है? तब चपरासी कहनेलगा कि चन्दो धोबनको मैं जानताहूं वह ससुरी बडी हरामजादी है हमेशा इसीतरह परदेशियोंको लूटती है और अपने जोवनके जोरमें किसीको नहीं गिनती. ये बात चपरासीकी सुन कोतवाल बोला कि, तुम अभी जाओ और उस हरामजादीको पकडलाओ कोतवालका हुक्म पाकर चपरासी गया और धोबनके मकान पर जाकर आवज दी और कहनेलगा कि अरे चन्दो धोबन! तुझे कोतवाल साहब बुलातेहैं तेरे ऊपर एक मियांसाहबफिरादी खडेहैं,बात चपरासीकी सुनकर धोबन उसके साथ होली जब चपरासी कोतवालीमें पहुँचा तब कोतवालसे कहने लगा ये चन्दो धोबन चांदसे मुखडेवालीआपकेसामने हाजिर है जरा हुजूरभी इसकी चटकमटक की लटक को देखलें कोतवाल उसको देखकर बडा गुस्साहो कहने लगाकि क्यों बेहरामजादीससुरी

लुच्ची गुंडी ! इस बिचारे परदेशीके कपडे क्यों नहीं देतीहै तब धोब-न बोली कि सरकार मेरी भी अर्ज सुन लीजिये पीछे आपकी राजी में आवे सो करना. कोतवाल बोला कि चुप हरामजादी! सरकार सरकार करतीहै हम तुझको खूब जानतेहैं कि तू हमेशा इसी तरह परदेशियों को लूटा करती है बस ज्यादा मत बक, ऐ चपरासी इस! हरामजादी को हवालातमें लेजाओ तब धोबन बोली कि ऐसाहब! आज रातको मैं आपकी इच्छा पूरी करूंगी आप मुझको हवालातको न भेजिये कोतवाल हंसकर बोला कि किसवक्त हमारी राजी करेगी ! धोबन बोली कि रातके दसबजे आप मेरे मकान पर आना तब तो कोत-वाल साहब बडे खुश हुये और धोबनसे कहने लगे कि अच्छा तेरी क्या अर्ज है कह! तब धोबनने अव्वलसे आखिर तक सब हाल कह सुनाया सुनकर कोतवाल उस मियांसे कहने लगे कि ऐ मियां ! तू बडा बेईमानहै क्योंकि ठहरीहुई बातको बदलताहै चला जा बदमा श बेईमान यों कहकर चपरासीसे कहा कि इस मियांको कान पक डकर निकाल दो. चपरासीनें उस बिचारे मियांको कानपकडकर निकाल दिया. तब वह वजीरके पासगया और उससे भी सारा हाल कहा तब वजीरनेभी धोबनको बुलाया और उस धोबनने उससे भी रातके ग्यारह बजेका करार करके मियांको निकलवा दिया. इसी तरह नवाब साहबने भी धोबनको रातके वायदे पर छोड दिया तब तो बिचारा मियां संतोष करके चला गया. अब धोबनका वृत्तान्त सुनो जब रातका वक्त हुआ तो नौ बज-तेही दारोगा आया और धोबनके घरमें घुसगया तब धोबनने दरवाजा बंद कर लिया और आप दारोगाकी चारपाई पर बैठकर हँस हँसकर बातें करने लगी इतनेमें दशबजे कि, कोतवाल साहबने आवा-ज दी कि चन्दो किवाड खोल तब धोबन बोली कि, सरकार आतीहूं दारोगाने पूछा कि, चन्दो! यह कौनहै ? चन्दो बोली कोतवाल सबहा

आयेहैं तब दारोगा बोला कि, अरे कम्बख्त पहिले मुझको कहीं छिपा देजब किवाड खोलना तब धोबनने खाटके पास डलेके नीचे बिठाकर ऊपर चिराग धरदिया फिर किवाड खोलकर कोतवालको भीतरकर फिर किवाड बंद करदिये कोतवाल बोला कि चन्दो हमारी राजकिर तब धोबन बोली कि जरा तो दम लीजिये अभी तो सारी रात पडीहै इसीतरह बातें करतेरग्यारह बजगये सो वजीरने आकर आवाजदी कि चन्दो किवाड खोल! तब धोबन बोली कि सरकारआतीहूं कोतवालने पूछा कि चन्दो यहकौनहै उसनेउत्तर दिया "वजीरसाहबआयेहैं" तब कोतवाल बोला कि पहिले मुझे कहीं छिपादेफिरकिवाड खोलना नहीं तोहमारीरोटी जातीरहेगी चन्दोंनें कहा आपलहँगाओढनी पहिनकर सामने धीरे चक्कीपर जा बैठो दाना पीसो जब कोतवाल जनाने कपडे पहनकर चन्दोका दाना पीसने लगे तब उसने किवाड खोल वजीरको भीतरले फिर किवाड बन्द कर दिये वजीर बोला कि चन्दो अब तू अपना कौल पूराकर! चन्दो बोली अभी जल्दी क्यों करतेहो सब रात आपकीहै इतनेमें नव्वाब साहब भी आन पहुँचे और बोले कि, चन्दो! किवाड खोल चन्दोंने कहा "सरकार आतीहूं" वजीर साहब बोले कि, चन्दो! यह कौनहैं चन्दोंने कहा कि नव्वाब साहब तशरीफ़ लाये हैं तब तो वजीर साहब बोले कि, हरामजादी पहिले मुझे कहीं दुबकादे तब किवाड खोलियो. यह सुनकर धोबनने कहा कि आप जनाने कपडे पहनकर वह दाना दलनेका दलेता रक्खाहै सो वहां बैठकर धीरे धीरे दाना दलियो ये बात धोबनकी सुनकर नव्वाब साहबके डरके मारे वजीर साहब भी जनाने कपडे पहनकर गधोंके लिये दाना दलने लगे और धोबन किवाड खोल नव्वाब साहबको मकानके भीतर लेगई और अपनी चारपाई पर बिठाकर खातिर करने लगी तब नव्वाबसाहब कहनेलगे कि, चन्दो! अब तू अपना वायदा पूरा कर और बातें पीछे करना चन्दोंने कह

बहुत अच्छा परंतु जरा मैं पेशाब कर आऊं फिर आपकी तन मनसे राजी करूंगी. ये बात नव्वाब साहबसे कहकर वह पेशाबका बहाना करके कहीं जा छिपी और यहां नव्वाब साहब धोबनकी राह देखने लगे कि, धोबन कहां चली गई उसको इतनी देर होचुकी अबतक कैसे न आई हमको ऐसा मालूम होताहै कि, हरामजादी धोखा देकर कहीं चली गई, खैर हमको धोखा देकर कहां बचेगी सुबह होतेही ससुरीके टुकडे टुकडे उडादूंगा. ये बात मनमें विचार नव्वाब साहबने गुस्सेमें आनकर वह डला जिसपर चिराग रक्खा था उसमें एक लात मारी और कहने लगे कि हरामजादी इसे यहां क्यों धरगई है? ऐमैना! जिस वक्त गुस्सेमें आनकर नव्वाब साहबने डलेमें लात मारी तौ लातके लगतेही डलेके नीचेसे दारोगा चिल्लाया किगरीबपरवर मुझ अकेली ही को आप क्यों मारतेहो मैं अकेलाही यहां नहीं हूं यहांपर कोतवाल साहब और वजीरसाहब भी मौजूद हैं तब नव्वाब साहब बोले कि, वे दोनों कहां हैं? दारोगा कहने लगा कोतवाल साहब तो जनाने कपडा पहनकर आपके सामने छप्परमें पीसना पीसरहेहैं और वजीर साहब जनाने कपडे पहनकर गधोंके लिये दानादलरहेहैं ये बात सुनकर नव्वाबने वजीर और कोतवालको बुलाया और कहने लगे कि अरे मियां यह क्या हालहै तब वे दोनों कहने लगे कि आपका हालहै जो हमारा हालहै, यह बात सबोंकी सुनकर नव्वाब साहब कहनेलगे कि यह वह मसल हुईकि "तू कहे न मेरी और मैं कहूं न तेरी" इस बातको भाई किसीके सामने मत कहना चलो अपने अपने घरको चलें मगर कोतवाल साहब आप बहुत कोशिश करके सुबहही इस हरामजादीको पकडकर हमारे दरबारमें भेजदो देखो मैं इस बदमाशको कैसी सजा देताहूं क्योंकि ये हकीकतमें बदमाशहै भला जिसने सारे अमलेसे और खास मुझसे ऐसा धोखा किया तौ रैय्यतोंसे क्यों नहीं करती होगी. यह कहकर नबाब साहब और

वजीर साहब तो अपने अपने मकानोंको गये और कोतवाल सुबह होतेही उस धोबनको गिरफ्तार करके कचहरीमें पहुँचा और कहने लगा कि हुजूरके साम्रने ये चन्दो धोबन हाजिरहै तब नवाब साहब उस धोबनको देखकर और रातकी बातको यादकर बडे गुस्सेमें आनकर बोले कि इस हरामजादी पर दो दरजन सख्त बेंत रोज लमा करें इसको यही सजाहै तोता बोला कि हे मैना! देखले दुनिया में ऐसी २ स्त्रियां मौजूदहैं और फिर भी तू कहतीहै कि स्त्रीकी जात बडी गरीब और भोली होतीहै!भला अब आंख फेरनेकी क्या बातहै इसका जबाब तू ही दे कि वह औरत गरीब और भोली थी या बदकार थी!तोतेकी इस बातको सुनकर मैना कहने लगी कि ऐ तोते मेरा तेरा झगडा इन बातोंका नहींहै क्योंकि जालसाजी औरफरेब तो अपने अपने मौकेपर सबही स्त्री पुरुष करतेहैं इस झगडे पर इस दास्तानका क्या जिक्र था यहां तो बे मुरव्बती और बेदरदीका झगडाहै सो इसदास्तानमें औरतकी कोई बेमुरव्वती और बेदरदीनहीं पाईगई अगर ऐसा मर्दोंका दास्तान मैं कहूं तो मेरा तेरा झगडावर्षों में तो निबटेही नहीं इसीसे तो मैं तेरे दास्तानको पसंद नहीं करती तब तोता बोला हे मैना!जो तू इस दास्तानको नहीं मानतीहै तो खैर इसे जानेदे मैं एक दास्तान तेरेसामने और कहताहूं तू ध्यानदेकरसुन

तेरहवाँ दास्तान तोतेका

तोता बोला कि हे मैना!बहादुर नाम एक शहरथा जिसके राजाका नाम चन्द्रकेतु था उस शहरमें एक सेठ रहता था जिसके एक बेटीथी वह बडी स्वरूपवती थी साहूकारने एक वीरभद्र देशके साहूकारके बेटेके साथ उसकी शादी करदी जब वह साहूकारजादीस्यानी भई तब उसे कामदेवने सताया सो उसके मकानके पास एक जौहरी की दूकानथी उस जौहरीका लडका बडा स्वरूपवानथा सो इससाहू-

कारजादीकी नजर साहूकारके लडके पर पडी तो यह उसपर आशक होगई और उधर वह जौहरीका बच्चा भी इसे देख कर आशिक हो-गया. इसी तरह इनको देखा भाली करते और आंख लडातेकई दिन बीतगये परंतु बातचीत करनेका मौका न मिला. तब एक दिन उस साहूकारजादीनें कागज पर एक दोहा लिखा कर बांदीके हाथ भेजा और बांदीसे कहा कि तू इस चिट्ठीको इस जौहरीबच्चेको देआ तब वह बांदी उस रुक्केको जौहरी बच्चेको दे आई वह रुक्का जौहरी बच्चेने पढा तो उसमें यह दोहा लिखाथा ॥

दोहा

आम पके नींबू पके, पात रहे सरसाय ॥
माली याको है नहीं, जल बिन बाग सुखाय ॥

इसको पढकर जौहरी बच्चेने यह दोहा लिख दिया ॥

मालीके मन चाह अति, सींचे बागन नीर ॥
पर रखवारी देखके, बँधे न दिलको धीर ॥

वार्ता

यह दोहा लिखकर साहूकार जादीके पास भेजा इसके जबाबमें साहूकारजादीने यह दोहा लिखकर भेजा ॥

दोहा

रखवारोंको देखकर, मत मन दहशत खाय ॥
बाग आपनों जानके, बुलबुल बनके आय ॥

इसके जबाबमें जौहरी बच्चाने यह दोहा लिखाः-

पहिरे बैठे बागपै, लगे न मेरी घात ॥
निशि दिन बुलबुल फिरतहै, दरश बिना घबरात ॥

यह दोहा पढकर साहूकारजादीने यह दोहा लिखाः-

दोहा

दरवाजेकी राहसे, मत आवो दिलदार ॥
खिरकी होकर आइयो, कमँद देउँगी डार ॥
उसपर होकर आइये, मनमें रखिये धीर ॥
मैना प्यासी दरशकी, आइ प्याइये नीर ॥

वार्ता

यह दोहा जौहरी बच्चाने बांचकर उसके जवाबमें यह दोहा लिखकर भेजा ॥

दोहा

अबहीं निशि चन्दा उगे, कैसे आवन होये ॥
चार दिनाकी चांदनी, फेर अँधेरो होय ॥
चार दिना गम खाइये, होय अँधेरी रात ॥
जबका मेरा कौलहै, मानों सांची बात ॥

वार्ता

तब इसके जवाबमें साहूकारजादीने यह दोहा लिखाः—

दोहा

छिन छिन जुग सम होतहै, तुम बिन मेरे मीत ॥
कहा चांदनी कर सके, जाकी सांची प्रीत ॥
सांची प्रीति पतंगकी, दीपक सँग जर जाय ॥
प्राण गमावै आपने, तोहू ना डर पाय ॥ २ ॥
प्यारे चन्द चकोर सम, बैठी निरखो तोय ॥
कोयल सम कूकत फिरूं, नेक दरद नहिं होय ॥

वार्ता

यह दोहा सुनकर जौहरी बच्चेके वदनमें मुहब्बतने जोश खाया। तब उसने एक दोहा लिखकर भेजाः—

दोहा

आऊंगा मैं रातको, रहो आप हुशियार ।
अर्धरातके वक्तपै, कमंद देना डार ॥

वार्ता

इस दोहेको पढकर साहूकारजादी मनमें बहुत खुश हुई और अपनी चित्रसारीमें सेज बिछाय शृंगार कर जौहरी बच्चेकी इन्तजारी में बैठी राह देखने लगी इतनेहीमें रातके बारह बजे जौहरी बच्चा आया उसको देखकर साहूकार जादीने कमंद डाला उसपर चढकर जौहरी बच्चा महलमें दाखिल भया और सब रात ऐश आराममें कटी जब चार बजेका वक्त हुआ तब जौहरी बच्चा बोला कि, हे साहूकार जादी ! आपको मुनासिब है कि हमेशा आप मुहब्बत एकसी रखना तब साहूकारजादी कहने लगी कि हे प्यारे ! मैं तो दिलोजान से तेरी ताबेदार होचुकी और ये दोहा कहाः—

इस फुलवारीका तुही, प्यारे सींचन हार ॥
क्या ताकत है औरकी, देखे नैन निहार ॥
तुम चन्दा मैं चांदनी, रची आप करतार ॥
अब बन्दीको जानिये, अपनी ताबेदार ॥

इस तरह जब साहूकारजादीने कहा तब जौहरीबच्चा अपने मनमें बहुत खुश हुआ और साहूकारजादीसे रुखसत हो अपने घर आया सो तोता बोला ऐ मैना ! इसी तरह ऐश आराम करते करते उन दोनोंको कुछ दिन बीते तो यह सारा हाल उस साहूकार जादीकी माताको जाहिर होगया तो एक दिन अपनी बेटीसे समझाकर यों कहा—सवाल जवाब दोनों मा और बेटीके

बुरा कियाहै बेटी उठाई बदनामियां ॥
दाग लगाया री बेटी वो कुलके बाईं ॥

जो सुनपावेंगे बच्ची वो लोग लुगाइयां ॥
धूर उडेगी घर घर शहरके माई ॥ १ ॥

जवाब बेटीका

उमंर चढीहै अम्मा जोवन गदरा रहा ॥
काम निगोडेने अम्मा ये लाज छुडाई ॥
अब नहीं छूटे ऐरी अम्मा लगी दिलदारसे ॥
पडे झकमारो क्यों ना वो लोग लुगाई ॥

माताका जवाब

बडे घरोंकी रे बेटी तू बेटी कहलावती ॥
खोटी बातमें बेटी तोय लाज न आई ॥
प्रीत जगतमें हे री अम्मा वो सुखका मूलहै ॥
क्या दुख पायारी अम्मा तू करत बुराई ॥

तोता बोला कि हे मैना! जब इसतरह के जवाब बेटीने दिये तब उसकी माताने ये कहा—

दोहा—मान कही तू लाडिली, छोड इश्कका ख्याल ॥
जो सुन पावेगा पिता, मार उडावे खाल ॥

ये वचन माताके सुनकर बेटीने कहाः—

इश्क हमारे मन बसा, सुन माता नादान ॥
तैनें क्या कीया नहीं, मन अपनेमें जान ॥

ये बात बेटीकी सुनकर उसकी माताने अपने मनमें सोचा कि यह कामकी तरंगकी उमंगमें मतवारी होरहीहै इससे यह किसी तरह नहीं मानेंगी इसके बापसे कहकर और इसके पतिको बुलाकरउसके साथ इसे करदें क्योंकि जहां चली जायगी तो हमारी बदनामी न होगी ये बात मनमें विचारकर उसने बेटीका हाल सब अपने पतिसे कहा तब उसने उसी वक्त चिट्ठी लिखकर अपने एक नौकरको भेजा कि तुम

इस चिट्ठीको साहूकारजादेको देना और उससे कहना कि आपको जल्द बुलायाहै सो आप जल्द चलकर रुखसत करालाओ, क्योंकि हमारे सेठजी कहीं तीर्थयात्राको जाँयगे न जाने वहांसे कितने दिन में आनाहो इससे अपने सामने आपको बिदा करजांयः तो अच्छाहै. उसी प्रकारसे नौकरने जाकर चिट्ठी दिया और कहा. यह बात सुनकर वह साहूकारजादा सफरका सामान इकट्ठा कर और बहुतसे आदमी साथ लेकर सुसरालको चला जब कई दिनके बाद अपनी सुसरालमें पहुँचा तब उसके सास श्वशुरोंनें बडी खातरकी और रातको जब साहूकारजादा ब्यारू करचुका तो अपनी स्त्रीकी चित्रसारीमें जाकर सोरहा ये रास्तेका हारा थका था इससे इसे नींद आगई तब अपना मौका पाकर साहूकारजादीअपने महलसे निकल जौंहरी बच्चेके मकानपर पहुँची और तीन बजे तक उसके साथ ऐश आराम करती रही उधर साहूकारजादेकी आंख खुली तो अपने पास अपनी स्त्रीको न देखकर उसने जान लिया कि ये स्त्री किसी दूसरे पुरुषके पास गई खैर कल इसका हाल देखूंगा ये बात पडा पडा अपने मनमें विचारता था कि, इतनेमें वह आई और अपने पतिके पास सोयरही जब दूसरा दिन हुआ तब सब कामसे निश्चिन्त होकर वे दोनों अपनी चित्रसारीमें जाकर सोये साहूकार बच्चा झूठमूठके सोगया और वह स्त्री अपने पतिको सोता जानकर अचक अचक उठकर जौंहरी बच्चेके मकानपर पहुँची और उसीके पीछे वह भी चलागया जब वह जौंहरी बच्चेके मकानमें चली गई. तब अपना रूप बदल और भिखारीका रूप धर जौंहरीबच्चेके मकानपर आवाज लगाई और यह दोहा कहा—

भला जो तेरा होयगा, अतिथि खडाहै द्वार ॥
भूखेको कुछ डालदे, कहताहूं हरबार ॥
कहताहूं हरबार कि भूखा दूर देशते आयाहै ॥

केई दिनका भूखाहूं मैं अन्न जरा नहिं खायाहै॥
फिरूं भटकता इस नगरीमें इतनावक्त होआयाहै॥
भाग्यवानका द्वार देखकर आकर शब्द सुनायाहै॥

वार्ता

ये बात भूंखेकी सुनकर जौंहरीबच्चा बोला कि, हे साहूकारजादी! कोई भूँखा हमारे दरवाजे पर पुकारताहै सो तुम रकेबीमें थोडेसे मोती लेकर उसको दे आओ तब साहूकारजादी थालीमें मोती भरकर द्वारपर आई और उस भिखारीसे कहनेलगी॥

मोती लाई थालभर ले जोगीके लाल॥
खैर मना मेरे यारकी कीया तुझे निहाल॥

यह वचन साहूकारजादीका सुनकर साहूकारजादा यों कहनेलगा

कंकर पत्थर क्या करूं देओ गले का हार॥
खैर मनाऊं यारकी ये मुझको दे डार॥

ये बचन भिखारीका सुनकर साहूकारजादीने अपने गलेका हार उतारकर अतिथिको देकर जौंहरी बच्चेकेपास चलीगई और साहूकार जादाभी हारको लेकर अपनी चित्रसारीमें पलंग पर आनकर सो-रहा और थोडी देरके बाद साहूकारजादीभी आकर अपने पतिके पास सोरही सुबह होतेही साहूकारजादेने अपनी साससे कहा कि हमको बिदा करदो. तब उसके सासू श्वशुरने बहुत खुशीके साथ बहुतसा माल देकर बिदा किया तोता बोला कि, हे मैंना! जब वह साहूकारजादा दोतीन मंजील निकल आया तब एक जंगलमें जाकर मुकाम हुआ जब अपने डेरेमें साहूकारजादा और साहूकारजादी दोनों बैठेथे तब साहूकारजादेने अपनी स्त्रीसे पूछा कि आपको आपके मावापोंने क्या दियाहै और आपके यार जौहरीबच्चाने क्या दिया है ये बात सुनकर उसस्त्रीके होश उडगये परंतु ऊपरले मनसे कहनेलगी कि जौहरी बच्चा कौनहै! तब साहूकार बच्चा बोला कि तुम्हारे पास सब

जेवर तो दीखताहै परंतु हार नहीं दिखाई देता सो वह हार कहाँ है? ये वचन साहूकारजादेका सुनकर वह कहनेलगी अपनी मैयाको बनवानेके वास्ते देआईहूं क्योंकि वो कईजगहसे ऐसा टूटगया था कि काबिल पहरनेके न रहा ये वचन साहूकारजादी का सुनकर साहूकारजादेने हार अपनी जेबसे निकालकर दिखाया और कहने लगा कि ये हार किसकाहै और इसको भिखारीके वास्ते जौंहरीबच्चेके मकान से किसने दिया था? तब तो उस हारको देखकर अपने मनमें बहुत घबडाई और अपने पतिके वचनोंको सुनकर अपने मनमें जान गई कि ये फकीरका भेष करके वहां गया था और यही इस हारको मुझसे लाया है अब इसने मेरा सब हाल जान लियाहै अब ये मुझको जीती काहेको छोडेगा इससे कोई ऐसा उपाय करना चाहिये कि जिससे मेरे प्राण बचें ये बिचार वह साहूकारजादेसे हाथ जोड गिडगिडाकर कहने लगी कि हे प्यारे! अब जो कुछ मुझसे कसूर हुआ वह माफ कीजिये और पीछे में ऐसा काम करूं तो आपके जीमें आवे सो मेरा हाल करना यों कहकर साहूकारजादेके गलेसे लिपट गई और बिनती करने लगी तोता बोला कि, हे मैना! उस स्त्रीनें उस साहूकारजादेपर ऐसी मोहिनी डाली कि वह इसकी मुहब्बतमें आनकर कुछ नहीं कर सका और अपने मनमें सोचनेलगा कि खैर जो कुछ हुआ सो हुआ अब इसके मारनेमें क्या हाथ आवेगा और ये भी हम जानतेहैं कि ऐसा पेड कोई नहीं है जिसको हवा न लगीहो. ये बात मनमें विचारकर चुप होगया और उस स्त्रीसे कहनेलगा कि खैर अब तो तेरा कुसूर माफ किया परंतु फिर कभी ऐसा काम मत करना यह कहकर उसको गलेसे लगाकर अति प्यार करनेलगा तोता बोला कि ऐ मैना! देख मर्द कैसेरहमादिल होतेहैं कि उस स्त्रीने कैसा बुरा काम किया था परंतु उसके गिडगिडानेको देखकर तुरन्त रहम आगया हे मैना! जब वह साहूकारजादा

अपने मकानपर आगया और अच्छी तरहसे रहने लगा और स्त्रीपर हर एक तरह प्यार करनेलगा परंतु उस स्त्रीको आठ पहर चौंसठघडी उस जौंहरीबच्चेका ख्याल रहता और अपने मनमें कहती कि जाने मुझ बिन मेरे पियारेकी क्या दशा होगी इस बातको सोचकर वह हमेशा उदास रहा करतीथी. तोता बोला कि हे मैना !अब यहां तो जौहरीबच्चेके सोचमें इसका यह हालथा और उधर जौहरीबच्चा पर जो जो मुसीबतें गुजरीथीं उनका अब ध्यान करताहूं ! जब सुबह होतेही जौहरीबच्चाने यह सुना कि साहूकारजादीको उसका मालिक अपने वतनको लेगया वह एकदमसे चुप होगया और आह भरकर यह दोहा पढनेलगाः—

दोहा

हाय दई कैसी करी, भयो बिछोयो हाय ॥
प्यारी मुख देखे बिना, जान अजाये जाय ॥
जो तुझको था बिछडना, नाहक कीनी प्रीत ॥
जोड प्रीत फिर तोडना, कौन गामकी रीत ॥

यह दोहा पढकर चुप होगया और जमीन पर तडफने लगा उसके मा बापोंने उसका यह हाल देखकर बडा सोच किया और कहने लगे कि, अबी अबमें इसको क्या होगया यह कहकर उसनें वैद्यको बुलाया और उससे कहा कि वैद्यराज ! इस हमारे लडकेका हाल देखो कि इसे क्याहोगयाहै न तो यह बोलताहै और न कुछ खाताहै न पीताहै यह सुनकर वैद्य जौहरी बच्चाका हाथ पकडकर नब्ज देखने लगा उस समय जौहरीबच्चेने यह दोहा पढा ॥

दोहा

नाडी छूवत आपके, पडे फफोले अंग ॥
जा वैदा घर आपने, तू क्या जानें रंग ॥

जो अजार मो तन लगा, दवा न उसकी होय ॥
मेरे अरजे की दवा, कर सकताहै कोय ॥
ये वो बीमारी नहीं, जिसका करो इलाज ॥
बिन दर्शन महबूबके, प्राण बचैं ना आज ॥

ये बातें जौहरीजादेकी सुनकर वैद्यने जान लिया कि इसको किसीकी जुदाईका शोक है और उसके माता पितासे कहा कि तेरे बेटेको कुछ रोग नहीं है ये किसी महबूबके इश्कमें गिरफ्तारहै इसकी दवा मेरे पास नहीं है आपकी समझमें आवे सो करो ये कहकर वैद्यतो अपने घरको चला गया और उसकी माता कहने लगीः—

दोहा

ऐ बेटा मेरे लाडले, क्या दुख व्यापा तोय ॥
जिसका तुमको रंजहै, कह समझावो मोय ॥
देख तेरे इस हालको, मुझको बँधै न धीर ॥
यह तू सांच बतायदे, कहा उठी तन पीर ॥

जवाब बेटेका दोहा

हीरा मेरे हाथसे, गया निकल अब हाय ॥
उस बिन दिल बे चैनहै, वा मोय न कछू सुहाय ॥

जवाब माताका

एक हीरेकी क्या कहै मुकते देउ बिसाय ॥
जिसपर तेरा मन चले, वैसा देउँ मँगाय ॥

जवाब बेटेका

वो हीरा अनमोल था, जो मेरे मन आय ॥
उस सम दूजा शहरमें, मुझको दीखे नाय ॥
वह हीरा मो मन बसा, गया दूर परदेश ॥
उसके लानेको भला, करूं फकीरी भेष ॥

जवाब माताका

तुम चातुर परबीनहो, क्यों बनते नादान ॥
जाय पराई नारपै, तुम खो बैठोगे जान ॥
बडी कठिनसे पाला मैंने, तुझको मेरे लाल ॥
अब तू दुख देने लगा, पडके इश्कके जाल ॥
परनारीके फन्द पड कितनेही खोगये जान ॥
इससे तू मत फँस कुमर, कही हमारी मान ॥

तोता बोला कि हे मैना ! इस तरह उसकी माताने बहुतेरा समझाया मगर उसके दिलमें एक नहीं आई सचहै किसी कविने कहाहै.

दोहा

जब तनमें लगजातहै, नैन बाण सम आय ॥
फिर वो बचनेका नहीं, लाखों करो उपाय ॥
लगन लगेकी पीर अति, कसकत दिन अरु रात ॥
खानपान सुख सोवना, ताहि न कछू सुहात ॥
जा तनमें लागी कठिन, इश्क बातकी चोट ॥
फिर तो वह बचता नहीं, ज्ञान ढालकी ओट ॥
चिकने घट सम होतहै, निरमोहीकी देह ॥
ज्ञान बूँद ठहरे नहीं, घनसम बरसे मेह ॥
विरह आग तनमें लगी, भबकतहै दिन रात ॥
बिना दरश माशूकके, कबहूं नाहिं सिरात ॥
नैन नारकी धारसे, जो नर घायल होय ॥
प्राण तजे कै घर तजे, दो में एकहि होय ॥

हे मैना ! उस जौंहरीबच्चाका यार एक वजीरजादा था सो उसने जब यह हाल सुना तो अपने दोस्तके पास आया और कहने लगा कि, हे दोस्त ! तुमको क्या होगयाहै तब जौंहरी बच्चाने अपने दिलका सब हाल वजीरजादेसे कहा और कहने लगा कि यार उसकी

जुदाईसे मेरी यह शकल हुई है और उसके बिना मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता है इतना कहकर ये शैर पढने लगा--

नहीं कोई ऐसा मिलावे मुझे ।
मेरा हाल सारा सुनावै उसे ॥
भला कब मैं देखूंगा प्यारीका मुंह
गलेसे लगा उसका चुमूंगा मुंह ॥
दिखावे कोई उसकी सूरत मुझे ॥
पिलावे मोहोब्बतकी दारू मुझे ॥
नहीं चैन मुझको बिना उसके अब ।
बिना दीद उसके तडफताहै दम ॥
मिले या तो मुझको वो इश्के कमर ॥
नहीं जान जातीहै निकसी फिल हाल ॥
मेरे दर्दकी कोई सुनता नहीं ॥
फिकर मेरे जीनेकी करता नहीं ॥
लगी चोट सीनेमें ए रंगीलाल ॥
बिना देखे प्यारीके उठता मलाल ॥

यह हाल जौहरीबच्चेका सुनकर वजीरजादेने कहाः—

दाना दुश्मन होयके क्यों बनते नादान ॥
पर तिरियाके नेहमें क्यों खोतेहो जान ॥
प्यारेजी क्यों खोतेहो जान कामके बशमें होके ॥
बहुतेरे मरगये सबी घर बाहर खोके ॥
प्यारेजी बडे बडे होगये फिरें जंगलमें रोके ॥
जिसने कीया इश्क रैन नहिं काटी सोके ॥

जवाब जौहरी बच्चेका

होनी है सो होयगी इस्का नहिं अरमान ।
बिन देखे दिलदारके तज दूं अपने प्रान ॥

प्यारेजी तज देऊं अपने प्रान निकल जंगलको जाऊं ॥
उसके देखे बिना नहीं मैं अन जल खाऊं ॥
प्यारेजी बन बन भ्रमता फिरूं नाम उसके लौ लाऊं ॥
जाके उसके द्वार बैठकर धुनी रमाऊं ॥

जवाब वजीरका

मानो मेरी बातको निश्चय मेरे यार ॥
परनारीके फन्द पड होगे बहुत खुआर ॥
प्यारेजी होगे बहुत खुआर होयगी तुमरी खुआरी ॥
कठिन सारकी धार बनी पैनी परनारी ॥
प्यारेजी त्यागो उस्का सोच मान लो बात हमारी ॥
इसमें पडकर यार होयगी हँसी तुम्हारी ॥

तोता बोला कि हे मैना ! वजीरजादेने बहुतेरा समझाया मगर उसके दिलमें एक न आई लाचार होकर वजीरजादा तो अपने घरको चलागया और इधर जौहरी बच्चा अपना मौका पाकर कुछ जवाहिरात लेकर जंगलको रवाना हुआ और एक शहरमें पहुँचकर अपना लिबास उतारकर जोगीका भेष बनाया और माशूकके नामकी माला जपने लगाः—

रंगे गेरुरा तनके कपडे अजब ।
जटा सीसपर बांध लीनी गजब ॥
कानोंमें मुद्रे चमकने लगे ।
गले माल मनिये दमकने लगे ॥
लगा खाक तनपे भसमकी भभूत ।
चले बनके जोगी यों जौहरीके पूत ॥
पहन गलमें सेली व कफनी संभाल ॥
गजब हुस्न उसका चमकता कमाल ॥

सो हे मैना ! वह जौहरीबच्चा उस साहूकारजादीकी मुहब्बतमें फँसकर जोगी बन जंगलमें भटकता हुआ अपने माशूकका नाम जपता हुआ उसीसे लौ लगाये खाना पीना सब बिसराये जंगलों में फिरने लगा और बडी आह भरकर ये शेर पढने लगाः—

शैर

जरा आन सूरत दिखादे मुझे ॥
पता अपना पूरा बतादे मुझे ॥
फिरताहूं भटकता तेरी चाहमें ॥
तजा मैंने घरको तेरी आहमें ॥
पिला आन मुझको गुलाबी शराब ॥
हुआ तेरी उलफतमें यहांतक खराब ॥
लगा आन छातीसे मुझको शिताब ॥
मिटा दिलसे रंजो अलमका खिताब ॥
न छोडेथी इकला मुझे एकदम ॥
छिपी अब कहां करके ऐसा सितम ॥
बिना तेरे देखे न दिल चैनहै ॥
कटे अब यहां रोरो दिन रैनहै ॥
जरा कर महरकी निगह ओ परी ॥
तेरे इश्कने मेरी क्या गत करी ॥
छुडा मुझसे घरबार मेरा दिया ॥
तिसपर भी तूने किनारा किया ॥

हे मैना ! इसी तरह विरहमें मगन होकर जंगलमें चला जाताथा कि एक दमसे गर्मी पडने लगी और धूपके मारे जमीन आसमान जलने लगा उस वक्त ये बिचारा मुसीबतका मारा एक पेडके नीचे बैठकर ये रेखता पढने लगाः—

पडेहै जोरसे गर्मी तपाकर तन जलाताहै ॥

न चन्दा चांदनी चन्दन न खस खाना सुहाताहै ॥
तेरे दीदार बिन जालिम जुल्म ये जेठ मचाताहै॥
मुझे ये जानके इकला जोर अपना जनाताहै ॥
करूं मैं क्या जतन प्यारी बिरह मुझको जलाताहै ॥
तेरे इस इश्क में फँसकर नहीं कुछ मुझको भाताहै ॥
शुरूहै जेठका तपना न अपना कुछ बसाताहै ॥
पडेहै धूप अति जालिम अकेला जी अकुलाताहै ॥
तलैया बावडी कूआ सभी जल सूख जाताहै ॥
तेरे दीदार बिन प्यारी चश्म दर्या बहाताहै ॥

दोहा

जेठ ज्वाल जालिम जले, सूखे ताल न नीर ॥
ताहूते दूनी जले, बिरह अगन की पीर ॥

तोता कहने लगा कि हे मैंना ! इसी तरह बहुतसी मुसीबतें उठाता हुआ कई दिना बाद वह जौहरीबच्चा उस साहूकारजादीके शहर में पहुँचा और उस शहरके तलाव पर जाके डेरा किया क्योंकि उसने अपने मनमें सोचा कि यहां सब शहरकी स्त्रियां न्हानेको आती हैं सो किसी न किसी दिन वहभी यहां स्नान करनेको जरूर आवेंगी इससे मुकाबला जरूर होजायगा. यह बात मनमें विचारकर वहीं एक तिदवारीमें धूनी लगादी जब उसको वहां रहते कई दिन होगये तब एक दिन वह साहूकारजादी भी वहां न्हानेको आई और स्नानकरके अपने घरको चली जब जोगीकी निगाह उसपर पडी तो देखतेही पहँचान गया कि मेरे मनके चुराने वाली यहीहै यह बात मनमें जान कर यह दोहा कहनेलगा ॥

दोहा

जोगी आया दूरसे, सहता दुःख अपार ॥
अब तो दर्शन दीजिये, मुखसे घूँघट टार ॥

चौबोला

घूँघट मुखते टार कि प्यारी दूर देशते आयाजी ॥
हुआ बहुतसा ख्वार ये जोगी आज हुआ मन चायाजी ॥
तेरे इश्कमें आकर हमने सब धन माल गमायाजी ॥
अब तो हँसकर देख इधर को जोगी वचन सुनायाजी ॥

ये वचन जोगीका सुनकर साहूकारजादी पहचानगई कि ये तो वही मेरा यार जौहरीबच्चा है उसकी सूरत को पहँचान कर घूँघट-मुखसे हटा लिया और जोगीकी तरफ़ देखकर कहने लगीः-

दोहा

जा दिनसे बिछुरन भयो तलफत मेरे नैन ॥
जैसे जल बिन माछरी तलफतहै दिनरैन ॥

चौ०– तलफतहै दिन रैन पियारे नैन नींद नहिं आती जी ॥
कर कर तेरी याद यार मैं रो रो रैन गमातीजी ॥
आठ पहर दिन रैन पियारे तुझीसे ध्यान लगातीजी ॥
तेरे इश्कमें फँसकर प्यारे रातदिना दुखपातीजी ॥
दुख सुख लीने भोगके जो कुछ लिखा लिलार ॥
अब तुमको करनो कहा कहिदो सोच बिचार ॥

जवाब पुरुषका

कहदो सोच बिचार पियारी अब तुमको क्या करनाजी ॥
बिन देखे दीदार आपके होय हमारा मरनाजी ॥
सुलगेहै तन आग इश्ककी उसमें निशिदिन जलनाजी ॥
कौन तरहसे तेरा मेरा होय काजका सरनाजी ॥

जवाब स्त्रीका

प्यारे मन धीरज धरो मत मनमें घबराय ॥
तेरे मतलबका करूं कोई जल्द उपाय ॥
कोई जल्द उपाय हुक्मदो अब महलको जाऊंजी ॥

मत दिलमें घबराय यार मैं कसम आपकी खाऊंजी ॥
करके कछू बहाना तुमको अपने महल बुलाऊंजी ॥
राजी करूं आपकी ह्वांपर हँसकर कण्ठलगाऊंगी ॥

तोता बोला हे मैना! इसतरह जौहरीबच्चेको समझाकर वह साहूकारजादी अपने महलको गई और अपनी चित्रसारीमें जाकर पडरही और हाय हाय कर चिल्लाने लगी इसकी बेकला देख सब लौंडी बांदी दौड आईं और उसका गैरहालदेखकर बहुत घबडाईं और एक दासी ने साहूकारजादेसे जाकर हाल कह सुनाया उसको सुनतेही साहूकारजादा दौडा आया और अपनी स्त्रीका गैर हाल देखकर घबडानेलगा और पूछनेलगा कि, हे प्यारी! आपको क्याहुआ अपने दुःखकासारा हाल मुझसे कहो क्योंकि तरी बेकली मुझसे सही नहीं जाती और तेरा यह हाल देखकर मेरा जी घबडाताहै यह सुनकर साहूकारजादी कहने लगी कि हे प्राणप्यारे! आज दर्दके मारे मेरा दमनिकलाजाताहै और कोई दमकी महमानहूं आपसे जो कुछ बने सो करो. तब साहूकारजादेने उसी वक्त बहुतसे वैद्य और हकीमोंको बुलाकर अपनी स्त्रीकी औषधि कराई मगर उसको कुछ फायदा न हुआ और ज्यादा बेकली बढने लगी तोता बोला कि हे मैना! वैद्य हकीम बिचारे क्या करें जो कोई रोग उसको होय तो उसका इलाज करें वहां पर तो इश्क मुहब्बतका दर्द था उसको वैद्य बिचारे क्या करें इसी बातपर किसीने कहाहैः—

रोग चिकित्सा करनको वैद्योंका औतार ॥
इश्क रोगको क्या करैं वे गरीब निरधार ॥
इश्क रोगकी औषधी प्यारेहीके नैन ॥
जासू जाकी लगनहै ताही देखे चैन ॥

हेमैना ! जिससे जिसकी लगन लगी होतीहै उसकी दवा उसीके पास होतीहै, क्योंकि इस दुनियांके बीचमें यह इश्क बहुत बुरा कठिन दुःखदाई रोग है इसीसे किसी कविने कहाहैः—

इश्क बानके घावकी कठिन चिकित्सा होय ॥
जाकी जाते लगनहै ताहि लखे सुख होय ॥
इश्क तीरके घावका यतन न जाने कोय ॥
याको दुख वोही लखे जा तन लागी होय ॥

हे मैना ! इश्ककी दवा किसी हकीम वैद्यके पास नहीं है सो इन वैद्य व हकीमोंकी दवाने उस इश्कके बीमार पर कुछ असर न किया तो लाचार होकर वे बिचारे चले गये तब तो वह साहूकारजादा अपने मनमें घबराया और रोनेलगा साहूकारजादी बोली कि हे प्यारे ! आप ऐसे उदास क्यों होतेहो जो मेरा आपका इतनाही संयोग है तो आप का और मेराक्या बसहै आपको तो मुझसी स्त्री और भी बहुतसी मिलजांयगी परंतु मुझको आप सरीखे पुरुष मिलने मुश्किलहैं क्योंकि जिस दिनसे मैं आपके घरमें आईहूं उसी दिनसे आप मुझको प्राणोंसे प्यारी रखतेहो ऐसी ऐसी मुहब्बतके बढानेवालीबात बनाकर साहूकारजादेको उल्लू बना लिया वह साहूकारजादा उसकी बातोंमें आनकर उसके मक्कर और फरेबको न समझा सचहै जिन स्त्रियोंके फन्द फरेबको देवताभी नहीं जानते और बडे बडे असुर और दैत्य इनके छल छिद्रमें आनकर अपनी जान खो बैठतेहैं तो बिचारे मनुष्यकी क्या ताकतहै जो इनके चरित्रको जान सके इसीसे किसी कविने कहाहैः—

नारी नीर गंभीर नद यहां न याकी होय ॥
जो जाके मनमें बसे जान सके नहिं कोय ॥
बडे बडे ऋषि देवता नारीके बश होय ॥
बन बनमें भटकत फिरे अंत प्राण गे खोय ॥

हे मैना! इन स्त्रियोंकी महिमा बडी प्रबलहै सो इसीसे वह साहू-कारजादा उसके बसमें होगया तब वो स्त्री कहनेलगी कि हे प्यारे! मैं एक बात आपसे कहतीहूं और परमेश्वर चाहेगा तो उस्के कियेसे मेरी जान बच जायगी, मैंने सुनाहै कि तालाब पर एक साधू रहताहै और उसने हजारों आदमियोंको अच्छा कियाहै अगर किसी राहमें वह तुम्हारे पास आजावे और मुझे अच्छी कर जावे क्योंकि साधुओंको सब सामर्थ्यहै सो आप मेरा कहना मानके उसके पास जाओ और जैसे बने वैसे उसे लाओ-ये बात स्त्रीकी सुनकर साहूकारजादा उस योगीके पास गया और हाथ जोडकर कहनेलगा कि, हे स्वामी! मेरी स्त्री बीमारहै सो आप कृपा करके मेरे संग मेरे स्थान पर पधारें तब वह जोगी बोला कि हे बच्चा! हम फकीर लोग तेरी औषधि मूरी को क्या जानें हमें तो ईश्वरका भजन करना और भिक्षा-मांगकर अपना पेट भरलेना आताहै ये बात योगीकी सुनकर साहू-कार बहुत घबडाया और उसके पावोंमें गिरपडा और कहनेलगा कि हे महाराज! यह वक्त नाहीं करनेका नहींहै, क्योंकि पराये दुःखको दूर करना तो साधुओंका धर्म्म है इस तरहसे जब साहूकारजादा बहुत गिडगिडाया तब तो वह साधू उसके साथ होलिया और उस स्त्रीके पास जाकर थोडी कपटकी भभूत पढकर उसको खिलाई और थोडी सी भभूत हाथमें लेकर अपनी प्यारीके बदन पर हाथ फेरा तब थोडी देरके बाद साहूकारजादी अपने पतिसे कहने लगी कि, अब तो कुछ आराम मालूम होताहै तब तो साहूकारजादेने बाबाजीकी बहुत खा-तिरकरी तब योगी कहनेलगा कि हे बच्चा! तुम बजारको जाओ और अपने सामने बैठकर एक सोनेका जंत्र बनवा लाओ उसमें ऐसा जंत्र रखजाऊँगा कि ये फिर कभी उम्र भर बीमार न होगी- ये सुनतेही साहूकार तो बाजारको गया और पीछेसे उन दोनोंने अपने अपने मनकी मुराद पूरी की थोडी देरके बाद साहूकारभी तावीज लेकर

आगया तब उस योगीने उसमें थोडी भभूत रखकर उस स्त्रीके गलेमें बांधदी और कहा कि बच्चा ! ले अब हम अपने आश्रमको जातेहैं तब साहूकारने कहा कि आपने बडी कृपा की अब आप कृपाकर नित्य यहां दोनों वक्त भोजनकर जाया करो तब वह साधू नित्य साहूकारके यहां आने लगा सो तोता बोला कि हे मैना ! एक दिनका जिक्रहै कि साहूकार किसी कामके वास्ते किसी दूसरे गाममें गयाथा और इधर साधूने और उस स्त्रीने अपना मौका पाकर खूब जर जेवर लेकर चलनेका इरादा किया सो रातके समय वहांसे दोनों जने चल दिये. हे मैना ! देख उस साहूकारजादेने कैसी मुहब्बत की परंतु उस कमबख्त स्त्रीने अपने मनमें जरा न सोची सब माल मता लेकर चली गई. पीछेसे जब वह साहूकारजादा आया और अपनी स्त्रीको और साधूको न देखा तो जानगया कि ये योगी नहीं था ये वही बदमाश उसका यार था ये बात मनमें सोचकर अछता पछताकर बैठरहा और इधर वे दोनों वहांसे चले सो कई एक दिनके बाद एक शहरमें जाकर टिके और एक मकान किरायेका लेकर वहां रहने लगे. उस मकानके पीछे एक पठानका मकान था यह पठान नौ जवान हूरका सा बच्चा बडा स्वरूपवान था दैवयोगसे एक दिन वह स्त्री अपने मकानपर न्हानेको चढी और वह पठान भी अपने मकान पर बैठाथा ज्योंही उस स्त्रीकी नजर उसपर पडी कि देखतेही मुश्ताक होगई और वह पठानभी देखकर मोहित होगया निदान इसी तरह उन दोनोंमें मुहब्बत पैदा हुई और पठान उस स्त्रीके घर आने लगा. एक दिन पठान उस स्त्रीसे कहने लगा कि हमारी मुहब्बत इसतरह से नहीं निभेगी क्योंकि किसी न किसी दिन हमारी और तेरे खाविंदकी तकरार होजायगी इससे कोई ऐसी तजबीज करनी चाहिये जिससे यह खटका मिटे और हमारी तुम्हारी आरामसे घुटे. तब स्त्री बोली कि ये मेरा असली खाविंद नहीं है ये भी मुझको उडाकर ले

आयाहै सो इसका डर तुम बिलकुल मत करो तब वह पठान बोला कि इससे तो बहतर यह है कि आप हमारे घरमें पडजाओ ये बात पठानकी मानकर वह स्त्री उस पठानके घरमें रहने लगी इस हालको देखकर जौहरी बच्चाने बहुत गुल शोर मचाया मगर परदेशीकी कौन सुनताहै लाचार होकर उसने शहरके राजा-को अर्जी दी कि, गरीबपरवर मैं परदेशी आदमी आपके शहरमें चन्द रोजसे आनकर बसाहूं सो फलां पठानने मेरी औरत छीन लीहै और मेरे साथमें उसने बडी ज्यादती की हैं सो मैं उम्मेदवार हू कि मेरी स्त्री उस पठानसे मुझको दिलाई जाय. तब राजाने उसको बुलाया और उससे कहा कि तूने इसकी स्त्री क्यों छीन लीनी इसकी स्त्री इसको देदे तब पठान बोला कि हुजूर वह स्त्री इसकी नहीं है ये झूंठ बोलताहै तब राजाने उस औरतको बुलाया और उससे कहा सब हाल पूछा तब वह बोली कि हुजूर मैं एक साहू-कारकी औरतहूं सो कुछ दिनसे मेरी इसकी दोस्ती थी ये मुझको बातोंमें फुसलाकर उडा लायाहै और अब यहां आनकर मुझको हरू एक तरह की तकलीफ देने लगा इससे मैंने इसको छोड दिया और इस पठानके घरू में दो रोटीका सुख देखकर बैठगई हूं अब मेरी राजी इसके साथ नहीं है ये बात उस औरतकी सुनकर राजाने कहा कि ए मुसाफिर अब तुम्हारा झगडा करना मुनासिब नहीं है क्योंकि ये स्त्री जब अपने पतिकी साथी न हुई तो तेरी साथी कब होने की है किसी कविने कहाहैः—

बैत

कागजकी भस्म किन भसममनमें।
धरा खसम किन खसमन में॥

यह कहकर उसे निकाल दिया तब वह विचारा लाचार होकर चला आया तो तोता बोला कि ए मैना! भला स्त्रीकी बराबर दुनियां

में और कोई बेमुरब्बतहै ? तब मैना बोली इसका जवाब मैं तुझको देतीहूं तू कान लगाकर सुन सो अब जैसा कुछ जवाब मैना देगी वह में इसके सातवें भागमें लिखूंगा ॥

॥ इति श्रीछठवाँभाग समाप्त ॥

चौदहवाँ दास्तान मैनाका.

मैना बोली कि हे तोते ! अब मैं तेरी दास्तानका जवाब देतीहूं कान लगाकर सुन-ज्योतिषपुर नामक एकबडा शहर था जो अति मनोहर और रमणीकथा जिसके चारों तरफ लालपत्थरका परकोटा बनाहुआ था राजा और प्रजा दोनों चैनसे रहतेथे राजा भद्रसेन राजकरता था वह राजा बडा प्रतापी और धर्मात्मा था उसके एक बेटा बडा चतुर व स्वरूपवान था उसके रूपकी बराबर और कोई नजरमें नहीं आताथा मानो साक्षात् कामदेवही का अवतार था उनका नाम रणधीरकुमारथा और उसकी स्त्रीका नाम चम्पावती था वह स्त्रीभी अति स्वरूपवती और गुणवती थी और हमेशा पतिकी आज्ञामें तत्पर रहा करतीथी इन दोनों स्त्री पुरुषोंमें आपसमें ऐसा स्नेह था कि एक को वगैर दूसरेके देखे चैन नहीं पडताथा सो हे तोता ! एकदिनका जिक्र है कि रणधीरकुमार अपने मित्र चन्द्रगुप्तको साथ लेकर घोडेपर सवार होकर एक जंगलके वास्ते शिकार खेलनेको गया और वहां जाकर एक हिरणके पीछे इन दोनों यारोंनें अपने अपने घोडे फेंके वह हिरनभी दोनों राजकुमारोंको पीछे आते देखकर अपने प्राणोंके बचानेके वास्ते जंगलकी तरफ भागा जब भागते भागते हिरण बहुत दूर निकल गया तब चन्द्रगुप्त तो रहगया परंतु राजकुमार उसके पीछे घोडा फेंके चला गया यहांतक कि चलते २ वह हिरन एक मनोहर जंगलमें जाकर एक सघन वनमें छिपगया और राजकुमार भी उस हिरनको गायब देखकर लाचार हो खडा होगया उस वक्त राजकुमारको रस्तेकी हरारतसे प्यासने ऐसासताया

कि मोरे प्यासके उसका जी घबडाने लगा और वह उस वनमें पानी की तलाशमें इधर उधर घूमने लगा इतनेमें आगे बढकर उसकी एक सरोवर पर नज़र पडी कि जिसके चारों तरफ संगमरमरके और स्याह मूसेके मनोहर घाट बने हुए अति सुंदर मालूम देते थे और हरएक घाटके बराबर जालियोंके काम जिनमें होरहे हैं ऐसे मनोहर बुर्ज शोभा देरहेथे और घाटोंके ऊपर हर जगह बारहदरी बनी हुईथी- कि जिनमें सच्चे नगीने और सोनेके पानीसे तरह तरहके बेल बूटे कटरहेथे सरोवरमें कमलके फूल खिलरहेथे जिनसे उस निर्मल जल की शोभा और ही हो रहीथी इसप्रकार उत्तम सरोवरको देखकर राज-कुमार अति प्रसन्न हो कहने लगा कि, देखो यह कैसा सुन्दर बनहै और फिर इसमें कैसा रमणीक सरोवरहै नाना प्रकारके वृक्षोंसे शोभा-यमान होरहाहै तरह तरह के पक्षियोंके शब्दोंसे कैसा गूँज रहाहै मानों सब वृक्ष आपसमें वार्तालाप कर रहेहैं और इन वृक्षोंका स्पर्श कर शी-तल मंद पवन समस्त शरीरके तापको हरताहै ये विचारकर राजकुमार उस सरोवरमें से पानी पी हाथ मुँह धोकर ऊपर आया और ठंढी ठंढी छायामें टहलने लगा इतनेमें आगे बढकर क्या देखताहै कि एक बडा मनोहर बाग बना हुआहै और उसके चारों तरफ संगीन दीवार खिंची हुई है वह बाग अनेक प्रकारके वृक्षोंसे शोभायमानहोरहाहै राजकुमार अपने घोडेको बागके दरवाजे पर बांधकर आप भीतर गया और सैर करनेलगा- वहां क्या देखताहै चारों तरफ रोसोंके किनारे बडे बडे आम जामन अमरूद अनार आदि फलोंके वृक्ष लगे हैं और बीचकी क्यारियोंमें चम्पा चमेली रायबेल केतकीमोतिया आदिके छोटेछोटे वृक्षोंकी शोभा होरहीहै और ठौर ठौर वृक्षोंपर मोर चकोर कोयल आदि पक्षीगण मीठे २ स्वरोंसे गुंजार कररहेहैं और कहीं कहीं वृक्षों-पर सारस हंस कपोत अनेक शब्दोंको कर उस बागको शोभायमान कररहेहैं और कहीं कहीं मालती आदिके पेडोंपर भौंरा आदिके

झुंडके झुंड गुंजार कररहेहैं इस आनंदको देखकर राजकुमार आगेको बढा सो क्या देखताहै कि पेडोंकी ओटमेंसे कुछ स्त्रियोंकी मधुरमधुर आवाज़ सुनाई देतीहै ये जानकर राजकुमार जिधरसे स्त्रियोंकी आवाज आतीथी उधर हीको चल दिया। थोडीदूर जाकर क्या देखताहै कि एक रोशपर तीन स्त्रियां फूलोंकी क्यारियोंमें हाथमें हाथ देकर टहल रही हैं उनको देखकर राजकुमार मोहित होकर गिरने लगा परंतुहिम्मतबांधकर सम्हलकर खडा रहाऔर मनमें कहनेलगा कि ये स्त्री कौनहैं इनके कैसी मनोहर चितवन है ऐसी स्त्री तो राजाके रनवासमेंभी नहींहैं इनकेरूपकी शोभाके सामने इस बागकी शोभा हीन मालूम देतीहै और इन तीनोंमें से बीचकी स्त्रीतो मानो साक्षात कामदेवकी स्त्री रतीही प्रगट होकर इस बागकी शोभाको शर्मिंदा करनेको आई है-क्योंकि इसके नेत्रोंके आगे कमलके पुष्प सरोवरमें गोता मारजातेहैं नासिकाको देखके बिचारे तोते उडजातेहैं और कपोलोंकी शोभाको देखकर नारंगियां पेडोंसे टूट टूट कर जमीन पर गिरकर तडफतीहैं और होठोंको देखकर कुंदरू कुम्हिलातीहैं और दाँतोंको देख कुन्दकली ठिठका जाती है और इसकी गोरी गोरी भुजाओंको देख कर चम्पाका पेड शर्मिंदा होताहै और इसके मुखकी मधुरताको देखकर चन्द्रमा लज्जित होकर श्यामता धारण कररहाहै ऐसी स्वरूपवती स्त्री तो आजतक मैंने कभी नहीं देखीथी ये स्त्रीहै या देवकन्याहै या अप्सराहै या नागकन्याहै ये कौनहै गिलमाहै या गणिकाहै इसका भेद तो जरूर जानना चाहिये क्योंकि इसके भेदके जाने बिना मुझे कल नहीं पडेगी ये बात विचारकर राजकुमार आगे बढा तब उस स्त्रीकी निगाह उसपर पडी और चार नजरें हुईं तो वहभी राजकुमारको देखकर मोहित होगई परंतु अपनी सखियोंके भयसे कुछ कह न सकी और उनका हाथ छोडकर दूसरी कियारीमें चलीगई और चम्पाके

पेडकी ओटमें छिपकर राजकुमारको देखनेलगी और अपनी सखियोंसे कहने लगी कि, हे सखियो ! तुम देखो तो सही सूर्य्यके समान तेजवाला और कामदेवके समान रूपवाला ये कौन पुरुष चला आताहै ? इतनेमे राजकुमार सखियोंके पास आगया और पूछनेलगा कि ये बाग किसकाहै और तुम कौनहो जो यह एकान्त विचरतीहो और तुम्हारी सखीका क्या नामहै. ये बात राजकुमारकी सुनकर वह सखी बोली कि हे विदेशी ! ये बाग महाराज खड्गसेनका है और यह उनकी बेटीहै और इनका नाम चम्पकलताहै और हम दोनों इसकी सहेलीहैं जिसमें मेरा नाम तो चित्ररेखाहै और दूसरीका नाम मोहिनीहै हमारी सखी आज वसन्तऋतु जानकर अपने बागकी सैर करनेको आईहैं ये बात सखियोंकी सुनकर राजकुमार कहनेलगा कि आपका कहना सचहै जैसा आपकी सखीका नामहै वैसाही रूप गुण भी है ॥

दोहा

बिन भूषणही सोहही, चतुर नारकर भाव ।
चहिये नाहिं अँगूरको, मिश्री मधुर मिलाव ॥

हे सखी ! अंगूरमें मिश्री आदि मधुर पदार्थके मिलानेकी चाह नहीं रहती और जिनके नेत्र कमलके खिले दलके समान कानोंको छुए लेतेहैं उनमें अंजन क्या अथवा जो मुख चन्द्रमाको लजाताहै उस पर तिलक लगाना क्या ये तो वैसेही रूपके समुद्रसे लबालब भररहीहैं इसके शरीरमें गहनेकी क्या जरूरतहै परंतु लौकिक चालहै नहीं तो फूली हुई पीत चमेलीको किसने गहने पहनायेहैं इससे आपका कहना सचहै क्योंकि जैसा आपकी सखीका नामहै वैसीही चम्पाके पुष्पके समान इसकी कोमल देहहै यहां तो राजकुमार यह बात कर रहाथा कि इतनेमें चम्पकलताने बडी मधुरताके साथ मुसकुरा कर। चित्ररेखा और मोहिनीको आवाज दी कि अरी सखियो तुम

यहांआओ देखो मुझे ये पापीबडा दुःख देते हैं नईचमेलीऔरमालती को छोडकर मेरेही मुख पर बार बार गूंजताहै मैं इसको बारबार हटाती हूं परंतु यह ढीठ भौंरा नहीं मानता इससे चलो अंतेहीचलकरबैठें ऐसे कहकर चम्पकलता दूसरीक्यारीमें जाकर खड़ी होगई तब वहांभी भौंराओंके झुंडके झुंड उडने लगे.तब चम्पकलता मुसकुराकरकेअपनी सखियोंसे कहने लगी कि देखो सखी यहां भी इन बजमारेभौंराओंने मेरा पीछा न छोडा इनसे मुझे बचाओ यों कहकर मंद २ मुसक्याय कर चुप होगई इन बातोंको सुनकर राजकुमार अपने मनमें कहने लगा कि मैंने अनेक बार नगरकी स्त्रियोंको उडते भौंरोंसे कटाक्षकर के मुख मोडते देखा है परंतु सदा उनकी बनावटही पाई गई किन्तु इस चन्द्रवदनीके भोलापन करके भृकुटी मरोडने और तिरछी चितवन करनेसे तथा मंद मंद मुसक्यानेसे सीधायन और भोलापन मालूम होताहै और सत्यही डरीसी मालूम होतीहै हे भौंराओ ! बडे बडभागीहो जो इन चंचल नेत्रोंकी कोरका स्पर्श करतेहो और प्यारीके कर्णफूल आदि आभूषणों सहित कानोंके निकट जाय ऐसे गुंजारतेहो मानों मुझ विरहीका कुछ संदेशा सुनाते हो अथवा हमारी सिफारिश करतेहो जबतक ये चम्पकवदनी तुम्हारे उडानेके लिये अपने कोमल कोमल चम्पाकी डार सदृश हाथोंको हिलातीहै तब तक तुम लाल अमृत भरे होठोंसे रस लेकर खुश होकर भाग जातेहो इससे हे भँवरो ! इस जगमें आपकाही जीना सफलहै क्योंकि जिन नारंगीसे कपोलोंको देखकर सैकडों बिरही मन ललचा ललचा कर रहजातेहैं और अपने दुर्भाग्यपर अफसोस करते हैं उन्हीं कपोलोंको अपनी अपनी इच्छानुसार स्पर्श करते हो ऐसे अनेक प्रकारसों अपने मनही मनमें राजकुमार भौंराओंकी प्रशंसा करने लगा और फिर अपने मनमें सोचने लगा कि अरे मूर्ख ! अभी जल्दी मतकर क्योंकि किसी कविने कहाहै-.

कुंडलिया

बिना बिचारे जो करे, सो पीछे पछिताय।
काम बिगारे आपनो, जगमें होय हँसाय॥
जगमें होय हँसाय, चित्तमें चैन न आवै॥
खान पान सनमान, राग रंग मनहिं न भावै॥
कहैं गिरधर कविराय, दुःख कछु टरत न टारे॥
खटकतहै जिय माहिं, किये जो बिना बिचारे॥

इस प्रकार राजकुमार अपने दिलमें विचारकर चुप खडा रहा और उधर रानी चम्पकलता अपनी सखियोंसे फिर बोली कि हे सखियो! यहां भी भौंरा मेरा पीछा नहीं छोडते अब में कहां जाऊँ यों कहकर वहांसे उठकर चली और नीची निगाहसे राजकुमारको देखती हुई अपनी सखियोंसे कहनेलगी कि अरी मेरी प्यारी सखियो! इन पापी भौंराओंसे मुझे बचाओ ये बात चम्पकलताकी सुनकर सखियोंने मोरछल आदिसे बहुतेरा भौंराओंको उडाया परंतु भौंरा कब मानतेहैं किसी कविने कहाहैः—

दोहा

जहँ सुगंध भौंरा तहां, उडत रहे कर गीत।
भौंरा लोभी रूपको, करि सुगंधसों प्रीत॥
करि सुगंधसों प्रीति अति, बैठत कमलन जाय।
अस्त भये रविके भ्रमर, रहियत प्राण गमाय॥

इन भौंरोंसे दुःखित होकर चम्पकलता वहांसे उठ चलनेलगी तब राजकुमार प्यारीके ऐसे मधुर मधुर वचनोंको सुन अपनी धीरताको छोड उसके सामने आ अपने रूमालसे भौंराओंको उडानेलगा और कहने लगा कि हेप्राणप्यारी! अब तुम किसी बातकी चिन्तामतकरो में आपकी रक्षाकरनेकेवास्ते हाजिरहूं क्योंकि राजाका धर्म्महै कि भयभीतकी रक्षा करै ये बात राजकुमारकी सुनकर चम्पकलता लज्जाकी

मारी नीचीगर्दन करकेचम्पाके पेडकेनीचे चलीगई तब पहली सखी चित्ररेखाबोली कि हे राजकुमारी! आप अलगक्यों चलीगईहो देखो ये भी कोई राजकुमारहैं आपके बागमें आये हैं सो इनका अनादर न करना चाहिये ऐसे अनोखे पाहुनेका आदर करनाही योग्यहै ये बात चित्ररेखाकी सुनकर चम्पकलता ने इशारेसे कहा कि अच्छा इनको बुलालो तब चित्ररेखा बोली कि हे परदेशी! कुछ जलपान कर ठंडे हूजिये. तब राजकुमार बोला कि हमारा तो कलेजा आपकी मीठी मीठी बातोंके सुननेसे ही ठंढा होरहाहै तब चित्ररेखाने गलीचा बिछाया और कहने लगीं कि आओ विदेशी आप इसपर बैठिये घडी एक आरामकरो तब राजकुमार बोला कि आओ आपभी बैठो यहसुनकर सब बैठ गईं। बैठनेपर चित्ररेखा बोली कि आपकास्थान कहां है और आपका नाम क्याहै और आपकौनसेराजाके राजकुमारहो और आपका यहां किस वजहसे आना हुआ?तब राजकुमार कहने लगा कि मेरा देश ज्योतिष्पुरहै और भद्रसेन राजाका मैं बेटाहूं और रणधीरसिंह मेरा नामहै आज सबेरे ही मैं और मेरा यार दोनों कुछ फौज लेकर शिकार खेलनेको आयेथे सो हम दोनों यारोंने अपने अपने घोडे हिरनके पीछे फेंके हमारे यारका घोडा तो थककर पीछे रहगया और हम उस हिरनके पीछे चले आये और सब फौजभी हमारी पीछे रहगई यहां आनकर हिरन इस वनमें गायब होगया तब मैं लाचार होकर लौट चला तो रास्तेमें आपका बाग नजर आया उस रास्तेकी थकावट दूर करनेके लिये मैं यहां इस बागके भीतर आया था कि आपसे मुलाकात होगई अब मैंने तो अपना सारा हाल आपके सामने कहा परंतु अब आपभी अपनी राजदुलारीका हाल कहो तब चित्ररेखा बोली कि हे राजकुमार! यह राजा जालिमसिंहकी बेटीहै राजा इनका व्याह नहीं करताहै और इनके वास्ते एक न्यारा महल बनवा दियाहै जिसमें यह रहतीहै और यह बगीचाभी

इन्हींके लिये बनवा दियाहै इनके मकानपर भी बडे बडे वीरोंका पहराहै यह कहीं नहीं निकलने पाती हैं सिर्फ छठेमहीना एक पहरके वास्ते इस बागमें सैर करनेको आतीहैं यह सुन राजकुमार बोला कि हे चित्ररेखा ! ऐसा तुम्हारी सखीने क्या कसूर कियाहैजिससेइनका पिता इनका व्याह नहीं करते तब चित्ररेखा बोली कि हे राजकुमार ! इनके पिताके पास एक नारंगोके समान मोतीहै सो वह यह कहताहै कि जो शख्स इस मोतीका जोडा मिला देगा उसे मैं अपनी लडकी दूंगा,ये बात सुनकर बहुतसे राजकुमार यहां आये और उस मोतीकी तलाशमें गये परन्तु उनका आजतक पता न लगा कि वे कहां गायब होगये। इसीसे इनका व्याह अबतक नहीं हुआ। मैना बोली कि ऐ तोते! इधर तो चित्ररेखा और राजकुमार दोनों बतला रहेथे और उधर राजकुमारके रूपको देखकर चंपकलता मोहित होकर अपनी सखियों सेबोली कि हेसखियो !अब सायंकालका समय होआया है महल को चलिये क्योंकि पिता सुन पावेंगे तो जाने क्या करेंगे। यह कह कर रानी चम्पकलता चलनेको तैयार हुई और राजकुमारको सुनाकर और एक लम्बी आह भरकर ये पद गाने लगीः-

राग चैतीगौरी

मनभावन भई सांझ सुहाई॥
दीपक प्रकटकमल सकुचाने, प्रफुलित कमुदिनि निस ढिग आई।
शशि प्रकाश प्रकटत तारागण, उगन लगे नभमें अकुलाई॥
साजत सेज सजें युवती जल, पीतम हित हिये हेत बढाई।
फूले रैन फूल बागनमें, शीतल पवन चली सुखदाई॥
क्योंकर रैन कटै बिरहिनकी, कामिन शंक उठत दुखदाई॥ १॥

यह कहकरचम्पकलता चलनेको तैयार हुई तब राजकुमार उसके बिरहमें निराश होकर जमीन पर गिर पडा और लम्बी सांसलेनेलगा

दोहा

हाय कहा बिधिना करी, मिलकर बिछुडी जान ।
ताहू पै हठ करतहैं, निकसत बैरी प्राण ॥

यह दोहा कहकर चुप होगया और लम्बी सांस भरने लगा राजकुमारकी यह दशा देखकर चम्पकलताके दिलमें भी मुहब्बतने जोश खाया परन्तु सखियोंके डरके मारे कुछ न कह सकी और अपनी दूसरी सखी मोहनीसे कहा कि हेसखी ! मैं तो अपने महलको जाती हूं और तू इस विदेशीको अतर गुलाब छिडककर होश कराये दम दिलासा देकर चली आइयो यह कहकर चम्पकलता राजकुमारके विरहमें व्याकुलहो फिर फिर कर पीछे देखती हुई अपने महलको चलीगई और यहां मोहिनीने गुलाब केवडा छिडककर राजकुमारको होश कराया तब राजकुमार घबडाकर मोहिनीसे पूछनेलगा कि हे सखी! तुम्हारी प्यारी सखी मेरे मनको चुराके किधरगईहै यह कहकर सिडीकी तरह इधर उधर दौडने लगा और ये शेर पढने लगाः-

शेर

इश्कमें प्यारीके मैं जंगल भटकता जाउँगा ।
दौलतो हशमतसे मैं दामन झपकता जाउँगा ॥
गरचे नहीं मालूमहै मुझको मकानें दिलरुवा ।
रास्तेमें जो मिले उससे फटकता जाउँगा ॥
जीस्तमें गरचे न होवे दीखना महबूबका ।
द्वार पर मनसूरसा सूलीफटकतापै जाउँगा ॥
दिलके टुकडे होगये और जान लब पर आगई ।
गममें उस गुलरूके शिर अपना पटकता जाउँगा ॥

ये शेर पढकर फिर एक पेडके नीचे गिरपडा और बडी आह भर कर कहनेलगा कि हे प्राणप्यारी ! मुझे अकेला छोडकर कहां चलीगई हे प्यारी चम्पकलता! क्या यह बगीचा आपने इसी बिरहके वास्ते

बनाया था कि जिसमें आनकर मुझ विचारे गरीबकी यह गति भई अरे पापी प्राण तुम बडे पापीहो जो प्यारीके बिछुडने पर इस देहसे नहीं निकलते हो हाय दैव तू बडा निर्दयीहै तुझे ऐसी विपत मुझको देना लाजिम नहीं था अरे मन तू बडापापीहै तू प्राणप्यारीके जानेके समय ऐसा बेचेत होगया कि उसकी तिरछी तिरछी चितवन और मंद मंद मुसक्यान भी न देखी और हे पापी प्राण ! तुम बडे कठोरहो देखो तुम्हारे पापमें प्राणप्यारी चली गई और तुम उसके साथ नहीं गये हाय इश्क तू बडा बुरा रोगहै परमेश्वर करे ये रोग किसीको न लगे जिस जिस के ये रोग लगाहैउन्होंने अपना खानपान सब बिसरादियाहै इसीसे यह कहावत चली आतीहैः—

दोहा

इश्क करैं सो बावरे, कर छोडें सो कूर ।
इश्क चिमनमें जायके, छानी जगकी धूर ॥
मजनूने कीया इशक, उस लैलीके सात ।
राजपाट सब तज दिया, खाक रमाई गात ॥
फँसा हीरके इश्कमें, रांझेसा महबूब ।
तख्त शहाना तज दिया, खाक उडाई खूब ॥
फँसा इश्कके फन्दमें, जो कोइ चतुर सुजान ।
आखिरको बदनामहो, खोई अपनी जान ॥

इस प्रकार कहकर और बडी आह भरकर कहने लगा कि, अरे मुहब्बत तेरा बुरा हो तैंने मुझे राजपाट करते हुए किस जुल्ममें फँसा दिया है हे प्राणप्यारी चम्पावती ! दर्शन दे नहीं तो मेरे जीमें ऐसा आता है कि अपना गला घोट डालूं हाय मैं कैसा कम्बख्त हूं कि मैं अपनी प्राणप्यारी चम्पकबदनी चम्पकलताका दर्शन नहीं पाता अरे वृक्षो ! कहीं तुमनेही चम्पकलता मेरे मनके हरनेवाली देखी होय तो कहो आज आपके भी मनमाने दाँव पूरे होयगे, जिससे आप

मेरी प्राणप्यारीको नहीं बताते और कोयल कमबख्तों तुम इस पेड पर बैठकर मीठे मीठे शब्दोंको सुना मेरा कलेजा क्यों चाक करती हो ! हाय प्राणप्यारी ! देखो आपके सामने ये बाग़के तोता मैना आदि पक्षीगण कैसे चुपके बैठे थे और आपके बिछुडनेसे अब मुझे बलहीन जानकर अपनी बोली गोलीके समान मारते हैं. हे प्राणप्यारी ! जैसे मैंने आपकी भौंरोंसे रक्षाकरी थी तैसेही आप मेरी इन पक्षीगणोंसे रक्षा करो. हे चम्पकवदनी! अब तेरा वह कोमल स्वभाव कहां गया और किसके कहनेमें आनकर ऐसी कठोर होगई कि मुझ बटोहीको अपना रूपरस नहीं पिलाती मैना बोली कि हे तोता ! इस-प्रकार अनेकों तरहके विलाप राजकुमार करनेलगा मोहिनी सखी राजकुमारकी यह दशा देखकर आँखोंमें आंसू भरकर कहने लगीहे राजकुमार! धीरज धरो इतने क्यों अधीर होतेहो किसी दिन परमेश्वर कृपा करैगा तो फिर भी तुम्हारा मिलाप होजायगा परंतु सब काम धीरजसे होते हैं आप अपने मनमें धीरज बांधो यह सुनकर राजकुमार बोला कि मोहिनी मैं किसतरह धीरज बांधूं मुझे तो उसकी भोली भोली चितवन मंद मंद मुसक्यान मोतीसे दशनोंकी हँसन व मृगकीसी चितवन छेदे डालतीहै-यों कहकर राजकुमार ये कवित्त पढनेलगाः-

सवैया

नैन विशाल मनोहर सूरत मूरत याकी लगे मन भाई ।
बैनन माहिं सुधा वर्षे अँग अंगन छाय रही तरुणाई ॥
बेसर भाल बिराजत माल सुमान मरे मन लेत चुराई ।
रंगी कहै छबि आन बसी उर भूलत नाहिन क्यों हू भुलाई ॥
मंद गयन्दकी चाल चले कटि किंकनी नेवरकी धुन बाजे ।
मोतीके हारनमें हियरा हुलसात हुलास विराजत साजे ॥
सारी लसें अंगकोमलमें सुख अंगकी सारी है यों छबि छाजै ।
पूरन चन्द पियूप मनों करिकै परिवेपकी रेख बिराजै ॥

दोहा

लाल अधर अंजन दृगन, कर मेहँदी छबि देत।
श्याम बिन्द मस्तक लसे, कामीको मन लेत॥
हँसन दशनकी फँसन लखि, मुख भँवरनकी भीर।
ऐसी नार निहारके, को न तजत उर धीर॥

सवैया

हाथमें हाथ दिये तुम्हरे वह फूल रही जिम कुन्दकली।
मतिराम सुवासते आवत नारी निवारत भौंरनकी अवली॥
लखके मम लोचनसें सकुची कह्यो चाहत आपन ओट लली।
चित चोर लिये मुखमोर त्रिया मुख मारे कछू मुसिक्याय चली।२

ये सवैया राजकुमारकी सुनकर मोहिनीनें जान लिया कि मनमें ये राजकुमार अपने तन मनसे हमारी प्यारी सखीके ऊपर मोहित हुआहै और हमारी राजदुलारीके हृदयमेंभी इसकी मोहिनी सूरत गईहै और इन दोनोंकी जोडी भी परमेश्वरनें ठीकही बनाई है परन्तु उसके बापके सामने इनका मनोरथ सुफल होना मुश्किलहै ये बात विचारकर दम दिलासा दे राजकुमारसे कहने लगी कि हे राजकुमार! आप इस प्रेमके फन्दमें मत पडो अपने मनसे इस ख्यालको भुलाओ और संतोष करके अपने घरको जाओ ये बात मोहिनी सखीकी सुनकर राजकुमार ये कवित्त पढने लगाः–

वह चितवन वह सुंदर कपोल द्युति वह दशनन छबि बिज्जुकी धरतहै। वह होठ लाली वह नासिका सकोरनमें वह हावभावके सुकौतुक करतहै॥ कहें मनीराम छबि बरण सके को वह रतिके सरस मन मुनिको हरतहै। वह मुसिक्यान युग भौंहन कमान द्युति वह बतरान ना बिसारी ना बिसरति है॥

सवैया

गोरो सो रंग उमंग भरो चित अंग अनंगको मंत्र जगायो ।
काजर रेख खुली दृगमें दोउ भौंहन काम कमान चढायो ॥
आवन बोलनि डोलनि ताकी चढी चितमें अति चोप बढायो ।
सुन्दर रूप सो नैननमें बस्यो भूलत नाहिन क्योंहूं भुलायो ॥

दोहा

शशि सम मुखदृगकुमुदसे, कर पद कमल समान ।
चम्पा सो तन देखके, विकल भये मम प्रान ॥
कहा करूं कैसीकरूं, मानत नाहीं नैन ।
प्यारीके दर्शन बिना, तलफतहूँ दिनरैन ॥ १ ॥

ये विरहके भरे बचन राजकुमारके सुनकर मोहिनीने मनमें जान लिया कि चम्पकलताके मिले बिना इसको किसी तहरसे चैन नहीं पडेगा इसलिये राजकुमारसे कहनेलगी कि हे राजकुमार! आप धीर ज धरो आपकी सारी व्यथा दूर करनेका उपाय करूंगी तुम विश्वास रक्खो तब राजकुमार उस मोहिनीके चरणोंमें गिरपडा और हाथ जोडकर कहने लगा कि, हे मोहिनी! जो तू मुझे प्यारीसे मिलावेगी तो मुझे प्राणदान देगी और मैं सारी उम्र तेरा ताबेदार रहूंगा. तब मोहिनी कहनेलगी कि, हे राजकुमार! अब मैं महलमें जाकर अपनी सखीसे तुम्हारे विरहका सब हाल कहूंगी अब तुम किसी बात की चिन्ता मत करो. यों कहकर मोहिनी चलनेको तैयार हुई तब राजकुमार बोला कि हे मोहिनी! जो तुम मुझ विरहीको अकेला छोडकर जातीहो तो एक पत्र मैं आपको लिखकर देताहूं सो तुम उस पत्रको अपनी प्यारीको देदेना तब मोहिनी बोली बहुत अच्छा तब राजकुमारने यह सवैया लिखकर दिया:-

मेरे हू नैन न नेम लियो यह तेरे निहार बिना न रहूंगो ।
कोऊ कछू कहियों हंसियो किन मैं तो सनेह सदा निबहूंगो ॥

तासों लग्यो मन मोहन होयके काहूंसों ये बतियां न कहूंगो ।
फेर कहूं बनिहै मिलवो तब मोद महा उर मांहि लहूंगो ॥

सवैया

क्योंहूं नहीं बिसरे निशि वासर मंद हँसी मुख चन्द उजारी ।
त्योंही दियो अति नेहसें देहकी दीप कला सम दीखत न्यारी ॥
तेरो हि रूप बस्यौ हिय भीतर आवत नारी न और अंध्यारी ।
नैनन बैनन में हूं तुही मोहि लाग रही अब प्राण पियारी ॥

दोहा

सपनेहू कीयो नहीं, मैं तेरो अपराध ।
कौन चूक उर धारके, गई मौनको साध ॥

ये पत्र लिखकर मोहिनीको दिया तब मोहिनी तो उस पत्रको लेकर चलीगई और जो राजकुमार उस बागमें बावलेकी तरह घूमने लगा और प्यारीके शोकमें मग्न होकर हा प्यारी! २पुकारनेलगा इसकी आवाज सुनकर बागकी मालिन आई और उसे देखकर कहने लगी कि,अरे तू सिडी साकौनहै ? जो संध्याके समय इस राजाके जनाने बागमें घुस आया है तेरी यही खैरहै कि तू इस बागसे निकल जा नहीं तो मारे कोडोंके तेरी खाल उडाऊंगी.ये बात मालिनकी सुनकर राजकुमार एक आह भरकर कहने लगा कि हे ईश्वर ! जिस बागको हम आरामका भवन समझते थे वह तो केवल आफतका समुद्र नजर आया और जो जो वृक्ष प्यारी चम्पकलताके छूनेसे अपना धन्य भाग जानकर खिले जाते थे वे अब मुझको बन डराते हैं अरे निर्दयीबाग ! क्या तुम्हें मुझ ऐसे गरीब विरहियोंके प्राण लेनेके वास्ते किसी कारीगरने बनाया था?अरे ओ बेपीर कारीगर! तेरी इस कारीगरी को धिक्कार है क्यों कि, न तो तू ऐसा बाग बनाता और न मेरे प्राणोंके हरनेवाली प्यारी चम्पकलता इस बागकी सैर

करनेको आती और न मेरे प्राण इश्कके जालमें फँसते-अरे कम्बख्त कारीगर! कहीं तैने इन क्यारियोंमें ही तो जाल नहीं बिछायाहै यों कहता हुआ बागसे बाहर आया और चम्पकलताके फिकरमें घूमने लगा. इतनेमें रात ज्यादा होगई तो थककर एक पेडके नीचे बैठगया और चन्द्रमाको देखकर अपनी प्यारी चन्द्रमुखी चम्पकलताकी याद करके यह दोहा पढने लगाः–

दोहा

अहो शशी तुमसे अधिक, मम प्यारीको गात ।
ताहि देख सरमाय तुम, निशि दिन छिप छिप जात ॥
जब प्यारी महलन गई, तब तुम प्रगटे आय ।
मो बिरहीपै करतहो, दूनो जोर जताय ॥

मैंना बोली ऐ तोते! इसप्रकार बिरहमें व्याकुल तडफते तडफते राजकुमारको सारी रात बीती फिर सुबह होतेही इधर उधर घूमने लगा इतनेहीमें उसका यारभी सब सिपाहियोंको साथ लेकर ढूँढता हुआ उसी बागके पास आ निकला वह राजकुमारका यह हाल देख कर कहने लगा कि हे मित्र! तुम्हारा ये क्या हाल हुआ घोडा आपका कहां गया हम तुमको देखते देखते हैरान होगये अब बड़ी मुशकील-से आपका पता लगाहै हे मित्र! अपने दिलका हाल मुझसे कहो कि आप उदास क्यों होरहे हो? तब राजकुमार ये शैर पढने लगाः–

न बोलो कोई मुझसे इस दम भला ।
गिरफ्तारहूं इश्कमें मुबतिला ॥
मेरी जान मुझसे बिछट जो गई ।
लगा नैन मुझसे उछट जो गई ॥
बिना देखे मुझसे नहीं चैन है ।
गई मुझसो जबसे लडा नैन है ॥
तडफताहूं ज्यों मीन जल बिन मरे ।

न उसके बिना दिल ये धीरज धरे ॥
फँसाया मेरा दिल दिखाके अँदा।
उसी वक्त से तो हुआ मैं फिदा ॥

इस तरह इस शैरको पढकर खामोश होगया और आहकी सांस भरनेलगा तब राजकुमारका यहहाल देखकर अपने मनमें जाना कि ये मूर्ख किसी स्त्रीपर आशक हुआहै यह बात जानकर राजकुमारसे कहने लगा कि हे मित्र! तुम राजकुमार होकर ऐसे स्त्रियोंपर अधीर होतेहो आप सारा हाल मुझसे कहिये कि वह स्त्री कौनसीहै जिसपर आप मोहित होरहेहो, देखो परमेश्वरने आपके घरमें एक चन्द्रकीर्ति रानी ऐसी दी है कि,उसके बराबर इस दुनियांमें दूसरी स्त्री नहीं है फिर आप ऐसी स्त्रीको छोडकर दूसरी औरतपर मोहित होकर बेवश हुए जातेहो यह बात अच्छी नहीं क्योंकि राजोंका धर्म्म ये नहीं है आपका धर्म्म साहस और धीरता धारणकरनेका है ये बात मित्रकी सुनकर राजकुमार ये दोहा कहने लगाः—

दोहा

धर्म्म धीर तबही तलक, जब तक लखी न नार।
नार नैनके मिलत ही ,साहस देत बिसार ॥
जबतक तन लागे नहीं, नारी दृगनके बान।
तबही तक वह बन रह्यो, पण्डित चतुर सुजान ॥
जबतक तन लागे नहीं, चतुर नार दृग तीर।
तबही तक जाने नहीं, बिरही मनकी पीर ॥

हे मित्र! आपभी तभीतक चतुरहो और बीर हो जबतक उस चम्पकलताके मदभरे नैननकी कोर आपके कलेजेतक नहीं पहुँचतीहै।

दोहा

नारी नैनकी मारते, बचे न कोई बीर।
बडे बडे जोधा गिरे, लगत नार दृग तीर ॥

सो हे मित्र ! जो आपके हृदयमें उसके नैनोंकी कोर पहुँच जाती तो आपभी मुझसे ज्यादा सिडी होकर जंगलोंमें भटकते फिरते तब वजीरजादा बोला कि हे मित्र! ऐसी क्या इन्द्रकी अप्सरा थी यादेवकन्या थी जिसको देखकर तुम ऐसे अधीर होगयेहो तब राजकुमार बोला कि यार अब मैं तुमसे उसकी देहका वर्णन करताहूं तुम सुनो।

दोहा

गोरा तन शशि सम सुघड, नवल वैस वह बाल ।
दृग खंजन अंजनभरे, कछुक गौर कछु लाल ॥
कुच कुमकुम मन लसत अति, काम केलिके पुंज ।
मृग मदके लवलेंसते, करत भँवर बहु गुंज ॥
कमलकली सम कर ललित, जंघ केलि सम देख ।
उदर नाभि गंभीर अति, परी त्रवलिका रेख ॥
ललित कपोल सुगोल युग, कछुक अरुणता धार ॥
बिरही के मन बस करन, राखो नार समार ॥
कुंदकली सम अधर युग, रही सु अति छबि छाय ।
सुघर दशन को हसन लखि, कामी काम जगाय॥
भृकुटी धनु सुर राजको, ता बिच बेंदी श्याम ।
ताहि लखत को बीर अस, जिहि न सतावे काम॥
सजी पीति सारी सरस, जुगल जंग कह घेर।
सो जनु कंचन खम्भसों, मिली मालती फेर ॥
पहिर रही मणि किंकणी, छीन सुकटि तट लाय ।
सो सिंगार मंडप बिधी, बंदन माल सहाय ॥
गोरे कर कारी चुरी, चुन पहिराई ताहि ।
मानों नागन लिपट रहि, चन्दन विरवा आय ॥
कुच उतंग कंचुक कसी, करत भँवर गुंजार ।
मानों है बुरजी सरस, रची आप करतार ॥

किस्सा

सो हे मित्र! मैं उसके अंगका कहां तक वर्णन करूं उसका रूप केवल देखनेसे मालूम होताहै तब वजीरजादेने कहा कि हे मित्र! अब आपके कहनेसे हमने जान लिया कि वह स्त्री नहीं थी कोई देवकन्याथी सो आपको छलनेके वास्ते आई थी आप उसके रूपके जाल में फँसकर छलको नहीं पहँचान सके खैर ये भी अच्छा हुआ कि वह आपको उडाकर न लेगई नहीं तो हम सारी मुल्ककी राख छानते तो भी आपकी शकल नहीं दीखती. ये बात वजीरजादेकी सुनकर राजकुमार बोला कि हे मित्र! वह देवकन्या नहीं थी वह नागपुरके राजा जालिमसिंहकी बेटीहै और उस राजाके पास एक नारंगीके समान मोतीहै सो उस राजाका यह प्रण है कि जो कोई उस मोतीका जोडा मिला देगा उसीको मैं अपनी कन्या व्याह दूंगा उस मोतीकी तलाशमें बहुतसे राजकुमार गयेहैं परंतु उनका पता अबतक नहीं लगाहै जबसे ये बात मैंने उसकी सहेलियोंसे सुनीहै तबसे मुझे बडी बेकली छाई. क्योंकि न तो वह मोती आवेगा और न ये चम्पकलता हाथ लगेगी. ये बात राजकुमारकी सुनकर वजीरजादेने कहा कि हे मित्र! जो आपका मन इसी स्त्रीसे आसक्त है तो अब हम उसीके लानेका उपाय करेंगे आप अपने मनमें धीरज बांधो यह कहकर सब साथके सिपाहियोंको तो अपने शहरको रवाने किये और आप दोनों यार वहांसे चलकर उसी बागमें आये सो इनको देखते ही मालिन ललकारके बोली चले जाओ यहां क्यों आयेहो! तब वजीरजादेने पांच अशर्फी अपनी जेबसे निकालकर मालिनको दीं और कहा कि हमको एकमहीने इस बागमें रहने देगी तो तुझे और भी खुश करेंगे ये बात सुनकर और अशर्फियोंको लेकर मालिन बहुत खुश हुई और उनको लेजाकर अपने मकानमें टिकाया। मैना बोली कि ऐ तोते! अब राजकुमारके हाल

की कलम बन्दकरके रानी चम्पकलताका हाल कहतीहूं किजबसे राजकुमारके वियोगमें ऐसी बावली हुईकि खाना पीनासोना बैठना उठना हँसना बोलना सब तज दिया और लम्बी लम्बी सांस लेकर आह भरने लगी और नेत्रोंसे नाले बहाने लगी इसका यह हाल देखकर चित्ररेखाबोली कि हे प्राणप्यारी! बिनाजाने पहचाने बिदेशी आदमी पर कोई भी ऐसी मोहित होतीहै? न जाने वह शख्स कौनहै आपको ऐसा खेद करना न चाहिये ये बात चित्ररेखाकी सुनकर चम्पकलताने यह कबित्त पढाः-

सवैया

जादिनसे निरख्यौं बनमें मन मेरो लग्यो उनहीमें रहेहै।
खान तजो अरु पान तजो सनमान तजो मन येही चहे है॥१॥
नैनन बान परी जु यही बिन देखे उन्हें कल नाहिं लहे है।
नेह कहा लगके जु छुटे सखी नेह वही जो सदा निवहेहै॥ २ ॥

कवित्त

तोसों मैं दुराई नाहि कबहूं हियेकी बात अबहूं दुराऊँ
कैसे सांची कर मानिये। नेकही चितेके मेरे चित्तको
चुराय गयो रूपकी निकाई वाकी कहांलो बखानिये॥
देखे विन प्यारेके दशा है यह मेरी ऐसी कहांलों बखानूं
अब सोई पहिचानिये। लगन नईकी भई आन अकु-
लान आली गई कुल कान मेरे बीर पीर छाइये॥

सो हे सखी! जबसे मैंने वह बांकी अदावाला कामदेवके समान राजकुमार अपने नैनोंसे निहाराहै तबहीसे ये नैन उसकी मोहनीको भूलते नहीं रातदिन उसीके रूपमें छके रहतेहैं किसी कविने कहाहैः-

दोहा

नैना लोभी रूपके, फँसे प्रेमके फन्द।
लागे पै छूटें नहीं, करैं कोट छल छन्द॥

हे सखी ! अब मुझे बिन देखे राजकुमारके चैन नहीं पडता यह कहकर चम्पकलताने ये कवित्त कहाः-

सवैया

दिन रैन नहीं मोहि चैन सखी बिन देखे पियाके मैं मरी मरूंगी।
नैनन धार बहै निस बासर रोके रुके नहीं कैसी करूंगी ॥
कामके बान लगे तनमें बिरहा की मैं आगमें नित्त जरूंगी।
रंगी कहे बिध कौन सखी पियाको निज अंकमें लाय भरूंगी ॥

इतनी बात सुनके चित्ररेखा बोली कि हे प्यारी ! तुम बडी नादान हो कि बिना जान पहँचानके उस परदेशी पर मोहित होगईहो अगर इस बातको कोई स्त्री पुरुष सुनेगा तो क्या कहेगा कि ऐसे राजाकी बेटी चलते फिरते विदेशी मनुष्यों पर मोहित होतीहै यदि यह हाल आपके पिताको मालूम होगया तो हम तुम सब खराबीमें आवेंगी इससे आप मेरा कहना मानकर इस रंजको आपके मनसे दूर करदेऊं देखो आपकी आजहीमें कैसी गत होगई हैः-

कवित्त

बिरहमें कुमारके विकल बिलखात आप बौरीसी फिरत दृष्टि अतिशय मलानकी। चंडिदत्त आहके धरेहै पग इत उतकूं घूमके गिरीही ज्यों धरी देह आनकी ॥ सांस ना भरत कै सि-थलसी दिखाई देत होनी ना मिटाये मिटे बिध बलवानकी। अतर लपेटी काल फूलन गुही मेंढी आज धूरमें लपेटी चोटी गुही मुकतानकी ॥

हे प्यारी ! चम्पकलता ! देखो आपको रंग रूप सब कैसो बिगड गयोहै याते आप मेरो कह्यो मान या सोचको त्याग देओ इस बातको सुन चम्पकलता कहनेलगीः-

दोहा-रूप रंग सबही गयो, गयो खान अरु पान।
परदेशीकी प्रीतिमें, बिकल रहैं मम प्रान ॥

इस दोहेको पढकर चुप होगई और लंबी साँस लेने लगी इतनमें मोहिनी आई सो मोहिनीको देखकर चम्पकलता कहने लगी कि हे प्राणप्यारी मोहिनी! कहो राजकुमार मेरे मनको चुराके चला गया या उसी बागमेंहै इसबातको सुनकर मोहिनी आंखोंमें आंसुभरकर कहने लगी कि हे राजकुमारी! मैं राजकुमारका हाल तुमसे क्या कहूं कहने-से मेरा कलेजा फटताहै परंतु आपकेकहनेसे मैं उसका हालकहतीहूं:-

सवैया

जबसों तुम बाग तजो तबसों वह बावरो होय पुकारतहै ।
नहीं धारत धीर तुमारे बिना लहि स्वांस उसास बिसारतहै ॥
चहुँ ओर फिरे बनमें भटक्यो बिरहा नहिं तोर सहारतहै ।
तुम नैन मिले बिन जीवे नहीं वह सीस धरानसों मारतहै ॥

कवित्त

खानकी समा रहै न पानकी सम्हार वाय फिरत दिवानो ऐसो बन बन में धायके। दौर दौर शेर करै नामलै तिहारो सखी बार बार गिरत भूमि आति ही भैरायकै॥ रंगीलाल चैनहै न बाय घडी एक छिन बिरहके वियोगमें रह्यो सरसायके । जीबेकी न आस स्वास स्वासमें उसास लेत नाम तेरो लैकै गिरै मूर्च्छासी खायके ॥

हे प्यारी! उसकी व्यथा मैं तुमसे कहांतक कहूं मैंने उसको बहुतेरा समझाया परंतु उसकी समझमें एक न आई जब मैं वहांसे आपके पास आने लगी तब उसने यह पत्र मुझको लिखकर दिया और ये कहा कि यह पत्र हमारी प्यारी चम्पकलताको देदेना यह कहकर उसने वह पत्र दिया जिसको पढकर चम्पकलता मूर्च्छा खाकर जमीनमें गिरपडी थोडी देरके बाद होश आया तब यह दोहा कहने लगी:-

दोहा

हाय दई अति निरदई, मिलकर विछुरन कीन ।
पिया बिना तलफत फिरूं, जैसे जल बिन मीन ॥ १ ॥

प्यारेके देखे बिना, बिरह बिथाको जोर।
कौन सुनै कासों कहूं, डारे मदन मरोर ॥ २ ॥

इसतरह कहकर फिर मोहिनीसे कहनेलगी कि, हे सखी! अब तू यह तो बता कि वह मेरे प्राणके हरनेवाला वहीं है या कहीं चला- गया तब मोहिनीने जबाब दिया कि मैं तो उसको वहीं छोड आईथी परंतु पीछेकी मुझे नहीं मालूम तब चम्पकलता बोली कि हे मोहिनी! अब प्रातःकालका वक्त होआयाहै सो तू मेरा पत्र लेकर उसी जगह जा और उसको वहां तलाश करके देदीजो और उसको लेजाकर बागकी मालिनसे कहना कि उसे बडी खातिरदारीसे रक्खें यह कहकर उस खतमें यह गजल लिखदीः-

गजल-वाइसे वहशत हुई वे एतनाई आपकी।
तिनके चुनवाने लगी हमसे जुदाई आपकी ॥
आपकी जाने बला क्योंकर कटी फ़ुरकतकी रात।
दिल तडफता रहगया जब याद आई आपकी ॥
आपकी बातों का रहताहै मुझे हरदम खयाल।
जो कोई बोला सदा कानोंमें आई आपकी ॥
करबटें शब भर लिया करतीहूं नींद आती नहीं।
रातभर बेताब रखतीहै जुदाई आपकी ॥

यह खत लिखकर चम्पकलताने मोहिनीको दिया तब मोहनी वहांसे रुखसतहोकर बागमें आई और अपनी प्यारीका सारा हाल राजकुमारसे कहा और वह खतभी दिया तबराजकुमारने अपनी छा- तीसे लगाकर साराहाल पढकर अपने यारको सुनाया तबवजीरजादा कहने लगा कि हे मित्र! अब घबडानेकी कोई बात नहीं है क्योंकि चम्पकलताके भी बदनमें आपकी मुहब्बतने थाना गाड दियाहै इससे अब आपकी मुराद पुरी होनेमें कुछ शक नहीं परंतु आपभी कुछ इस खतका जबाब अपनी प्यारीको लिखौ तब राजकुमारने ये गजल लिखदीः--

गजल

नीम बिस्मिल छोडनेसे तुझको हासिल क्या हुआ ॥
आज तेरा ए परीरू तेग कातिल क्या हुआ ॥
ए फलक इस जुल्मसे क्या बढगया तेरा उरूज ॥
खाकमें हमको मिलाया तुझको हासिल क्या हुआ ॥
तेरे गममें रोते रोते घुलगया सरता कदम ॥
रात भरमें हाल मेरा शम अ महफिल क्या हुआ ॥
गौहर मिटाई आबरू इस इश्कने ॥
छोड बैठे सबको हम दिल तुमपै मा यल क्या हुआ ॥

यह पत्र देकर मोहिनीसे राजकुमारने कहा कि तुम अपनी सखीसे कहना कि आप अपने बीमारकी दवा जल्द करें बरन् इस बीमारका जीना मुशकिलहै मैना बोली कि हे तोते !यहां तो राजकुमार मोहिनीको समझारहा था अब मैं चम्पकलताका हाल फिर सुनातीहूं तू कान लगाकर सुन दूसरे रोज सबेरा होतेही वसन्तका रोज जानकर औरभी बराबरकीसखियां आईं और चम्पकलताको उदास सोती हुई देखकर कहनेलगीं कि हे प्यारी!आज देखो ऋतुराजमहाराज वसंतका उत्सव शहरके सब नर नार मनातेहैं और आप उदास बैठीहो आपकी अलकें बिखर रही हैं सब मुख पीला पड़रहाहै सो इसका क्या सबब है हे सखी! देखो आज वसंत महाराजकी कैसी शोभा होरहीहैः--

कवित्त

कोकिला कलापि कूंजे बागनमें ठौर ठौर बीर ऋतुराजको समाज सरस्यौ परै। भनति किशोर जोर अम्बन कदम्ब-नते मंजु मंजुरीनते सुगंध निकस्यौ परै ॥ काम विथा मेटनको सुखद समेटनको भेटनको प्रीतमको प्राण तरस्यौ परै। अवनी ते अंबरते दुमन दिगम्बरते बाहरते बागते वसंत वरस्यौ करै ॥
हे प्राणप्यारी! ऐसी सुखद ऋतुसे उदास होनेका क्या कारणहै

आप तौ सदा आजके दिन वसंत महाराजका उत्सव बडी धूमधामसे मनातीथीं आज आपको क्या सोच छायाहै---

सवैया

पीरो भयो तनपै बरसौ सब अंग अनंग सिंगार बिगारे।
रंगी कहे दृग आल भये बरषे तिनसों जल मानो पनारे॥
खेद बिना मुख चन्द मलीन भयो द्युत हीन न बोल उचारे।
कोन उठी तन पीर सखी कर नीचो मुखे नख अवनि विदारे॥

यह वचन सखियोंका सुन चम्पकलता बोली अरी सखियो। आज मेरा मन ठिकाने नहीं है इसीसे मुझको बसंत का दिन आज अच्छा नहीं लगताहै यों कहकर ये कवित्त पढनेलगीः--

सवैया

फूलै पलास कदम्बन टेसू है अम्बर डारन छावन देरी।
री मदमत्त मधूकनि पुंज निकुंजनि शोर मचावन देरी॥
क्यों सहिहै सुकुमार किशोरी अरी कल कोकिल गावन देरी।
देखतहीं करैं प्रान पयानरी वैरी वसंतहि आवन देरी॥

यह कहकर आह भरकर राजकुमारके विरहमें मगनहो यह वसंत गानेलगीः--

आयो वसंत आई बहार।
मेरे करत करेजेको छार छार॥
यह ऋतु बसंत नहीं सही जात।
मेरे बदन दई चिनगारी लाय।
रह्यो बिरह सखी सब तनमें छाय॥
अंसुआ जल बरसे धार धार॥ आयो०॥ १॥
फूले बन टेसू बिबिध फूल।
लखि लखि कर उठत मेरे उरमें शूल॥
सखी ऋतु बसंत बिरहाको मूल।

मोहि जान बिरहना करत बार।
मोरे करेजाको करत छार छार ॥
इत बैरन कोयल करत कूक।
सुन २ के हृदय बिच उठत हूक ॥
दियो बिरह आग तनसबरी फूँक।
सब तनको जरावै बार बार।
मोरे करत करेजाको छार छार ॥
आयो पिय प्यारो मेरे पास।
है रंगीलालको मन हुलास ॥
प्रभु अब तौ करौ पूरन ये आस।
कब मिले हमारो हमसे यार।
मेरे करेजाको करत छार छार ॥

दोहा—ऋतु वसंत पावक सदृश, जरत बिरहनी अंग।
ये ऋतु उन ही कों भला, जिनके प्यारे संग ॥

यह कह फिर चुप होगई इतनेमें मोहिनीभी राजकुमारका संदेशा लेकर आगई मोहिनीकी सुरत देख चम्पकलता बोली कि मेरी प्यारी सखी मोहिनी! कह क्या खबर लाई, तब मोहिनीने राजकुमारकाखत चम्पकलताको दिया और सारा हाल कहसुनाया चम्पकलता उस खतको पढकर अपने मनमें कहने लगी कि खैर अभी गया तो नहीं है ईश्वरने चाहा तो किसी न किसी दिन हमारी और उनकी मुराद पूरी हो जायगी इस बातको सोचकर चुप होगई तब सब सखियोंने जान लिया कि चम्पकलता किसीके बिरहमें गिरफ्तारहै ये जानकर सब अपने अपने घरको चली गई मैंना बोली कि ऐ तोते! इसी तरह राजकुमार और चम्पकलताको बिरहमें कई दिन बीते तब एक दिन अपनी बेटीको बीमार सुनकर चम्पकलताकी मा आई और उसकी बुरी हालत देखकर कहने लगीः—

दोहा

ऐ बेटी चन्दामुखी, क्या दुख व्यापा तोहिं।
जो तेरे मनमें विथा, कह समझावो मोहिं॥

ये बचन माताका सुनकर चम्पकलता बोली:—

दोहा

हाथ जोर बिनती करूं, सुन माता चित लाय।
बिरह विथा तनमें घुसी, मोपे सही न जाय॥

ये बचन चम्पकलताका सुनकर माता बोली:—

कवित्त

चल्यौ नाहिं जात अंग भीजों खेद मांझ पुलकित जात
गात तेरौ समझी न बात है। सीत विन एरी तेरौ तन
सब हीत जाय आननको रंग कुछ और भयो जात है॥
आंसु चल्यो जात जात तोहि गातकी संभार नाय तेरी
दशा देख मेरो हियरो हिरातहै। कौनसे बियोग आज
मन तेरे चन्द्रमुखी जासो भयो पीरो तेरो अंग दरसातहै॥

ये बचन माताका सुनकर चम्पकलता कहनेलगी:—

सवैया

जादिनसे निरख्यो वह रूप स्वरूप भयो सुमलीन महारी।
देखे विना कल नाय परे परि प्रेमके फन्देमें आन मलारी॥
जोबन जोर मरोर करै करै काम बिथा सो सह्यौ नहिं जारी।
बेग उपाय करौ जननी नहिं प्राणन घात करूं बिनवारी॥

ये बचन चम्पकलताका सुनकर माता कहने लगी कि हे बेटी! आज तैंने क्या गजबकी बात सुनाई इस तेरी बातको सुनकर लोग लुगाई क्या कहेंगे और कदाचित् यह हाल तेरा बाप सुन पावैगा तो मुझको और तुझको जानसे मार डालेगा राजघरोंकी बेटी होकर ऐसी कुमति विचारती है इस बातको सुनकर चम्पकलता बोली:—

सवैया

आग लगौ सब लाजमें आज कहा मोहिं साज समाज सगेते ।
मारत बान कमानसो तान महा यह कामहै अंग जगेते ॥
नाहिं दया तुमको है कछू यह बैस चलीयोंही दुःख दगेते ।
लाज रहो चाहे जाओ भट अब प्राण बचे प्रिय कंठ लगेते ॥

ऐसी कडी कडी बातें चम्पकलताकी सुनकर उसकी माताने अलग जाकर चित्ररेखा और मोहनीसे सारा हाल पूछा तब चित्ररेखा बोली कि हे महारानी! आपके हुक्मके बमूजिब हमचम्पकलताके साथ बागकी सैर करनेको गईथी सो उस दिन एक राजकुमार नौजवान अति स्वरूपवान् इसने देखा और उसकी तथा इनकी नजर मिली तबसे एक दूसरेपर ऐसे मोहित हुए हैं कि जिसका बयान मैं कर नहीं सक्ती जिस वक्तसे इनकी उनकी आखें मिली हैं तभीसे वह राजकुमार तो इनके बिरहमें बावलासा होकर चारों तरफ घूमता डोलता है और इनके ऊपर अपने प्राण न्योछावर करनेको मुस्तैदहै और इन्होंने भी उसी दिनसे खान पान तज दियाहै आठ प्रहर चौंसठ घडी रो रोकर काटती हैं हमने भी इनको बहुतेरा समझाया है परंतु इनोंने एक भी न मानी और जब हमने बहुत कही तो हमसे कहने लगीं कि या तो मेरी शादी इस राजकुमारके साथ करादो नहीं तो मैं जहर खाकर सोरहूंगी । हे माता! आप भी जानती हो कि इनकी उम्र सोलह वर्षकी होती आई जोबनमें भरपूर भई और आप इनका ब्याह नहीं करतीहैं अब आपको इनका बिवाह कर देना चाहिये क्योंकि आप जानती होकि इस देहमें काम बडा बलवानहै और इस अवस्थाको पायकर कामदेव किसको नहीं सतताहै इससे आप मेरी अर्ज मानकर महाराजको समझादो कि इस प्रणको छोडदो और इनकी शादी करदो इस बातको सुनकर रानी अपने महलको गई और सायंकालके समय जब राजा आया तब उसने हाथ जोडकर

राजासे चम्पकलताका साराहाल कहा और कहनेलगी देखोकि, आपके प्रणको पूरा करनेको कोई समर्थ न हुआ और चंम्पकलता यौवनमें पूर्ण होआई इससे आप मेरी अर्ज मानकर चम्पकलताकी शादी कर दीजिये और इससमय संयोगभी खूब बनाहै आप शादी करना बिचारते तो जाने कहां कहां राजकुमार देखने पडते सो परमेश्वरने घर बैठेही चम्पकलताके मन भावता वर भेज दियाहै ऐसा संयोग फिर न पाओगे क्योंकि किसी कवीने कहाहैः-

दोहा

काल करंता आज कर, आज करंता अब्ब ।
औसर बीतौ जातहै, फेर करेगौ कब्ब ॥

इससे हे महाराज !जो कुछ करनाहै सो अब करलो जाने कालका दिन कैसाहै ये बात रानीकी सुन राजा जालिमसिंहने कहा बहुत अच्छा आपका कहना हमको मंजूरहै ये बात कर दोनों सोरहे और सबेरा होतेही राजाने कचहरीमें जाकर चोपदारको बुलाकर कहा कि, तुम हमारे बाग में जाओ वहां दो राजकुमार ठहर रहेहैं उनको हमारे पास लेआओ इस बातको सुनकर चोबदार बागमें गया और राजकुमारोंसे कहने लगा कि आपको महाराजने याद कियाहै इस बातको सुनकर राजकुमार तो मनमें फिकर करने लगा कि आज क्या आफत आई परमेश्वर खैर करे तब राजकुमारको घबडाया देखकर वजीरजादा बोला कि हे मित्र ! मरदोंका काम घबडानेका नहीं है जब आप ओखलीमें सिर दे चुके हो तो चोटोंसे क्या डरना. चलो जो कुछ होनाहै सो होगा ये बात बिचारकर दोनों यार अपने अपने घोडोंपर सवार होकर कचहरीमें दाखिल हुए और राजकुमारने झुककर सलाम किया तब राजाने बडी प्रीतिके साथ छातीसे लगाकर अपनी गोदमें बिठा लिया और राजकुमारसे सारा हाल पूछने लगा तब राजकुमारने अपना सारा हाल

और नाम गाम सब बतलाया राजा सुनकर अपने मनमें खुश भया और उन दोनोंके वास्ते एक महल बतादिया और दास दासी बहुतसे खिदमतके वास्ते भेजदिये और बडी मुहब्बतसे राजा कहने लगा कि हे बेटे ! अब तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो तुम्हारी प्रीत और साहस देखकर अपनी बेटी तुमको दी इस बातको सुनकर राजकुमार बहुत खुश भया और राजासे बिदा हो अपने महलमें आया. मैना बोली कि ऐतोते!राजकुमार तो अपनेमहलमें गया और राजाने ज्योतिषियोंको बुलाकर व्याह शुधवाया तब ज्योतिषीने शुभ दिन देख लग्न साध बिवाहका दिन बताया तब राजाने ज्योतिषियोंको द्रव्य आदि देकर बिदाकिया और आप बिवाहकी तैयारी करने लगा ये बात सारे नगरमें फैली तो सब नरनारियोंको बडा आनंद हुआ जब लग्नका दिन हुआ तो राजाने हाथी घोडा वस्त्रादि बहुतसा धन लग्नमें भेजा और शहरमें व्याहकी बडी तयारी हुई जब व्याहका दिन आया तो राजाने शहरमें डौंडी पिटवादी कि सबेरे शहरके आदमी रंगीन कपडे पहने जो कोई सफेद कपडे पहने दीखेगा वह संगीन सजा पावैगा व्याहके दिन हरतरफ रंग खिलने लगे ठौर ठौर गुलाल उडने लगा केशरके छिडकावके मारे शहर काशमीरके मानिंद होगया सब नरनार रंगमें सखोरफिरतेथे ठौर ठौर रंडियों का नाच होने लगा और राजाका हुक्म था कि जिसको चाहिये सो लो हिन्दुओंको पूरी कचौरी मिठाई मुसलमानोंको पुलाव कलिया जर्दा आदि खाना ठौर ठौर था दिनरात सबको तमाशा देखनेसे कामथा इस प्रकार सारे शहरमें धूम होरहीथी इतनेमें शामका वक्त हुआ और बरात चढनेकी तैयारी भई राजकुमारके महलसे राजाके महलतक दोनों तर्फ बिल्लौरी झाड फानूसोंकी रोशनी कीगई घरघर पर नगाडखाना रक्खाथा जिस वक्त दूल्हा सवारहुआ उसवक्त एकबार ही शोर होने लगा किसीने कहा सवारी जल्दी लाओ, कोई कहै खिदम-

तगारको बुलाओ,कोई बोला फुलवारी लाओ, इतनेमें पलटने आगे बढीं घोसापर चोव पडने लगी, बाजे बजने लगे, धीरे धीरे बरातका चलना आरम्भ हुआ सबसे आगे सवारोंके रिसाले जिनके हाथोंमें भालेघोडोंकी बागोंकोसम्हाले चले जातेथेउनके बाद सांडनी सवार खासवरदार चीरापोस कडेबाज घुडचढे दूल्हेके आस पासभाले बर्छी चोबदार नकीबरोशनचौकीवालेथे और दूल्हेके पीछे घोडोंपर अमीर उमराव मंडील झुकाये घोडेसे घोडा मिलाये बडी धूम धामसे चले जातेथे.रास्तेमें चरखी चांदतारे कदमगास मोर चरखी आदि तरह तरहकी आतिशबाजी चलती थीऔर तखतों पर सैकडों रंडियोंने लैले मजनूका स्वांग नाचते चले जातेथे और भांड भगतियें अपनी न्यारी २ ध्वजा दिखाते चले जातेथे हीजडे तालियोंको फटकार फटकार गातेथे निदान बडी धूम धामसे बरात महलके दरबाजेपर पहुँची और पण्डितोंनें नेग सब लेलिये बाद फेरा पानेके दूल्हे दुलहन दोनों चित्रसारीमें पहुँचे उस वक्त दोनों के दिलकी मुराद पुरी हुई मैंना बोली कि ए तोते ! राजाने लाखों रुपयेका माल जर जेवर व हाथी घोडे दायजेमें दिये तब तो राजकुमारके बडी खुशीके साथ मौजमें दिन कटनेलगे इसी तरह ऐश आराम करते २ राजकुमारको बहुत दिन बीते और वह ऐसा आनन्दमें मग्न होगया कि, अपनी माता पिताकी सब सुध भूलगया तब एक दिन वजीरजादेने राजकुमारसे कहा कि हे मित्र ! अब परमेश्वरने आपकी मुराद पूरी करदी अब आपको अपने वतनको चलना चाहिये क्योंकि हमको और आपको घरसे आये बहुत दिन बीतगये न जाने तुम्हारे माता पिता का क्या हाल होगा क्योंकि जबसे आप आये हो तबसे कोई खबर आपकी उनके पास नहीं पहुंची ये बात मित्रकी सुनकर राजकुमारने अपने सुसरसे कहा कि हे पिता ! जो आप खुसीसे आज्ञादें तो हम

अपने वतनको जावें यह बात सुनकर राजाने कहा कि बहुत अच्छा जैसी आपकी मरंजीहो वैसा करो. तब राजकुमारने अपने वतनको चलनेकी तय्यारी करी राजाने बडी खुसीके साथ बहुतसी फौज साथको दी और लाखों रुपयेका माल राजकुमारको दिया तब राजकुमार चम्पकलताको अपने सांथ लेकर राजासे बिदा होकर चल दिया. निदान कई दिनके बाद एक मुकाम पर जाकर डेरा किया और सब लोग अपने अपने डेरोंमें आराम करनेलगे जब शामका वक्त हुआ तो राजकुमार अपने घोडे पर चढकर सैर करनेको गया और वजीरजादेको लश्करकी सावधानीके वास्ते छोडगया रानी चम्पकलता आप अपनी चिकोंमें बैठीथी सो उस जगह किसीतरहसे बजीरके लडकेकी अँगूटी हाथसे निकल गईथी सो रानी चम्पकलताने राजकुमारकी अँगूठी जानकर उसे अपनी उंगलीमें पहिन ली इतनेमें चिराग जलनेके समय राजकुमार भी हवा खाकर आया और खाने पीनेसे निश्चिन्त हो शयन करने लगा उस समय रानीसे केलि आनंद करनेमें हाथसे हाथ मिला तब उसके हाथमें वजीरजादेकी अँगूठी देखकर राजकुमार मनमें जलगया और सोचने लगा कि यह अँगूठी इसके पास कहांसे आई,हो न हो इसकी और बजीरजादेकी दोस्ती है सचहै कि स्त्रीकी जात का भरोसा नहीं ऐसी स्त्रीका क्या ठिकानाहै किसी न किसी दिन ये मेरे जानकी दुश्मन होगी ये अपने मनमें सोच क्रोधके मारे ऐसी तलवार मारी कि चम्पकलताका सिर जुदा होगया और फिर वहांसे बजीरजादेके डेरामें जाकर उसका सिर काट डाला और उन दोनोंको वहीं गाडकर अपने वतनको रवाना हुआ.मैना बोली ऐ तोते !कहां तो राजकुमारकी और चम्पकलताकी ऐसी प्रीत थी कि बिना देखे पलभर नहीं रहताथा और कहां ऐसा निर्दयी होगया कि बेकसूर उन दोनोंकी जान ली ऐ तोते! तूही जरा इन्साफ तो कर कि इसमें रानी का क्या कसूर था।तब तोता बोला

कि छिनाल! इसमें सरासर तो खोट था जो वह उस अँगूठीका हाल कहदेती तो काहेको मारीजाती तू ये नहीं जांनती कि दूसरे मर्दकी चीज अपनी स्त्रीके पास होतीहै तो कैसा रंज होताहै इससे राजकुमारका कुछ दोष नहीं है देख इसका जवाब देताहूं सुन. अब जो कुछ तोता कहेगा सो इसके आठवें भागमें लिखूंगा॥

इति श्रीतोता मैना सातवाँभाग पण्डित रंगीलाल-
शर्म्माकृत सम्पूर्ण।

अथ तोता मैंना आठवां भाग।

दास्तान तोतेका.

तोता बोला हे मैना! देख मैं तेरेसामने मरदोंकी बहादुरी और स्त्रियोंकी बेवफाईकी एक दास्तान कहताहूं जरा कान लगाकर सुन बङ्गालमें एक मेदिनीपुर नाम शहर बडा रमणीक और शोभायमान था वहांका राजा वज्रसेन नाम करके था उसकी एक बेटी रूपमें चन्द्रमा के समान चन्द्रमुखी मृगनयनी पिकबयनी जगतमें विख्यातथी और उसके हुस्नकी चांदनीनें सारे जहांनमें धूम मचारक्खीथी इसकानाम पद्मावती था उसका यह प्रण था कि जो शक्स मेरे सवालोंका जवाब देगा और मेरे पिताको चौंसरमें जीतैगा मैं अपनी शादी उसीके साथ करूंगी और जो शक्स मेरी बातोंको पूरी न करैगा उसे कैदमें डाल दूंगी. इस बातको सुन बहुतसे राजकुमार उसकी बातोंका उत्तर दैंनेको आये परंतु कोईभी न देसका और आखिरको लाचार होकर उसके कैदखानेमें दाना दलने लगे. इसी भांति बहुतसे राजकुमार उस जालिमके कैदखानेकी हवा खाने लगे सो तोता बोला कि, हे मैना! ऐसी बेमुरव्वत औरतोंकी क्या परतीत करनी क्योंकि जिसके हुस्नकी तारीफ सुनकर मुहब्बतके मारे कितनेही राजकुमार अपना राजपाट छोडकर उसके रूपकी फांसीसे फंसे. इस बातके

सुनकर मैना बोली कि, हे तोते! ऐसे कौनसे सवाल उस पद्मिनीने बना रक्खेथे जिनके उत्तर किसीसे नहीं आये उन सवालोंको मेरे सामने कह तब तोता बोला कि, हे मैना! उन सवालोंको मैं आगे कहूंगा यहां पर कहनेसे दास्तान बढजायगी हे मैना! एक राजकुमार उसके कैदखानेसे निकलकर भागगया और उसके ऊपर मोहित होकर उसे व्याहनेकी फिक्रमें जंगल पाहाडोंकी खाक छानने लगा और जहां कहीं वह बैठ जाता वहीं वह यह शैर पढता:—

शैर

मिलादे खुदा उस सितमगरसे मुझको ।
नहीं जिंदगी से उठाले तू मुझको ॥
नहीं उसके देखे बिना दिन ठिकान ।
भटकता फिरूं हूं नहीं चैन मुझको ॥

हे मैना! राजकुमार उसके बिरहमें व्याकुल फिरता था एक दिन की बात है कि वह एक चन्द्रावती नगरी में पहुंचा और एक पेडके नीचे बैठकर यही शैर पढने लगा इत्तिफाकसे उसी समय चन्द्रावती नगरीका राजा बिजयसैन अपने मुसाफिरोंके साथ सिकार खेलता हुआ वहां आनिकला और राजकुमारकी विरह भरी शैरको सुनकर उसके पास आया और उसकी हालत पूछने लगा कि भाई तुमपर ऐसी क्या मुसीबत पडीहै जिससे तुम ऐसे बेकल होरहेहो अपना सारा हाल मुझ से कहो बिजयसेनकी यह बात सुनकर राजकुमार ये शैर पढने लगा:

न पूछो मेरा हाल मुझसे भला ॥
निकलताहै दम मेरा इस दम भला ॥
बसी मेरे दिलमें वह जबसे परी ॥
हुआहूं दिवाना मैं इस दम भला ॥

यह विरह भरी शैर राजकुमारकी सुनकर राजाने मनमें जान लिया कि, यह किसी स्त्रीपर मोहित हुआहै यह सोचकर राजाके दिलमें रहम

आया तौ उस राजकुमाको धीरज बँधाकर कहने लगा कि हेमित्र!ऐसे क्यों अधीर होतेहो अपने दिलका साराहाल मुझसें कहो मैं तुह्मारे मनकी आशा पूरी होनेका उपाय करूंगा तुम किसीबातकी चिंता मत करो यह बात राजाकी सुनकर राजकुमार अपना सारा हाल कहनेलगा तब राजा उसे अपनी छातीसे लगाकर धीरज बंधाकर अपने महल में लेगया और कहने लगाकि तेरे दुःख दूर करनेका उपाय अवश्य करूंगा तब मैना बोली कि ऐतोते वह बिजयसैन राजा कोनथा उसका सारा हाल मुझे कह तब तोता बोला कि हे मैंना! वह राजा बिजयसैन चन्द्रावती नगरीका राजाथा और गोरखनाथ जोगीका चेलाथा उसको गोरखनाथने एक हीरामननाम तोता दियाथा वह तोता बडा बुद्धिमान और पंडित था भूत भविष्यत् वर्तमान तीनोंका जानने वाला था. राजा विजयसेन बिना उस तोतेके पूछे कोई काम नहीं करताथा और वह राजा शूरबीर और अपने बचनका प्रतिपालक था सो राजकुमारको अपने महलमें टिकाकर आप उस हीरामन तोतेके पास गया और सब हाल राजकुमारका तोतेसे कहा यह सुन हीरामन तोतेने राजकुमारको अपने पास बुलाकर कहा हे मित्र! आप इस स्त्रियोंके फंदमें अपनी जान मत फँसाओ यह फँदा बहुत बुराहै इस फँदेमें फँसकर सिवाय तडफडाने और आफत उठाने अथवा अपनी जान गमानेके और कुछ हासिल नहीं होता और यह रंग रूप सब ऊपरीही चमकहै भीतरसे हलाहल जहरकी बुझी छुरीहै ये देखिये किसी कबिने कहाहैः-

कवित्त

विषही की भूमि माहिं विषहीके अंकुर भये नारी बिषबेल
बडी नखसिखसों देखिये ॥ बिषहीकी जड मूल बिषहीके
डार पात बिषहीके फल फूल लगे जो बिशेखिये ॥ बिषहीके
तात उरझाय आंटी मार सब नर वृक्ष रूप पर लपेटाही पेखि-

ये ॥ सुन्दर कहत कोई संत तरु बचिगये तिनके बोलतो कहूं लागी नहीं पेखिये ॥

उदरमें नरक और नरक सब द्वारनमें कुचनमें बिष और बिष भरी छातीहै ॥ कंठमें बिष गाल चिबुकनमें बिष भऱ्यो मुखहूं-में बिष जीभ बिषसों चुचातीहै ॥ आंखनमें बिष नाक कान-हूंमें बिष जाके हाथ पांव नखशिख बिषहीके थातीहैं ॥ कहत द्विज रंगी नारि बिषयिनकों बिष समान प्यायके हलाहल पास जमके पहुंचातीहै ॥

यह कह हीरामन तोता बोला कि,हेराजकुमार ! मेरे कहनेको मा-नकर इस ख्याल को छोड अपना राजपाट कर तैंने अभी स्त्रियोंके चरित्र नहीं सुने हैं कि, स्त्री किसीकी साथी नहीं होती और बडी चालाक होती हैं अब मैं तुझसे एक स्त्रीका दास्तान कहताहूं तू ध्यान देकर सुनः-

एक स्त्रीकी कहानी-

वर्द्धमान नाम नगरमें एक पठान रहताथा उसकी स्त्री बडीरूपवती थी परंतुवह व्यभिचारिणीथी उसकीएकजाटसे दोस्तीथी और उसके एक नौ दस वर्षका लडका था जब वह पठान मजदूरी करनेको चला जाता था तब उस स्त्रीका यार जाटआताऔर बडीमौजसेऐश आराम करता जबपठानके आनेका समयहोतातो अपनेघरको चलाजाताथा परन्तु वह लडका सारा हाल अपने बापसे कह देताथा तब वह पठान औरतको खूब मारता था एक दिन पठान तो मजदूरी करनेको गया और वह जाट आया और उस स्त्रीसे कहने लगा कि आज तुम उदास क्यों बैठीहो तब उस स्त्रीने कहा मैं अपनी उदासीकाहाल आपसेक्या कहूं मैं जो आपके साथ ऐश आराम करतीहूं वह सब हाल यह हरामी लडका अपने बापसे कह देताहै सो वह मुझे बहुत मारताहै इसके मारे मुझे बडाभारी रंजरहताहै तबजाट बोलाइस हरामजादे लडकेकी नार

घोटकर मार डाल जिससे यह नित्तका कष्ट दूरहो यह बात जाटकी सुनकर उस स्त्रीनेकामदेवके वशमें पडकर अपने लडकेको मार डाला और आप अपने यारके साथ ऐश आराम करने लगी जब पठानके आनेका समय हुआ तब वह जाट तो चला गया और पठान आया उसी समय औरत बडे जोरसे चिल्लाकेकहने लगी कि कोई चलियोदौ-डियो ये मेरा खसम लडकेको मारे डालताहै औरतका चिल्लाना सुन कर मोहल्लेके बहुत लोग लुगाई भागे आये और कहने लगे कि क्या हुआ तब उस मक्कार औरतने कहा देखो आज ये लडका इस बापसे एक पैसेके वास्ते मचल रहाथा सो इस निर्दईनें गुस्सेमें आनकर लडकेकी नार घोटदी ये बातसुनकर चौकीदार उसपठानकोपकडकर राजाकेपास लेगया तब राजाके सामने बयान किया तब राजाने कहा कि उस समयका कोई गवाहभी है ? तब उस औरतने कहा हां हजूर जिस समय इसने लडकेकी नार घोटीथी उस वक्त फलां जाट खडाथा वह सब हाल जानताहै तब राजाने उस जाटको बुलाकर सब हाल पू-छा तब जाटनेभी अपनी आशनाके कहनेके मुताबिक गवाही दी तब राजाने उस पठानको फांसी लगनेका हुक्म दिया तोता बोला कि हे मैंना! इस दास्तानको कहकर हीरामन तोता बोला कि हे राजकुमार! देख उस स्त्रीने कामदेवके बशमें पडकर अपने पुत्र और पति दोनोंको मार दिया सो हे राजकुमार ! तू मेरा कहना मानकर स्त्रीके फंदेमें अपनी जान मत फँसावे- यह वचन हीरामनका सुनकर राजकुमार कहने लगा कि हे हीरामन तोते ! मेरी जान बेशक चली जाय परंतु एकबार उस चन्द्रमुखीके कंठसे लगके अपने दिलकी मुराद पूरी कर-लूं यह कहकर लंबी सांस भरने लगा इसकी यह हालत देख राजा बि-जयसेनने हीरामनसे कहा कि हीरामन ! जबतक इस राजकुमारको वह स्त्री न मिलैगी तबतक इसका जीना मुश्किलहै इससे इसकी अभिलाषा पूरी करनेका कोई उपाय करो क्योंकि मेरा भी यही प्रण

है कि पराये दुःखको दूर करना सो हे मित्र हीरामन! जबतक इसका दुःख न मिटैगा तब तक मुझे खाना पीना हरामहै इससे हे मित्र! इसका उपाय अवश्य करना चाहिये तब हीरामन बोला कि अच्छा उस राजकुमारसे उस रानीका नाम गाम पूछो जिससे उसका पता लगाऊं तब राजाने राजकुमारसे कहा हेमित्र! तुम्हारे दिलके चुराने वाली उस रानीका नाम क्याहै और कौनसे शहरमें रहती है सो सब हाल हमसे कहो तब राजकुमार कहनेलगाः—

दोहा

बंगालेके बीचमें, शहर मेदनी नाम॥
वज्रसेन वहांका नृपति, मुल्कोंमें सरनाम॥

चौबोला

राजाजी मुल्कोंमें सरनाम किला उसकाहै भारी॥
उसकी राजकुमारि खिली मानों चन्द्र उजारी॥
राजाजी पद्मावति है नाम रूप रंग वैस सँभारी॥
उसे मिला तुम देउ करूं तेरी तावेदारी॥

बस इस चौबोलेको सुनकर राजाने हीरामनसे कहाः—

रागनी

सूआ तू खबऱ्याँ लादे कैसी छलगारी मृगलोचनी॥
देश बंगालेमें वह कामिन यहांसे कोस हजार॥
बज्रसेनहै वाको राजा उसकी राजकुमारीजी॥
तू खबरा लादे कैसी छलगारी मृगलोचनी॥
गुणकी खानि रूप रंग भीनी नाम पदमिनी नार॥
सांचोभेद लायदे हमको सुन सूआ मिरदारजी॥
तू खबऱ्यां लादे कैसी छलगारी मृगलोचनी॥

ये बचन राजा विजयसेनका सुनकर हीरामन तोतेने कहाः-

रागनी

मैं कैसे जाऊं देश बंगालो जादूगारहै ।
मुझको देख पकडले कामिन इसमें फरक न यार॥
जादूगारो देशहै सारो देय कैदमें डारजी ।
मैं कैसे जाऊं देश बंगालो जादूगारहै ॥
मानुषको वहां बैल बनावे ऐसी जुलमन नार ।
उनके फन्द पडेमें राजा कौन बचावन हारजी ॥
मैं कैसे जाऊं देश बंगालो जादूगारहै ॥
नीचौ उडूं तौ बाज झपट्टे ऊंचो उडोन जाय ॥
पडे गजबकी धूप भूप मेरो तन जावे घबरायजी।
मैं कैसे जाऊं देश बंगालो जादूगारहै ॥
पानी बिन प्यासो मरजाऊं जी मेरो घबराय ।
भटकभटक मरजाऊं राजा जान अजाये जाय जी॥
मैं कैसे जाऊं गौडबंगालो जादूगारहै ॥

जबाब राजाका-

रागनी

तू क्यों घबरावे काज करन मेरे यारजी ॥
जादू थारे पास न आवे गुरुहै गोरखनाथ ॥
खबर पायके जल्दी आवो चलूं तुम्हारे साथ ॥
तू क्यों घबरावे काज करन मेरे यारजी ॥
मोकों गरज नहीं कामिनकी सुनले बात हमारी ॥
परदुख भंजनहार जगतमें नाम हमारो भारीजी ॥
तू क्यों घबरावे काज करन मेरे यारजी ॥
उत्तर देय लजे गुरु अपनों यह कहा बात बिचारी ॥
मानों बात यार हीरामन करो जानकी त्यारीजी ॥
तू क्यों घबरावे काज करन मेरे यारजी ॥

ये बचन राजाका सुनकर हीरामन बोला कि, खैर आपके कहनेसे मैं बंगाले जाताहूं परंतु मेरे पंखोंमें मोती पिरोदे और तरह तरहके हीरा पन्ना लाल लगादे तब राजाने हीरामनके कहने मुआफिक मोतियोंका सिंगार कर बिदा किया तब तोता कई दिनके बाद मेदनीपुरमें पहुँचा और रानी पद्मावतीकी चित्रसारीपर जा बैठा पद्मावती उस खूबसूरत तोतेको देखकर कहने लगीः—

सवैया

कौन सु देशते आयो सूआ अरु कौनसे देश पयान कियोहै ॥
है कोइ चातुर नार सँभारके जाने तुम्हारो सिंगार कियोहै ॥
साच कहो कहा काज तुमारो है मोसों भले सब त्याग भियोहै॥
रंगी कहें पद्मावति नार तबै पुचकार जबाब दियो है ॥

हे मैना पदमावतीका बचन सुनकर हीरामनने कहाः—

कबित

चन्द्रावतिको री राजा एक बिजैसैन ताको गुरु भाई ॥
तिन हितसों मोकों पाऱ्योहै पुत्रसे सिवाय नृपराखतहै ॥
मोहि नृप रानी ऐसो तो भूप दूजो नाहीं जग निहाऱ्यो है॥
बास मना भूप रंग रूपमें अनूप कोई ताको बिधिनानें ॥
निज हाथसो समाऱ्योहै ॥ जैसो रंग रूप तोरो जगमें
बिख्यात सखी तैसोही एक वह राजा हमारोहै ॥

दोहा

रानीजी एक बातको, मैं पूछत हूं तोय ॥
कहा कारन क्वारी रहीं, सांच बताओ मोय ॥

ये वचन तोतेका सुनकर रानी पद्मावतीने अपने मनमें जाना-कि ये तोता नहीं हैं कोई राजकुमार मंत्रके जोरसे तोतेका रूप धरकर मेरा भेद लेनेको आयाहै इससे इसको बातोंमें फुसलाके पकड़ना चाहिये तब रानीने तोतेसे कहाः--

दोहा

पाप सभी या जन्मके प्रगटे या जग मांय।
कछू सुक्ख पायौ नहीं ऐसी काया पाय ॥
बहुत देश बामन फिरे बर ढूंढनके काज।
काहूसो जोरी नहीं मिली सुआ महाराज ॥

यह बचन रानी पदमावतीका सुनकर हीरामन तोतेने कहाः–

जबाब तोतेका.

दोहा

तैसी कामिन तू बनी तैसो मेरो भूप ॥
बिधनाने जोडी रची रचो एक रँग रूप ॥

झूलना

अजी रचौ एक रंग रूप भूप सम और न दूजो कोई है।
वासो तो वही भूप जगतमें नहिं मिले ढूँढलो कोई है ॥
पर दुःख निवारनहै राजा जाकी उडरही खसबोई है।
मानों मेरी बात पदमि तुम न वृथा बचन मम होई है ॥

जबाब रानीका

दोहा

सुन सूआ तेरी बातका, मुझको हुआ यकीन।
बिधिनाने कीनी कृपा, तब तुम दर्शन दीन ॥

झूलना

अजी तंब तुम दरशन दीनं सूअना पास हमारे आओजी॥
को है वह भूप कहां रहता सब व्यौरे वार बताओजी ॥
लेजाउ अँगूठी मेरी तुम उनसे शादी कर आओ तुम ॥
मैं जनम जनम दासी तेरी राजाके दरश दिखाओजी ॥

जवाब तोतेका.

दोहा

तेंरे ढिग आऊं नहीं, तू है कपटन नार ।
बातनमें फुसलायके, देय कैदमें डार ॥

झूलना

अजी देय कैदमें डार नार जगमें तेरी उडी अवाई है ॥
है पूरो ऐब कोई तोमें जासूं नाहिं किनहूं व्याही है ॥
तू व्याहन जोग भई कामिन अबतक नहिं भई सगाई है ॥
वह औगुन कौन बसे तोमें सच दीजो मोय बताई है ॥

जाबाब रानीका

सांच कहूं मैं सूअना, मति तू झूठी जान ॥
मेरे तेरे बीचमें, जामिन श्रीभगवान ॥

झूलना

है जामिन श्रीभगवान बचन तुम सांचे मेरे मानोजी ॥
आओ दिल खोल पास मेरे मति दिलमें दहशत खाओजी ॥
मैं करूं आपकी महिमानी क्या दाख छुहारे खाओजी ॥
मोय दासी जान महर कीजे जीऊं जबतक गुन मानूंजी ॥

दोहा

रानीका सुनकर बचन, आया मन विश्वास
छज्जासे उड सूअना, आया रानी पास ॥ १ ॥
पदमावत करके कपट, पकडो करके मांय ॥
फेर बचन कहनेलगी, बांदीसे समझाय ॥

झूलना चलबडी

छूरीलाउ बांदी मैं इस्का सीस काटूं सूआ नहिं जुलमी कोई नरहै री ॥ जोगीसे बडे मंत्रसे देह बदली लिखी कजा इस्की

इसी बार हैरी॥पंख खोंसके मोति इसके काढ लेना करूं पंख इसके तार तार हैरी ॥ आया सूअना बनके भूंप कोई इसका नहिं मुझको इतवार हैरी ॥

जबाब तोतेका

झूलना

हुई भूल मेरी आया पास तेरे जोगी नाहिं रानी ना ॥
मसान सेना दिलमें सोचा क्या काम मैं बुराकीना ॥
जेता दुःख देगी मुझे सबी सहना॥तुमको मंत्र विद्या मैं
सिखावताहूं रानी मारके मोय जिवाय लैना॥रंगीलाल
कहते नहि झूंठ बोलूं गोरखनाथका चेला मोये जानलेना॥

जवाब रानीका

छन्द

जल्दी मंत्रविद्या बताय सूआ मुझको नहीं पंख तेरे सबी खोंस डारूं ॥ छुरी पास में मेरे फौलादकी है नहीं झूठ बोलूं तेरा सिर उतारूं ॥ तोकूं मारके सूआ जिवाय लऊंगी नहिं झूठ बोलूं सारे बचन सारूं॥ चेली होय जाऊं गोरखनाथजीकी करूं बन्दगी गेरुवा वस्त्र धारूं ॥

जबाब तोतेका

झूलना

यहांसे बाहर करदे सभी बांदियोंको सुनले मंत्र मेरा सखिजाँय सारी ॥ कोई पास तेरे नहिं रहन पावै फाटक बन्द करले यही अर्ज म्हारी ॥ मोको प्यास लगी थोडा नीर प्यादे जीव घबडा ताहै महलकी खोल बारी ॥ तेरे कानमें मंत्र सुनाय दूंगा इसी वक्त सिद्ध होजाय सुघड नारी ॥

दोहा

नारि अकेली देखके, सूआ किया बिचार ॥
अब किस बिधि इससे बचूं, येहै जुलमिन नार॥

झूलना

अजी ये हैं जुलमिन नार सुआने मनमें अकल विचारीहै ॥
कर सूओ मंत्र बतावनको कसि चोंच गालपै मारीहै ॥
हो विकल पदमिनी गिरी धरानि नहिं तनकी दशा सम्हारीहै॥
सूआ उडजाय महल बैठो करिके चतुराई भारीहै ॥

जब थोडी देरके बाद रानीको होश आया और अपने कोमल कपोलोंसे रुधिर निकलता देखा तब बडे गुस्सेमें आनकर बोली

रागनी

तैनें मारी गालपै चोंच जुलम क्या कीयारे जीसे मारूँ सूआ कियोहै बदकाम ॥ गालनको रस लैलियो रे बिगड गयो सब नाम ॥ जुल्म तैनें कियोरे मारी गालपै चोंच जुलम तैनें कियोरे ॥ रानी गुस्सा खायके बांदी लई बुलाय । बांदीसे कहने लगी लाओ बाज उठाय ॥ जुल्म याने कीयोरे । ये सूआ जुल्मी बडा निकस न ह्यां ते जाय ॥ जीवत मैं छोडूँ नहीं याकूं डारूंगी मरवाय ॥ जुलम यांने कीयोरे ॥

तोता बोला हे मैना ! जिस वक्त रानी पदमावतीने खिसियानी होकर अपने बाजका पींजरा मंगाया उसी वक्त हीरामन वहांसे उड चला और पीछे फिरके भी न देखा कई दिनके बाद राजा विजयसे-नके पास आया तब राजाने पदमावतीका सारा हाल पूछा तब हीरा-मन बोला कि हेराजा ! वह स्त्री असलमें रंग रूप और यौवनमें देख नेही लायकहै परंतु न जानिये उसका स्वभाव खोटा क्योंहै बडे दम पुचकारे देकर उसने मुझे पकड लिया और मारनेको तैयार भई सो

गोरखनाथकी कृपासे बडी मुश्किलसे अपने प्राण बचाके आयाहूं तब इस बातको सुनकर राजाने अच्छा मुहूर्त दिखाय चलनेका सामान किया सिर्फ एक घोडा सवारीके और पांचों हथियार बांध तोतेको साथ ले पदमावतीके नगरको चले, चलते चलते कई दिनके बाद उसीके शहरमें पहुँचे और पदमावतीके बागमें जाकर डेरा किया इनको देख बागकी मालिनने बहुत रोका मगर राजाने एक न मानी लाचार होकर मालिनने सारा हाल राजाके आनेका पदमावतीसे जाकर कहा तब पद्मावती मालिनकी बात सुनकर बडी गुस्सामें भरकर बांदीसे कहने लगी कि, हे बांदी ! मुझे मालूम होताहै कि कोई राजकुमार कमबख्तीका मारा मेरे सवालोंका जबाब देने आयाहै सो भला ऐसेही सैकडों आये और अबतक मेरे जेलखानेमें दाना दलरहेहैं चलो उसकोभी जीतकर वही राजोंके पास पहुँचावें ये बात मनमें ठान बांदियोंको साथ ले पदमावती बागमें पहुँची और राजासे कहने लगी कि हे राजा ! तुम यहां कैसे आयेहो और यहां तुम्हारा क्या कामहै तब राजा बोला कि हेपद्मावती ! मैं आपके हुस्नकी तारीफ सुनकर शादी करनेकी चाहना करके आयाहूं सो तू अपने पितासे कह कि तेरी शादी हमारे साथ करदें. तब पदमावती बोली कि हे राजा!मेरा ब्याह करना मेरे पिताके हाथमें नहीं है मेरा ब्याह मेरे बशमें है मैंने ये प्रतिज्ञा करीहै कि, जो राजा मेरे दश सवालोंका जबाब देगा उसीके साथ मैं अपनी शादी करूंगी और जो मेरे सवालोंका उत्तर न देगा उसको कैद करूंगी अगर आपको यह बात मंजूरहो तो आपसे अपने सवाल करूं जो आप मेरे सवालोंका जबाब दोगे तो मैं अपनी शादी आपके साथ करूंगी और जो जबाब न दे सकोगे तो आपको मेरे कैदखानेमें जाना पडेगा ये बात पद्मावतीकी सुनकर राजाने जबाब दिया

कि अच्छा आपका कहना हमको मंजूरहै अब आप अपने सवालोंको मुझसे कहिये तब पद्मावती कहनेलगीः—

सवाल १

कौन तपस्वी तप करै, को नित उठकर न्हाय ॥
को उगलै सब रसनको, को सब रसको खाय ॥

यह सवाल रानीका सुनकर राजाने अपने मनमें गुरु गोरखनाथजीका ध्यानधरके उत्तर दिया ॥

उत्तर

सूरज तपसी तप करै, ब्रह्मा उठकर न्हाय ॥
सब रस उगले इन्द्र नृप, धरती सब रस खाय ॥

सवाल २

कौन सरोवर पांजवी, कौन पेड बिन डाल ॥
कौन पखेरू पंख बिन, कौन मौत बिन काल ॥

उत्तर

नैन सरोवर पांजबी, धर्म्म मूल बिन डाल ॥
जीव पखेरूं पांख बिन, नींद मौत बिन काल ॥

सवाल ३

कहा न तिरिया कर सके, कहा न सिंधु समाय ॥
कहा न पावकमें जरै, कहा काल नहिं खाय ॥

उत्तर

पुत्र न तिरिया जन सकै, मन नहिं सिंधु समाय ॥
धर्म्म न पावकमें जरै, नाम काल नहिं खाय ॥

सवाल ४

बाला तन गज तीसकी, तरुण भये गज चार ॥
बुढी हुई गज साठकी, मूआ अंत न पार ॥

उत्तर।

दिन ऊगे गज तीसकी, दो पहरां गज चार॥
सांझ भये गज साठकी, छाया लेउ विचार॥

सवाल ५

बरषा बरषी रातिमें, भीजो सब बनराय॥
रूखन पानी चढगयो, घोडा मल मल न्हाय॥
घडा न डबे नीर बिन, पंछी प्यासो जाय॥

उत्तर

ओस पडीथी रातको, भीजो सब बन राय॥
रूखन पानी चढि गयो, घोडा मल मल न्हाय॥
घडा भरै नहिं ओसते, यों पंछी प्यासो जाय॥

सवाल ६

ब्रह्मा नहीं नग्रमें डोले दंत दोय मुख चार॥
वाहन बैल नहीं शिवशंकर जलका करै अहार॥
कै दोहाको अर्थ बता नहिं दऊं कैदमें डार॥

उत्तर

कूआ पर भिस्ती लख्यौ भरतो नीर पखाल॥
दोऊ लकडी दंत है चारी मुखहैं खाल॥
बैल सवारी वो करै सांची जानों बाल॥
दियो ज्वाब मैंने सही शादी कर ततकाल॥

सवाल ७

नाजुक नारि पिया संग सोती अंगसे अंग मिलाय।
जब जागे तब जानके अपने पतिकूं खाय॥
वो पतिव्रता नारिहै संग सती ह्वैजाय॥
याको कै तो अरथ कह नहीं कैद हो जाय॥

उत्तर

बाती घाली तेलमें नाजुक खूब बढाय ॥
बाले पीछें तेलने सनै सनै खा जाय ॥
निबटै तेल दीपमें जबहीं बाती तुरत बुझाय ॥
अरथ सुनो तुम पदमिनियाको मो संग कीजे ब्याय ॥

सवाल ८

कालो आप पुत्रहै कालो काली आई नार ॥
बेटा देखे मात पिताकूं घूसा मारे चार ॥
तिरिया देख खसमने जलके काढे घरके बार ॥
कै तो याको अरथ बता नहीं देऊं कैदमें डार ॥

उत्तर

कारी दारू कारो गोला कारो सुम्बा होय ॥
भरती देखे तोपमें मैं समझाऊं तोय ॥
लगे पलीता जब प्यालेमें गोला बाहर होय ॥
कह्यौ अर्थ मैं पदमिनी अब तुम ब्याहो मोय ॥

सवाल ९

लम्बी पूछ गिलैरी नाहै दोय सींग नहिं गाय ॥
निरत करै आकाशमें मीठो राग सुनाय ॥
याको अरथ सोचके राजा मोकूं देउ बताय ॥

उत्तर

गुडी उडे आकाशमें पूछ बडेरी होय ॥
हवा लगै सर सर करै राग जानिये सोय ॥
जो ते दोनों सींग सम अरथ बताऊं तोय ॥

सवाल १०

एक भुजा धारण किये बैठी गादी डाल ॥
सब जग वशमें कर लिया नहीं अंगपर खाल ॥

या दोहाको अर्थ कह नहिं बंदी खाने घाल ॥

उत्तर

आटो सब जग खातहै पीसे चाकी मांय ॥
एक भुजा याके बनी यामें झूठी नाँय ॥
ज्वाब दशों पूरे किये मो सँग कीजे ब्याह ॥

तोता बोला कि हे मैना! इस प्रकार राजाने पद्मावतीके दशों सवालोंका उत्तर दिया तबतो पद्मावती बहुत खुशभई और कहने लगी कि हे राजा अब ! मैं आपका सारा हाल अपने पितासे कहूंगी और अपना वचन पूरा करूंगी यों कह राजासे बिदा होकर अपने महलमें आई और बांदीको सारा हाल सुनाकर अपने पिताके पास भेजी सो राजा वज्रसेन बांदीका वचन सुन बहुत खुश भया और दीवानको बागमें भेजकर बिजयसेनको बुलवाया और बडे आदर सत्कारसे गादी पर बैठा लिया तब विजयसेनने कहा कि,महाराज ! हमने आपकीबेटीके दशों सवालोंकाजवाब दियाहै आप अपनीप्रतिज्ञाके अनुसार अपनी पुत्री हमको दीजिये तब राजा वज्रसेनने कहा कि, बहुत अच्छा अब मैं शुभ घडी दिखाकर अपनी बेटीकी शादी आपके साथ करदूंगा तब राजा विजयसेन बोला कि,हे राजा ! मेरा व्याह तो इसके साथ न होगा क्योंकि ये अमानत पराई है मेरी तो पुत्रीके समान है तब वज्रसेन बोला कि, हे राजा ! ये कन्या आपने पराई अमानत कैसे बताई इसका सारा भेद मुझसे कहो तब विजयसेन कहने लगे कि, हे राजा ! तुमने जो राजपुत्र कैद कर रक्खे हैं उनमेंसे एक राजकुमार तुम्हारे कैदखानेमेंसे निकल गया और वह तुम्हारी बेटीकी चाहनामें अपने राजपाटसे हाथ धोकर बावलोंकी तरह रात दिन रोता हुआ जंगलोंमें भटकता फिरता था सो एक दिन वो दैवयोगसे मेरे राजमें चला आया और एक पेडके नीचे बैठा रोरहा था इत्तिफाकसे मैं भी उसी जगह जा निकला और उस राजकुमारको दुःखी देखकर उससे

सारा हाल पूछा तब उसने अव्वलसे आखिर तक अपने दिलका हाल मुझसे कहा तब मैंने उसे तुम्हारी बेटी पर सच्चा मोहित जानकर ये प्रण किया कि, मैं तुमको उस राजकुमारीको दिलादूंगा सो हे राजा! इसीसे ये अमानत उसकी है मैं इसे उसके साथ व्याहूंगा ये बात बिजयसेनकी सुनकर वज्रसेन बहुत खुश भया और कहने लगा कि, धन्य है आपको जो पराये उपकारके वास्ते ऐसा कष्ट किया अब आप मेरी बेटीके मालिक हो जिसे चाहो तिसे दो आप उसराजकुमारको बुलवाइये तब विजयसेनने तोतेको भेजकर राजकुमारको बुलवाया और विधिपूर्वक उसकी पदमावतीके साथ शादी करादी और वे दोनों खुश होकर आनंदमें रहने लगे. तब राजा विजयसेन वज्रसेनसे बिदा होकर अपने वतनको गया तोता बोला हे मैना! देख मर्द कैसे साहसी होते हैं कि, पदमावतीसी स्त्रीको पाकर दूसरेको देनेमें कुछ भी रंज न किया इससे मर्दोंकी बराबर बातका पक्का और सखुनका सच्चा कोई नहीं होता अब मैं मर्दोंके साहसके दास्तानको खतम करके स्त्रियोंकी बेमुरव्वती बयान करताहूं. जब राजकुमारको पदमावतीके साथ ऐश आराम करते कुछ दिन बीते तब एक दिन राजकुमारने अपने ससुरसे कहा कि, हे पिता! अब हमको अपनेमाता पिताओंको छोडे बहुत दिन हुए इससे आपकी राजीहो तो हम अपने वतनको जावें और अपने माता पिताको सुख दिखावें क्योंकि जिसदिनसे मैं उनके पाससे आयाहूं आजतक कुछ खबर नहीं पाई इससे मेरा जी बेचैन रहता है इस बातको सुनकर वज्रसेनने कहा बहुत अच्छी बात है ये कहकर सफरका सामान इकट्ठा किया तब अच्छा दिनदेखकर राजासे बिदा होकुछ थोडेसे आदमी साथलेकर चलनेका कस्त किया इसी तरह चलते चलते समुद्रके किनारेपर आये औरएक जहाजमें अपना सामान रख पदमावतीको चढाकर और आपभी चढकर समुद्रमें चला दैवयोगसे जिस वक्त जहाज बीचमें पहुँचा उस

वक्त अचानक ऐसी आंधीआई कि,जिसके ज़ोरसे ज़हाजके बन्द टूट गये मल्लाहोंके छक्के छूटगये जहाजके टुकडे टुकडे होगये क्या जाने कौन डूबा कौन बचा किसीको किसीकी खबर नहीं. राजकुमार एक तख्ते पर उछलंता डूबता चार दिनके बाद किनारेपर लगा और उधर मल्लाहोंने पदमावतीको हीरा मोतियोंसे लदी देख लोभमें आनकर अपनी जान झोंककर बडी मुश्किलसे समुद्रमेंसे निकालकर उसका सब जेवर उतार लिया और उसे निकाल दिया. तब पदमावती अकेली उस बीयावान जंगलमें भटकने लगी इसी तरह पदमावतीको भूखे प्यासे उस जंगलमें फिरते फिरते बहुत दिन होगये तब एक दिनका जिक्र है कि उसी जंगलमें एक चित्रकेतु नाम राजकुमार शिकार खेलनेको आया सो चित्रकेतुकी नजर पदमावती पर पडी तो चकाचौंध होगया और अपने मनमें कहने लगा कि इस भयानक जंगलमेंये चन्द्रमुखवाली चारों दिशाओंको अपने हुस्नकी चमकसे रोशन कररहीहै इसके साथ कोई आदमी भी नहीं है और न इसके पास कुछ जेवरहै और बदन इसका मलीन होरहाहै तौभी चन्द्रमुखी अपने तेजसे चन्द्रमाको मलीन करतीहै इससे इस्के पास चलकर इसका हाल जरूर पूँछना चाहिये ये बात मनमें विचारकर चित्रकेतु पदमावतीके पास आया और पूछने लगा कि, हेसुन्दरी!तुम कौनहो ? जो इस भयानक जंगलमें अकेली फिरतीहो और तुम्हारी संगकी सहेली तुमको अकेली छोडकर किधर गई और आपका कमलसा कोमल देह कैसे मलीन होरहाहै ऐसे चित्रकेतुके बचन सुनकर पदमावती बोली कि मैं बज्रसेन राजाकी बेटीहूं और पदमावती मेरा नामहै सो मैं और मेरा पति कुछ थोडेसे आदमी साथ लेकर अपने वतनको जातेथे रास्तेमें समुन्दर आया और हम सब जहाजमें बैठे दैवयोगसे ऐसी आंधी आई कि जहाजके टुकडे होगये और मेरा मालिक और खिदमतगार मरे या बचे मुझे उनका हाल कुछ मालूम

नहीं मुझे तो मल्लाहोंने निकाल और मेरी जान बचानेके बदले उन्होंने मेरा सारा जेवर लेलिया.हे राजकुमार! मैं उसी दिनसे अपने पतिके वियोगमें इस जंगलमें भटकती फिरतीहूं यहां कोई अपना बिराना धीरके धरानेवाला और सुख दुःखके पूछनेवाला नजर नहीं आता सिवाय गमके कुछ खानेको नहीं खाया और प्यासलगतीहै तो जिगरका खून पीतीहूं अपने दिलमें सोचतीहूं कि उन पापीमल्लाहोंने बुरा किया जो मुझको समुद्रसे निकाला अगर मैं भी मरजाती तो ये रंज काहेको उठाना पडता न जानिये अभी इस किसमतमें क्या क्या रंज और गम उठाना लिखाहै. आजकई दिनके बाद आपकी शकलनजर आईहै अब ईश्वरसे ये दुआ मांगतीहूं कि हे ईश्वर! यातो मेरेमालिकसे मुझे मिलादे बरनेमुझकोभी उठाले ये बात पद्मावतीकी सुनकर चित्रकेतू कहने लगा कि, हेसुन्दरी! आप ऐसी अधीर क्यों होती हो जिस ईश्वरने दुःखका समय दिखायाहै वही फिर सुखको दिखावेगा आपके रंजको सुनकर मेरा कलेजाफटताहै परंतु क्या करें ईश्वरसे किसीका जोर नहीं चलता अब मैं आपसे एक अर्जकरताहूं मगर कहनेमें डरताहूं क्योंकि पराया मन पसेरी बराबर होताहै इससे आप मुझको अपना ताबेदार समझें तो आपको वही आराम फिर मौजूदहै और मैं भी अपनी जानमालसे ताबेदारहूं आगे आपअपने दिलके मुखत्यारहो यह बचन चित्रकेतुका सुनकरपदमावती दिलमें तो खुश हुई परंतु ऊपरसे चुप होगई निदान बहुतसी बातें हुईं और मुहब्बतने यहांतक जोर किया कि दिलोजानसे चित्रकेतुके साथ जाना कबूल किया और अपने पतिके रंजो गमसे हाथ धो बैठी निदान चित्रकेतुने पदमावतीको साथ लेजाकर शहरके पास अपने बागमें महल बनवाकर रखदी और हमेशा उसके साथ ऐश उडाने लगा. तोता बोला कि हे मैना! अब मैं पद्मावतीके किस्सेको यहीं खतम करके उस राजकुमारका हाल फिर बयान करताहूं. जब वह

राजकुमार किनारेपर लगा और भूख प्यासका मारा जंगलोंमें भटकता हुआ कई दिनके बाद एक बस्तीमें पहुंचा वहांके लोग इसको देखकर दंग होगये हरएक पूछने लगा कि तुम कौनहो और कहांसे आये हो सच कहो तब राजकुमारने कहाः—

शैर

न पूछो कोई हाल मैं हूं बिकल ॥
मैं चाहताहूं दम मेरा जावे निकल ॥
कहूं क्या मैं जो कुछ मुसीबत पडी ॥
लगी चश्मसे मेरे गमकी झडी ॥

ये कहकर राजकुमार ठंडी सांस भरनेलगा कि हे लोगो! मैं अपना क्या हाल कहूं और मैं कौन हूं! दिल ठिकाने नहीं बिछडोंसे मिलनेकी आस नहीं दिल बेकल होरहाहै खाना दाना हरामहै साथी छूटगये चौडेमें लूटगये यह कहकर बडी आह भरकर ये शैर पढने लगाः—

शैर

ठिकाना पूछतेहो क्या बे ठीकानो का ॥
नहि घरबार कुछ है कोई हम बेठिकानोंका ॥
फिरूंहूं जंगलोंमें मैं भटकतारंज और गममें ॥
पडे जिस पेडके नीचे वही घर बे ठिकानोंका ॥

हिचकी लगतीहै मगर पता नहीं लगता किस्मतने दोस्त छुडादिये सारे होश उडा दिये क्या करूं कहां जाऊं हाय! मुसीबत क्या किस्मतने ये हाल दिखाया ये बातें राजकुमारकी सुनकर सब लोग रोने लगे और सबने जान लिया कि ये कोई राजकुमार है इसपर कोई बडी मुसीबत पडीहै ये सोचकर सबने खातिर की और अपने मकानपर लेगये हाथ मुंह धुलाये खानेके वास्ते भोजन लाये तब राजकुमार रो रोकर कहने लगा कि,ईश्वर जाने मेरे बिछडोंका क्या हाल होगा दाना पानी मिला या नहीं इससे मैं भी न खाऊंगा भूखा प्यासाही मर

जाऊंगा तब मनुष्योंने कहा कि, हे मित्र! ये आपकी नादानीहै खानेसे जिंदगानीहै जीते रहोगेतो किसीनकिसी दिन अपने प्यारोंसेमिलोगे और जो अन्न न खाओगे तो भूखे प्यासे मरजाओगे कफनभी न पाओगे लाचार सबके समझानेसे राजकुमारने दो चार ग्रास पानीके सहारेसे गलेमें उतारें पानी पीतेही बदन सनसना गया गश आगया जब जरा दिल ठहरा तो राजकुमारने अपना सब हाल उनसे कहा वे लोग सुनकर रोनेलगे और कहने लगे कि हे मित्र! अब अधीर मतहो हम आपके दुःख दूर होनेका उपाय करतेहैं हमारे शहरमें एक बडा भारी जोतिषी रहताहै वह भूत भविष्यत् वर्तमान तीनों कहताहै चलो आपको उसके पास लेचलें वह आपका सारा हाल बतादेगा ये बात उनकी सुनकर राजकुमार उनके साथ होलिया और ज्योतिषीके पास जा हाथ जोडकर सारा हाल पूछा तब ज्योतिषीने अपनी विद्या केबलसे राजकुमारसे कहाकि, तुम्हारा प्रश्न जीवका है सो उसका फल यह है कि जिसकी खातिर तुम रंज उठाते हो वह बहुत राजी खुशीहै और दक्षिणकी ओर एक चम्पावती नगरीहै तिसमेंहै परन्तु इसवक्तके प्रश्नसे ये बात मालूम होतीहै कि उसके मिलनेमें तुम्हारी जानका नुकसानहै येबात हम पहिलेभी देख चुकेहैं क्योंकि एकमनुष्य पहिलेभी आयाथा सो उसकाभी यही हालथा उसको मैंने बहुत मनाकिया कि तू इस ख्यालको छोडकर अपने वतनको जा क्योंकि स्त्री किसीकी सगी नहीं होती परन्तु उसने एक भी न मानी लाचार होकर मैं चुप होगया और उसने उस स्त्रीके पीछे अपनी जान देदी ये बात सुन राजकुमारने कहा कि उसने कैसे जान गमाई उसका सारा हाल आप मुझसे कृपा करके कहो ।

कहानी एक साहूकारकी

ज्योतिषी बोला हे राजपुत्र ! एक चन्द्रावती नगरीके रहनेवाला भद्रसेन नाम साहूकार था और उसकी स्त्रीका नाम रम्भा था सो वह

स्त्री रूप यौवनमें अपनी बराबर किसीको नहीं समझतीथी और बडी पतिव्रताथी एक दिन वह साहूकार दो चार आदमी और अपनी स्त्री रम्भाको संग ले:गंगास्नान करने गया था सो जब कई मंजिल होचुके तब एक दिन जंगलमें डेरा किया और वहां एक साधूभी रूप यौवनमें कामदेवकेसमान था और बडा हृष्टपुष्ट था सो रंभा उससाधुको देखकर आशक होगई और खोटी बुद्धि बिचार कर कुछ थोडासा सामान लेकर साधुके पास गई और हाथ जोडकर कहने लगी कि आपके वास्ते कुछ महाप्रसाद लाईहूं सो आप भोजन कीजिये ये बात रम्भाकी सुनकर और उसके रूप यौवनको देख साधुका भी मन ललचाया तब साधुने रम्भासे हँसकर कहा कि बच्चे ऐसे भोजन खानेसे जीभका स्वाद बिगडेगा हमको तो वह पदार्थ खाना चाहिये जो नित्य प्राप्तहो एक दिनके खानेसे क्या होताहै ये बात साधुकी सुनकर रम्भा कहने लगी हे महाराज! जो आप मुझे अपनी दासी करलो तौ मैं नित्य इससे अच्छे पदार्थ बनाकर खिलाया करूं साधु बोला कि भला तुम द्रव्यवान पुरुषको छोडकर हमारी दासी क्यों बनोगी तब रम्भा बोली कि महाराज मैं धर्म्मसे कहतीहूं कि आप मुझे अंगीकार कीजिये तब साधु बोला कि तुम्हारे साथ तो तुम्हारा पतिहैउसके पाससे तुम कैसे आओगी तब रम्भा बोली कि जिस वक्त ये आदमी सब सोजायँगे उसवक्तमें आपके पास आऊंगी ये कहकर रम्भा अपने डेरेमें चलीगई और अपने पतिकी सेवामें दाखिल हुई जब आधी रातका वक्त हुआ और सब आदमी सोगये तब रम्भा उठकर सब जरुजेवर लेके बाबाजीके पास दाखिल हुई तब साधु बोला कि, तुम आतोगई परन्तु सबेरा होतेही तुम्हारा पति जागेगा और तुमको हमारे पास देखेगा तो न जाने हमारा तुम्हारा क्या हाल करेगा इससे हमारी राजी यह है कि यहांसे चलकर अंतही वसें रातका वक्तहै कोई देखने वाला भी नहीं है.ये बात सुन रम्भा बोली कि, मैं तो तन मन धन सब

आपको देचुकी जैसा मुनासिब समझो वैसा करो तब वह साधु अपनी मढैयाको छोडकर रम्भाको ले एक जंगलको चलदिया और एक पर्व्वतके ऊपर जाके रहा और रम्भाके साथ भोगविलास करने लगा तोता बोला कि, हे मैना! कहो कैसे स्त्रीकी प्रतीत कीजावे कि, कहां तो रम्भा पतिव्रता थी और कहां उस पतिको जंगलमें अकेला छोड कर साधुके संग उडगई इस वास्ते मेरा तो स्त्रीके नामसे कलेजा फटताहै अब मैं रम्भाकाहाल बंदकर साहूकारकाहाल कहताहूं किजब सबेरा हुआ और साहूकार जागा तब रम्भाको डेरामें न देखकर उसने घबडाकर आदमियोंसे पूछा तो वो कहने लगे कि हमने तो नहीं देखी तब साहूकार बोला कि क्या गजब हुआ कोई सेर उठा लेगया या कोई जिन्द उठालेगया किधर जाऊँ किधर देखूँ यों कह-कर चारों तरफ घूमने लगा और ये शैर पढने लगा ॥

शैर

लगीहै आग दिल मेरे गमें फुरकतसे जलताहूं ॥
खबर देताहै बेताबी कि जो आंसू निकलताहै ॥
खुदा ए जल्द लेकर खबर राईसियों दौरा ॥
तेरे बीमारका अब कोई दममें दम निकलताहै ॥

फिर संगके आदमियोंको बिदाकर भंगोए कपडे पहन रम्भाकी फिकरमें जंगल पहाडोंकी खाक छानने लगा मगर कहीं पता नलगा तब दैवयोगसे वह साहूकार मेरे पास आया और मुझसे सारा हाल कहा तब मैंने उसके प्रश्नोंका फल देख उसे समझाया कि वह स्त्री फलां पर्वतके ऊपरहै परन्तु उसके पास जानेमें तेरी जानका खौफहै सो हे राजकुमार! उसने मेरा कहना न माना और पता लगाता हुआ कम्ब-ख्तीका मारा वह बिचारा उसी पहाडपर पहुँचा और वहां अपनी प्यारी रम्भाको भंगोए कपडे पहने देख बहुत खुश हुआ और मनमें सोचने लगा कि देखो दिलको दिल पहचानताहै जबसे मैंने इसके

वियोगमें गेरुए कपडे पहनेहैं तभींसे इसने भी मेरे वियोगमें सब शृंगार तज जोगनका रूप धारण करलिया और मेरे रंजके मारे इसके सिरके बाल केसे बिखर रहेहैं हाय! ईश्वर ऐसी मेरीप्यारीको ऐसा दुःख देना लाजिम नहीं था ऐसे मनमें विचार रम्भाके बिरहमें व्याकुल होकर ये गजल पढने लगाः-

गजल

बाइसे वहशत हुई बेरातनाई आपकी ॥
तितके चुनवाने लगी हमसे जुदाई आपकी ॥
आपकी जाने बला क्योंकर कटी फुरकतकी रात ॥
दिल तडफकर रहगया जब याद आई आपकी ॥
करवटे शब भर लिया करताहूं नींद आती नहीं ॥
रातभर बेताब रखतीहै जुदाई आपकी ॥

तोता बोलाकि, हे मैना! अपने पतिको आया देख रम्भा घबडाकर साधूसे कहने लगी कि, बडा गजब हुआ मेरा पती यहांभी आगया ये बात रंभाकी सुन वो साधू हाथमें डंडा लेकर साहूकारके ऊपर दौडा और दोनोंकी कुस्ती होने लगी एक दूसरेको मारने लगे और अपनी अपना घात चलाने लगे तब रंभाने देखा कि, साहूकारने साधूकोदबा लिया तो उसीदम उसने एक हींसका सोटा लेकर अपने पतिके सि-रम ऐसा मारा कि उसका काम तमाम हुआ दैवयोगसे कुछ जान बाकी रहगई तब साधूने उस ल्हासको नदीमें फेंकदी जब वह साहू-कारकी ल्हास थोडी दूर बहकर गई तो जलकी तरी पहुँचनेसे साहू-कारको होश आया तब वो बिचारा अपनी स्त्रीकी बदीसे अपना मन मारकुछ दिनाके बाद फिर मेरे पास आया तब उसने कहा ये महा-राज! मैंने आपका कहना नहीं माना उसका फल पाया. हे राजपुत्र! वैसाही फल आपके प्रश्नका है इससे मेरा कहना मानकर उस स्त्रीकी मुहब्बतको छोडकर अपनेघरको जाओ देखो स्त्रीजातका कुछभरोसा

नहीं ये स्त्री तब तक अपनी समझी जाती है जब तक अपने पासहै और जिसवक्त अपने पाससे अलग हुई फिर इसका भरोसा नहीं रहता इस बातको सुन राजकुमार कहने लगा कि,महाराज वह मेरी स्त्री बडी पतिव्रताहै और मेरे उसके एक प्राण दो देह हैं उसके विना मुझे एक घडी कल नहीं पडती और मेरे बिना उसको चैन नहीं होगी वह प्रतिज्ञाकी बडी पूरीहै ये बात राजकुमारकी सुन जोतिषी बोला कि:हे राजकुमार! स्त्रियोंकी बातपर भरोसा करना तुम्हारी नादानी है देखो एक प्रभावतीकी कथा तुमको सुनातेहैं:—

प्रभावतीकी कथा.

जोतिषी बोलाकि,एक नन्दन नाम नगर महारमणीक और मनोहरथा उसमें चन्द्रध्वजनाम राजा राजकरताथाउसराजाके एक बेटा वज्रमुकुट तरुण अवस्था रूप यौवनमें परिपूर्ण था उसी नगरमें एक धर्मदास सेठ रहताथा उसकेबेटेकाभद्रसेननामथाउसकीस्त्रीका नाम प्रभावतीथा उसके रूपयौवनके सामने अपसरा कुछ भी चीज न थी सो प्रभावती अपने पतीकी आज्ञा प्रतिपालन करनेवाली थी और सदा अपने पतिकी सेवामें रहती और उसका पतिभी उस पर ऐसा आशक होरहा था कि बिना उसके देखे चैन नहीं पडता इसी तरह उन दोनोंमें ऐसी मुहब्बत बढी कि, बिना एकको देखे दूसरेको कल नहीं पडतीथी निदान एक दिन प्रभावती सोलह शृंगार कर नखसिखसे आभूषण पहन संध्या समय अपने महलपर खडीथी और उधरसे राजकुमार वज्रमुकुटभी शिकार खेलनेसे आताथा सो बज्रमुकुटकी निगाह ऊपरको गई और प्रभावतीसे चार नजरें हुईं तो दोनोंके दिलमें मुहब्बत बढी और प्रभावतीके दिलमें राजकुमारकी तसबीर समागई और बज्रमुकुटके हृदयमें प्रभावतीकी दोनो इश्कके नशेमें चूरहुए खानापीना छोड़ आरामसे मुखमोड मिलनेका उपाय बिचारनेलगे इसीतरहदोनोंकोसोचबिचारकरतेर

कई दिन गुजर गये तब बज्रमुकुटने एक दूतीको बुलाकरके कहा कि जो तुम मुझको प्रभावतीसे मिलादो तो तुम मांगो सो दूं ये बात सुन दूती प्रभावतीके पास गई और उस्को उदास देखकर ये बोलीः-

कवित्त

कहा भयो आली तोय बैठीहो सुस्त होय कैसे रंग रूप सब फीको लखातहै॥ नैन अरुणाई तें गमाई कहां आली अति ह्वै रही मलीन तातें तन सब कुमलात है॥ कहो सखी मनमें कहा पीर है तिहारे आली मोसों ना दुराय कहो सांची ज़ो बात है॥ करूंगी उपाय बात मोसूं ना दुराय हेरी मैं तो हूं चेरी सौं-गंद अब खातहै॥ १॥ कहा कहों मनकी सजनी जो बिथा तन सब छायरही। लखि राजकुमर बिहाल भई दिन रैन न चैन गमाय रहीं॥ जैसे वह नीरबिना मछली अब सोई दशा मम आयभई। नहीं जोवत प्राण बिना उनके जिनके हित देह उमाय रही॥

ये बचन प्रभावती का सुन दूती बोली हे प्रभावती! तू किसी बात-की चिन्ता मतकर मैं तोसे बज्रमुकुटको मिलाय तेरी मनकामना पूरी करा देऊंगी परंतु तू एक काम कर कि सबेरेही मुर्छी खाय गिरपडियो सो तोकूं कोऊ कितनेहू कोई जगावे परंतु मत बोलियो तब मैं आयकर तेरी मनसा पूरी करनेका उपाय करूंगी ये बात दूतीकी सुन प्रभावती बहुत खुस भई और कहने लगी कि, हे सखी! जो तू मेरी मनसा पूरी करेगी तो मैं तेरी जन्मभर दासी रहूंगी ये बात पदमावतीकी सुनकर दूती अपने घरको गई और इधर प्रातः होतेही प्रभावती दूतीके कहे मुआफिक गश खाकर जमीनमें गिरपडी इसको बेहोश देखकर घरके सब लोग दौडे आये और उसका गैर हाल देखकर बैद्य हकीमोंको बु-लाकर दवा कराई उन्होंने दवादी मगर कुछ फायदा न हुआ भला सोचनेकी बातहैः-

शैर

जो इश्कके बीमारहै उनकी दवा क्या कीजिये।

ज्योतिषी बोला कि,हे राजकुमार! जब बैद्य हकीमोंसे कुछ फायदा न पहुँचा तब तो साहूकार बहुत घबराया और उसने सारे बजारमें ढिंढोरा पिटवा दिया कि,जो कोई हमारी बहूको अच्छा करे वो मुहमांगा इनाम पावे ये सुन सांझके वक्त वोही दूती आई और प्रभावतीका हाल देखकर साहूकारसेकहने लगी कि मैं इसको आराम करसक्तीहूं और ये आजरातके जिन्दके फेरेमें आगईहै परंतु इसकोआठदिनके वास्ते मेरे घर भेजदो साहूकारने उसीवक्त प्रभावतीको उसके मकानपर भेजदी फिर दूतीने साराहाल राजकुमारसे कहा तबरातको राजकुमार आया और प्रभावतीके साथ रातभर आनंद मनाया इसी तरह आठ रोजतक दोनोंने अपने दिलकी तपत बुझाई जब नवां दिन आया तब दूती प्रभावतीकोसाथलेकरसाहूकारके मकानपरआई साहूकारने प्रभावतीको खुश देखकर दूतीको बहुत इनाम दिया ज्योतिषी कहने लगा कि,हे राजकुमार! उस प्रभावतीका कुकर्मकिसीने न जाना इससे मैं तुझे बार बार समझाताहूं कि,तू अपनी स्त्रीका ख्याल दूर कर नहीं तो मुसीबत उठावेगा राजकुमारके दिलमें एक न आई आखीरको उसीशहरको चला और कई दिनके बाद चन्द्रकेतूके नगरमें पहुँचा और वहांके लोगोंसे पूछनेलगा तब एकपनिहारीने कहा कि,हम नाम तो नहीं जानती परंतु सुना है कि राजकुमार जंगलमेंसे एक स्त्री लायाहै सो चम्पाबागमें रहतीहै तब राजकुमार उसीबागमें गया और उसके महलके नीचे आसन लगाया एक दिन शामके वक्त पद्मावती हवा खानेको महलपर खडी हुई तो राजकुमार उसे देखकर यह शैर पढनेलगाः—

शैर

फिरूं में तडफता सुबह रातको ॥
न आती है निद्रा मुझे रातको ॥
फिरूं जंगलमें भटकता हुआ ॥
तेरे नामकी माला जपता हुआ ॥
लगाहै पता अब तेरा मेरी जान ॥
कि देखा तुझे आई तन बीच जान ॥

शैर सुनतेही पदमावतीने फिरकर देखा कि ये वही मेरा पतिहै यह जान मुहं फेर कर नीचे उतर गई और सोचने लगी कि, ये चित्रकेतू मुझपर ऐसा आशकहोरहाहै कि घडीभर भी दिलसेन्यारी नहींकरता और सब तरहका आराम देताहै इससे ऐसे यारको छोडकरइसकेसाथ जाकर क्याकरूंगी ये विचार अपनेपतिकोमहलमेंबुलाकरकहनेलगी कि या तो इसी वक्त यहांसे चला जा बरन राजासे कहकर तेरेटूकटूक उडवा दूंगी ये बचन पदमावतीका सुनतेही राजकुमारथर्रागया और सोचने लगा कि अब हमको निश्चय हुआ कि स्त्रीकी बराबर बेपीर जात कोई नहीं मैंने इसके पीछे कैसे कैसे रंज गम उठाये मगर ये तो चन्दरोजमें ही मुहब्बत तोड अलग होगई और नेकीके बदले जान लेनेकोतैयारहै इससेऐसी स्त्रियोंपरधिक्कारहै और मुझसरीखेपुरुषोंको भी धिक्कारहै जो जरासे गोरे चामको देखकर राजपाटछोड देशोंमें खराब होता फिरा ये सोच वह राजकुमार अपने वतनको चलागया तोता बोला ऐ मैना ! अब भी चुप हो जा नहीं तो स्त्रियोंकी बडी बडी बेमुरव्वतियां कहूंगा अगर सभीको लिखूं तो बडा भारी ग्रन्थ बनजावे तब मैना बोली कि, ऐ तोते ! जबाब देनेमें तुझसे मैं क्या कम हूं ? हजारों दास्तान मुझेभी यादहैं इस तरह तोता और मैनामें झगडा होरहा था इतनेमें एक हंस चला आया और उसी पेडके ऊपर

आनकर बैठ गया और इनका झगडा देखकर बोला कि तुम क्यो झगडते हो तब तोता और मैना दोनोंने हंससे कहा कि आपही हमारा इन्साफ करदो हमको आपका कहना मंजूर है तब हंस बोला कि जो हम कहें वही तुम मानो तो हम तुम्हारा झगडा मिटादें तब उन दोनोंने बचन दियां कि जो आप कहोगे सो हम करेंगे तब हंस बोला कि सवाल जबाबमें तुम दोनों बराबरहो तुमको मुनासिब है कि, तुम दोनों हमारे कहनेसे शादी करलो क्योंकि इस संसारमें सब स्त्रीपुरुष एकसे नहीं हैं ये बात हंसकी सुनकर तोता मैना दोनों खुश भये और अच्छा दिन देखकर शादी की अब थोडासा हाल इनकी शादीका लिखताहूं जिस वक्त उस जंगलके जानवरोंने सुना कि, फला दिनको तोता मैनाकी शादीहै तो मारे खुशीके सब इकट्ठे भये और कबूतर नगाडे बजाने लगे कोयल नफीरी का सुर भरने लगी गर्गैयोंने मजीरेका काम दिया पिंडकियोंने तबलापर थाप दी चकोरोंने रोशनीका सामान किया मोर नाचने लगे फिद्दी फुदकने लगी पटबीजने हर जगह बहार दिखाने लगे इस तरह ठौर ठौर पेड पेड पर बहार होने लगी जब शादीका दिन आया तो सब जानवरोंने तोता और मैनाकी शादी कराई बाद इसके मेवा पकवान फूल फल अनेक तरहके सामान दावतके वास्ते तैयार किये और समय पर सबकी खातिरदारी की और हर जगह रंगतका सामान नजर आया और तोता मैनाकी शादीकी बडी धूम मची इस तरह दोनों तोता और मैना रहसके सतसंग करनेसे अपनी अपनी मुरादको पहुंचे इसलिये मैं भी परमेश्वरसे प्रार्थना करता हूं कि, जैसे तोता मैनाकी मुराद पूरी हुई इसी तरह इस किस्साके पढनेवालोंकी मुराद पूरी हो ॥

इति तोता मैना समाप्त.